★ बंगाल का हत्याकाण्ड ★

लेखक—

श्री विष्णुदत्त 'कविरत्न'

प्रकाशकः—
भारतीय पुस्तक मन्दिर
लश्कर (ग्वालियर)

पहिली बार	मूल्य ३)	१९४६

मुद्रक—
पं० श्यामाचरण लवानिया
भारतीय प्रेस, दालबाजार,
लश्कर (ग्वालियर)

मेरे भी दो शब्द—

प्रस्तुत पुस्तक में आतङ्क प्रत्यक्षदर्शियों का निर्णय वर्तमान दंगों के संबंध में दिया गया है। कुछ ने अपना आंखों देखा दृश्य वर्णन किया है। शेष माननीय नेताओं के वक्तव्य भी पुस्तक में सम्मिलित किये गये हैं। मैंने पुस्तक में अपनी ओर से कल्पना का नमक-मिर्च लगाने की चेष्टा नहीं की है। समाचार पत्रों तथा सम्वाददाताओं के आधार पर इसकी रचना की गई है।

किस मानव को इस अमानवता के नग्न नाच से घृणा नहीं होगी ? निर्दोषी मानवों के रक्तपात और उनके साथ किये गये अत्याचारों, बलात्कारों, व्यभिचारों के दृश्य देख-देख कर अथवा सुन २ कर किस जाति के मानव का हृदय सखेद तथा दुःखित नहीं होगा ? मानव के प्रति मानव का पशुवत् व्यवहार कहां तक सहनीय और क्षमाप्रद है ? यह मानवता है ?

स्वार्थ ने मानव को कितना नीचे गिरा दिया है। मानव का स्वार्थ साधन कितना सुखप्रद है ! अपने सुख के आगे दूसरों की खुशी को दुख में बदलते हुए उसको लज्जा और शर्म नहीं आती।

छिः ! छिः !! छिः !!! कितना घिनोना कार्य मानवों ने अपने में दायित्व लिया है अब मानव मानव न रहकर दानव बन गया है। इस युग में मानव ने मानवता को तिलाञ्जलि देने की ठानी है। इससे यह सिद्ध हुआ कि मानव स्वयं चाहता है कि उसको परतन्त्र रखा जाये—स्वतन्त्रता उसका जन्म-सिद्ध अधिकार नहीं। जब मानव घृणास्पद कार्य करने से नहीं चूकता, तो यह मानना पड़ेगा कि उसके साथ कठिन और कठोर बर्ताव किया जाये, तब ही वह दानवता को छोड़ कर मानवता की ओर अग्रसर हो सकता है, अन्यथा नहीं।

दानवता का ज्वलन्त उदाहरण कलकत्ता, पूर्वी बंगाल, बम्बई नोआखाली आदि अनेक नगरों से प्रकट है। इस पुस्तक के लिखने में जिन पत्रों तथा मित्रों से सहायता मिली है उनका मैं हृदय से आभारी हूँ। विशेष धन्यवाद तो मैं श्रीमती वासन्ती देवी जी को दूंगा जिन्होंने इसकी कापी शुद्ध करने में मेरी सहायता की।

—विष्णुदत्त 'कविरत्न'

विषय-सूची

संख्या	विषय	पृष्ठ

लीग के डायेरेक्ट ऐक्शन का प्रोग्राम

दिल्ली,३० अक्टूबर, दिल्ली पुलिस को मुस्लिम लीग के डायरेक्ट एक्शन प्रोग्राम की जो नकल मिली है वह निम्न है। यह बात उल्लेखनीय है कि इस प्रोग्राम की प्रति स्वयं एक मुस्लिम लीगी ने पुलिस को दी है।

"मुस्लिम लीग के सदस्यों को इन हिदायतों पर अमल करना चाहिये"

१-भारत के समस्त मुसलमानों को पाकिस्तान के लिए अपना बलिदान करने के लिए तैयार रहना चाहिये।

२-पाकिस्तान बनाने के बाद सारे हिन्दुस्तान को फतह किया जायगा।

३-इस्लाम के इस पुण्य कार्य में इस्लामी हकूमतों को हाथ बटाना चाहिए।

४-एक मुसलमान के कत्ल होने पर पांच हिन्दुओं को कत्ल किया जायगा।

जब तक हिन्दुस्तान में पाकिस्तान नहीं बन जाता मुस्लिम लीग के सदस्यों को निम्न आज्ञाओं पर अमल करना चाहिये।

१-हिन्दुओं की तमाम दुकानों तथा कारखानों में आग लगा देनी चाहिये। और लूट लेना चाहिये।

२-लीग के समस्त सदस्यों को हथियारबन्द होना चाहिए ताकि इन हथियारों से वह अपनी रक्षा कर सकें तथा हिन्दुओं पर हमला कर सकें।

३-राष्ट्रवादी मुसलमान यदि लीग में शामिल न हुए तो उन्हें कत्ल कर दिया जायगा।

४–हिन्दुओं को कतल करके उनकी जनसंख्या घटाई जायगी।

५–हिन्दुओं के समस्त मन्दिरों को तबाह कर दिया जायगा और कांग्रेस के नेताओं को एक-एक करके महीने वारी हिसाब से कतल किया जायगा।

६–यह कत्ल खुफिया तरीके से होंगे।

७–कांग्रेस के अधिकार लीग गेस्टापों द्वारा बरबाद कर दिये जाएंगे। मुस्लिम लीगियों को चाहिये कि वह दिसम्बर तक कराची, देहली, बम्बई, मद्रास और कलकत्ता के शहरों का कारोबार शिथिल करदें।

८–पुलिस लीगियों को फौजों में काम करने की आज्ञा होनी चाहिये।

९–मुसलमानों को विस्तार पूर्वक अन्दर ही अन्दर तोड़ फोड़ का काम चालू रखना चाहिए और इन्हें भारत पर आखिरी हमले की तैयारी करनी चाहिए।

१०–रियासत हैदराबाद, और भोपाल तथा बड़े बड़े ज़मीदार और मालदार व्यापारी ऐसा करने वालों को आर्थिक सहायता दे रहे हैं।

११–खुफिया तौर पर हिन्दुस्तान के तमाम मुसलमानों में हथियार बांटे जांएगे ताकि भारत में पाकिस्तान कायम होसके।

१२–हर मुसलमान को कम से कम जेब में एक चाकू अवश्य रखना चाहिये।

१३–हिन्दुओं की संस्कृति का खातमा कर देना चाहिये।

१५–तमाम मुस्लिम लीगियों को हिन्दुओं के साथ बेरहमी से पेश आना चाहिए।

यह सरकूलर १८ अगस्त १९४६ को वितरण किया जाय।

—(नये हिन्दुस्तान से)

लीग द्वारा कराए गए उपद्रव की निन्दा

लोकमत

"कलकत्ता सम्बन्धी सारी घटनाओं की जिम्मेदारी लीगी मन्त्रि-मण्डल पर है। आश्चर्य की बात है कि सभा के पश्चात लौटती हुई भीड़ ने तो अन्धाधुन्ध लूट-पाट और हत्या आरम्भ करदी, इतना होने पर भी बंगाल सरकार ने न तो धारा १४४ लागू की और न उस ग़दर को दबाने के लिये सेना ही बुलाई गई। दंगे की सारी जिम्मेवारी लीगियों पर है।"

—मौ० अबुल कलाम 'आजाद'

"भारत-मन्त्री को चाहिये कि कलकत्ता के दंगे तुरन्त बंद करा दिये जांय, और लीगी मन्त्रि-मण्डल ने लीग को 'सीधी कार्रवाही' दिवस पर जो सरकारी छुट्टी रखी थी उसके बारे में जांच की जाये। यह सब लीग का दोष है।"

—श्री के० चटर्जी,
मेहतर बंगाल संघ के अध्यक्ष
(लन्दन से)

"कलकत्ता के दंगे में अब तक २०,००० व्यक्ति मारे गये हैं। वायसराय स्वयं आकर कलकत्ता की हालत देखें। बंगाल गवर्नर स्थिति को सम्भालने में असमर्थ हैं। बंगाल के प्रधान मन्त्री (लीगी) इसके लिये जिम्मेदार हैं। लीग की यह हरकत ठीक नहीं।"

—अ० भा० हि० महासभा के
जनरल सेक्रेटरी
(तार द्वारा सूचित किया)

"कलकत्ता शहर की अव्यवस्था के कारण खाद्य-सामग्री नहीं रही है। इसी लिये लाखों व्यक्ति भूखों मर रहे हैं। (मुसलमानों के लिये महीने भर का प्रबन्ध रमज़ान के कारण पहिले से कर दिया गया था) यह सब लीग की कारस्तानी है।"

—श्री मृणालकान्ति बोस,
प्रेसीडेण्ड
अ० भा० ट्रेड यूनियन–

"बंगाल सर फैडरिक वरोज को वापिस बुलाया जाये, वर्तमान लीगी मिनिस्ट्री को तोड़ दिया जावे। मैं हाल में कई वार बंगाल गवर्नर से मिला हूँ। और कलकत्ता की स्थिति में सुधार करने की बात पर जोर दिया है। परन्तु मुझे इस कार्य में सफलता नहीं मिली। लीग ने अपने हक़ में यह अच्छा नहीं किया।"

—श्री शरत्‌चन्द्र बोस,
—केन्द्रीय असेम्बली की कांग्रेस पार्टी के नेता, अन्तः कालीन सरकार के सदस्य।

"कलकत्ता में जो भीषण दंगा हुआ वह निन्दनीय है। इससे भयंकर धन की जो हानि हुई है वह शोक जनक है, और देश की राजनैतिक प्रगति में बाधक है। लीग का यह कार्य घृणास्पद है।"

—दिल्ली प्रान्तीय फारवर्ड ब्लाक
की कार्य-कारिणी।

"जब सन् १९४३ में तत्कालीन भारत मन्त्री सर सेम्युअल होर ने यह कहा था कि मुसलमानों की भांति पारसी भी पृथक् निर्वाचन चाहते हैं तो बम्बई के हजारों पारसियों ने इसका खण्डन किया और कहा कि पारसियों ने कभी पृथक् निर्वाचन की मांग नहीं की और उनके हित कांग्रेस के हाथों में बिल्कुल

सुरक्षित हैं। मि० जिन्ना अपने झूठे वक्तव्य द्वारा सर सेम्यु-अलहोर की भांति ही शरारत करना चाहते हैं। इसमें सर सेम्युअलहोर को सफलता नहीं मिली। मि० जिन्ना को यह समझ लेना चाहिये कि लीग के द्वारा जो इस प्रकार के हत्या-काण्डों का श्रीगणेश करायेगा तो इसमें उसको असफलता और इससे भी अधिक बदनामी मिलेगी। उसे अपनी "सीधी कार्रवाई छोड़ कर वह ही बेढंगी चाल चलनी चाहिये।"

—श्री० आर० के० सधवा
सिंध असेम्बली के संयुक्त दल के
सेक्रेटरी और पारसी कांग्रेस
के प्रधान (कराची से)

"१६ अगस्त को जब सारे नगर में दंगा बुरी तरह फैल रहा था तो लीगी सरकार ने प्रबन्ध करने के लिये भी सम्पूर्ण सेना क्यों नहीं बुलाई। मुझे जब बुलाया गया कि जब सारा कलकत्ता नगर उपद्रव की आग से बुरी तरह भभक उठा था। क्या इसको लीग का हिन्दुओं पर अन्याय नहीं कहा जा सकता है ?"

– श्री० सिक्स स्मिथ,
कमाण्डर ब्रिगेडियर, कलकत्ता

"यह भीषण दंगा अभी स्वातन्त्र्य-प्रिय हिन्दुओं और मुसलमानों के लिये चेतावनी है। अब यह सिद्ध हो गया कि लीगी कार्रवाई ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध नहीं वरन् हिन्दुओं विरुद्ध है।"

—श्री पूर्णचन्द्र जोशी

लीग के 'डायरेक्ट एक्शन' (सीधी कार्रवाई) ने सोती हुई कांग्रेस और हिन्दुओं को जागृत कर दिया। अब जिन्ना साहिब

की चालों से बचकर काम किया जायगा। और किये हुये का बदला भी दिया जायगा।

—श्री० सरदार सम्पूर्णसिंह
नेता

"मैं एक मुसलमान हूँ। कलकत्ता की खून खराबी तथा उपद्रवों पर खेद प्रकट करता हूँ। लीग की इस हालत पर मैं घृणा प्रकट करता हूँ, मौजूदा उपद्रवों के बावजूद भारत स्वतन्त्र होगा। भारत को चाहिये कि चीन का उदाहरण माने। हमारे चीन में चार सम्प्रदाय के लोग रहते हैं—ईसाई-धर्म, इस्लाम, बुद्ध-धर्म और कानफ्यूसियूस धर्म हैं। परन्तु हम सब बिना लड़े ही निबाहते हैं। यद्यपि हममें राजनीतिक मतभेद है, परन्तु फिर भी हम हजारों वर्षों से साथ चले आ रहे हैं। फिर भारत में ऐसा क्यों नहीं हो सकता ?

—जनरल श्री पाईचँग,
चीन के राष्ट्रीय सुरक्षा मन्त्री

"मि० जिन्ना सिखों को पाकिस्तान के फन्दे में फंसाना चाहते हैं परन्तु लीग की पोलिसी कलकत्ता के दंगे से बिल्कुल खुल गई, जिसमें सिखों के साथ किस प्रकार का बुरा सलूक किया है। जिन्ना की ऐसी चेष्टा से हम नफरत करते हैं।"

—श्री० मा० तारासिंह

"ये उपद्रव जिन्नाः--ब्रिटिश योजना के परिणाम हैं। लीग की सीधी कार्रवाई अंग्रेजों के विरुद्ध नहीं बल्कि उन भारतीय देश प्रेमियों के विरुद्ध है जो कि देश की स्वतन्त्रता के लिये बढ़ रही है।

—श्रीमती आसफअली

"कलकत्ता में इस बात का प्रदर्शन हो चुका है कि प्रत्यक्ष संघर्ष क्या है ? और इसको किस प्रकार कार्यान्वित किया जाता है ? गत कुछ महीनों में भी इसके जंगली प्रदर्शन हो चुके हैं। यदि कुछ समय तक यही हाल रहा, तो कलकत्ता महलों का शहर न बनकर शवों का शहर बन जायगा।

संघ के जिम्मेवार मन्त्री तथा तमाम देश के अन्य लीगी जिम्मेवार नेता नग्न भाषा में हिंसा का प्रचार कर रहे हैं। एक कहता है कि प्रत्येक अलीग मुस्लिम द्रोही है। दूसरा कहता है कि प्रत्येक हिन्दू काफिर है। हिंसा से न मुस्लिम जनता को और न इस्लाम के कट्टर अनुयायियों को ही लाभ हो सकता है। जीवन में हिंसा का स्थान हो सकता है, परन्तु इस तरह से नहीं जैसे कि हमने कलकत्ता में देखा है। पाकिस्तान किसी भी रूप में इस प्रकार की हिंसा से प्राप्त नहीं हो सकता।"

—श्री म० के० गांधी

"मैं लीग की इस साजिश से नफरत करता हूँ। कलकत्ता को बरबाद करने में लीग का हाथ था। इसके अतिरिक्त लीग का एक सप्ताह पूर्व एक गुमनाम पत्र मुझे मिला। पत्र द्वारा हमें चेतावनी दी गई थी कि वे तथा अन्य नेता लीग में शामिल नहीं होंगे तो उनका जीवन खतरे में पड़ जायगा। मैं यहां यह उल्लेख कर देना अनिवार्य समझता हूँ किसी भी कार्रवाई दिवस के अवसर पर भाषण देते हुए काजी ईशा ने कहा था जो मुसलमान लीग के बाहर हैं उन्हें दश दिन के अन्दर लीगमें शामिल हो जाना चाहिये। जो लोग लीग में शामिल नहीं होंगे तो वे देशद्रोही और गद्दार कहे जायंगे तथा उन्हें दण्ड दिया जायगा। उनके भाषण के ठीक दस दिन बाद जमायतुलउलेमा-

हिन्द के दफ्तर पर हमला किया गया दफ्तर में आग लगादी गई। आक्रमणकारी कश के ६०० रुपये लेकर चम्पत हो गए। यह पत्र डिप्टीकमिश्नर के पास भेज दिया गया था।"

—मौ० अहमद सईद,
उपाध्यक्ष—
अखिल भारतीय जमायतुल उलमायेहिन्द

"मैं बंगाल की राजनीति की गुटबन्दीके प्रति विरोध रखता था इस कारण बंगाल धारा सभा से त्याग पत्र देता हूं। मुझे इस दंगे में लीग का हाथ देखकर भी थोड़ी घृणा हैं।"

—मौलाना अकरम खां,
अध्यक्ष बंगाल प्रान्तीय मुस्लिम लीग

"लीग द्वारा आरम्भ की हुई कलकत्ता की दुर्घटना हमारे लिये एक भयंकर शिक्षा है। इस प्रकार के दंगों को आरम्भ में ही दबा देने की आवश्यकता है। अन्याय तथा अत्याचारपूर्ण हिंसा और लूट को सहन नहीं किया जा सकता। एक अन्याय-पूर्ण लीग जैसी संस्था का पुलिस एवं जनता संगठित रूप से प्रतिरोध करे। आज तक भारतीय इतिहास में इतनी निर्भय और बिभत्स घटना का उल्लेख नहीं मिलता है।

—पूज्य पं० जवाहरलाल नेहरू
वायसप्रेजीडेण्ट अन्तःकालीन सरकार

"हम सर्वसमिति से यह प्रस्ताव स्वीकार करते हैं कि लीगी मन्त्री मण्डल समाप्त हो। और खुली अदालत में प्रधान मंत्री (मि० सुहरावर्दी) पर मुकदमा चलाया जाय। सभा में बंगाल मुस्लिम लीग, सुहरावर्दी और पाकिस्तान विरोधी नारे लगाए गए और पीड़ित तथा मारे गये ४०,००० व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति प्रकट की गई। हमने २३ अगस्त को ग्वालियर राज्य

हिन्दू सभा और हिन्दू संगठन प्रचारक आश्रम की ओर से कलकत्ता दिवस मनाया।"

डा० परचुरे श्री० भगवत प्रसाद तथा श्री० किशोर
(लश्कर, मुरार और ग्वालियर)

"मुझे अत्याचारी तथा बलवाइयों से घृणा है, लीग को छोड़-कर चाहे और भी कोई विदेशी जाति क्यों न हो! कुछ भी हो लीग ने अपने हक में यह अच्छा नहीं किया। हिन्दू होने के नाते मुझे पीड़ित तथा मृतक भाइयों के साथ पूर्ण तथा हार्दिक सहानुभूति है।

—मि० विजयलक्ष्मी पंडित

कलकत्ता के दंगे में लीग का हाथ अवश्य था-वरन् पुलिस तथा सेना दंगे को तुरन्त ही दबा सकती थी। मैं इस प्रकार के हत्याकाण्ड को नफरत की निगाह से देखता हूं।"

--सर जे० पी० श्रीवास्तव

"क्या किया जाय बिचारे हिन्दुओं में दम नहीं रह गया है। प्रत्येक शासनाधीश ने इनके ऊपर कुठाराघात किया, इनको कुचला तथा इनका रक्त शोषण किया। समय आने पर लीगियों को मुंह तोड़ जवाब दे दिया जायगा। ४०,००० मानवों का रक्त-पात करके वे खुश नहीं! वास्तव में हिन्दुओं पर असहाय जुल्म और अत्याचार किया गया। मैं ऐसी लीगसे घृणा करता हूँ

—श्री० घनश्यामदास बिड़ला

मैंने बम्बई प्रान्तीय मुस्लिम लीग के प्रधान मन्त्री को त्याग-पत्र दिया है कि मैं वह लीग कौंसिल बम्बई की कार्रवाई से सहमत नहीं। और "प्रत्यक्ष कार्रवाई" दिवस बंगाल में इस बुरी तरह शुरू की गई कि जनता तो इसकी शिकार बन गई कि और श्री जिन्ना साहब पता नहीं क्यों मुकम्मिल आराम कर रहे

हैं। आपने जो वक्तव्य दिये हैं वे सब भाषण समस्या के हल के लिए पाकिस्तान के पक्ष में थे। लेकिन दुर्भाग्यवश इस समय श्री जिन्ना का दिमाग तीसरी पार्टी को हटाने और अकलमंदी से काम करने की ओर नहीं चलता। मैं लीग की इन बातों के साथ शामिल नहीं! इसलिए इससे त्याग पत्र देता हूँ।"

—सरकरीम भाई इब्राहीम
सदस्य मुस्लिम लीग तथा बम्बई कौंसिल।

"हम कलकत्त के दंगे की निन्दा करते हैं। लीग से हम कुछ कहना ही नहीं चाहते। कांग्रेस तथा ब्रिटिश सरकार से दंगा रोकने की जोर दार अपील करते हैं। हिन्दुओं को अब केवल हिन्दू ही नहीं रहना चाहिये।"

—मन्त्र
आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय मजलिस
तथा केम्ब्रिज विश्वविद्यालय मजलिस
(लन्दन)

"कलकत्ता में जो काण्ड हुआ उसको देखते हुये मुझे यह कहने में कोई आपत्ति नहीं लगती कि वायसराय मुस्लिम लीग को अन्तःकालीन सरकार में घुसने के लिये इस कारण से उत्सुक है ताकि लीग और कांग्रेस के बीच नोंक-झोंक कायम कराई जा सके और उन्हें संसार के सामने यह कहने का मौका मिल सके कि भारतीय अपना शासन सूत्र अपने हाथ में नहीं सम्भाल सकते। मेरे निजी विचार हैं, अन्तःकालीन सरकार में मुस्लिम लीग के आजाने से उसका काम अबाध रूप से न चल सकेगा। भारत की आजादी के लिये संघर्ष करना होगा। अर्थात् अगले संघर्ष के लिये तैयारियां करनी चाहिये।

—श्री जयप्रकाश नारायण,
कांग्रेस कार्य समिति के सदस्य

"मैं लीग के खूंखार जुल्म से नफरत करता हूँ। इस दंगे में अकेले मुस्लिम लीग का काम नहीं। बल्कि मैं तो यह कहूँगा कि अंग्रेजों में ऊपर-ऊपर से थोड़ा परिवर्तन हुआ है। और अगर उसमें कुछ परिवर्तन हुआ भी है तो सिर्फ इतना कि वह मुस्लिम लीगी होगया है। लीगियों की तरह वह भी यह महसूस करता है कि उसकी ताक़त कम हो रही है।"

—श्री अब्दुल गफ्फार खां सीमांत-
गान्धी

"मैंने पहले भी यह ही समझ रखा था कि एक दिन मुस्लिम लीग वह ही काम करेगी जो उससे उम्मेद है। कलकत्ते की दंगे बाजी या हुल्लड़ भारत की स्वतन्त्रता में बाधक हैं। अब कलकत्ता के सम्बन्ध में जांच होने पर क्या होगा ! गुण्डों के घरों से लूट का माल थोड़े ही आ सकता है ? मैं तो चाहता हूँ कि हिन्दू-मुस्लिम मिल कर ही रहें तो अच्छा है।"

—सरदार वल्लभ भाई पटेल
अन्तः कालीन सरकार के सदस्य

"हाल की हिन्दू-मुस्लिम लड़ाई ने भारतियों के विचारों में परिवर्तन कर दिया। अब मिल कर काम चलना कठिन सा प्रतीत होता है। दूसरी बात यह है कि स्वतन्त्र भारत के प्रतिनिधि निष्पक्ष होते ! किन्तु अब उन्होंने ब्रिटेन की हां में हां मिलायी।"

—रूसी विदेश मन्त्री मौ० मोलोटोव

"मैं हृदय से चाहता हूँ कि हिन्दू-मुस्लिम भारत में मिल कर रहें। परन्तु कलकत्ते, नोआखाली और त्रिपुरा के इस दंगे के सम्बन्ध में मेरे विचार कुछ ठेस खा गये हैं यदि लीग ने

यह हरकत की है तो उसने अपने लिये अच्छा नहीं किया है। उत्पात-पीड़ित व्यक्ति संगठित प्रतिरोध करें।"

—आचार्य श्री कृपलानी

"नोआखाली में २५० वर्ग के इलाके में उपद्रवी भीड़ों द्वारा घेरे हुये निवासियों का कत्ले-आम किया जा रहा है, उनके घर फूंके जा रहे हैं, उनकी ग्रेज्यूएट लड़कियां, नवयुवतियां और स्त्रियों को जबर्दस्ती उड़ाया जा रहा है। हजारों व्यक्तियों को जबरन धर्म-परिवर्त्तन के लिये विवश किया जा रहा है। कत्ले आम के शिकार हुये लोगों की संख्या सैकड़ों में नहीं, हजारों में पहुंच गई है। इन गुण्डे लीगियों ने भारत वर्ष के हिन्दुओं का विनाश करने की ठानी है। हिन्दुओं की आंखे अब भी बन्द हैं। जबकि १०,००० को जबर्दस्ती मुसलमान बना लिया है। इस भयानक कत्ले आम से कलकत्ता-हत्याकाण्ड भी फीका पड़ गया।"

—श्री आशुतोष लाहिड़ी मन्त्री
अ० भा० हिन्दू महासभा

"हजारों गुण्डों ने ग्रामीणों पर आक्रमण किया, उन्हें अपने अपने जानवरों को मार डालने के लिये वाध्य किया, तथा उन्हें निषिद्ध भोजन खाने के लिये भी बाध्य किया गया। उनके मकानों में चारों और आग लगा दी गई। बहुत सी लड़कियों का अपहरण कर उनसे बलात्कार किये गये। हिन्दुओं की जान-माल की रक्षा करने के लिए अधिकारियों ने कोई कार्रवाई नहीं की पुलिस वहां की निकम्मी है।"

—श्री कामिनीकुमारदत्त,
कांग्रेस पार्टी के नेता
(बंगाल लेजिस्लेटिव में)

"हिन्दू लड़कियों को पकड़ कर मुसलमानों के साथ उनकी जबरन शादी की गई। हिन्दुओं के मन्दिरों तथा उनकी मूर्तियों को भ्रष्ट किया गया। यहां के एक लीगी नेता गुलाम सरवर ने मुसलमानों को भड़काया कि नोआखाली से हिन्दुओं को मार भगाओ। इनका माल लूट लो! इनकी स्त्रियों, लड़कियों के साथ दुर्व्यवहार करके उनके साथ विवाह करलो। इनके धर्म-नष्ट कर दो। इनको अपनी बस्ती में मत रहने दो। हिन्दुओं को निकाल कर अपने नगर को 'पाकिस्तान' बनाओ।"

—मन्त्री त्रिपुरा जि० हिन्दू महासभा

'भारतवर्ष में लीग ने दंगा कराया'

पत्रों के अभिमत

२४ अगस्त—

स्टेट्समैन—कलकत्ते की दुर्घटनाओं को देखते हुये धारा ९३ लागू करने पर अवश्य विचार होना चाहिये। नोआखाली का हत्याकाण्ड कलकत्ता से भी बढ़ गया। वर्तमान मन्त्रिमण्डल अयोग्य आदमियों का समूह है या उससे भी बुरा है।

अमृत बज़ार पत्रिका—यद्यपि हालत अब कुछ शान्त है पर अभी भी ५-७ केस प्रतिदिन हो रहे हैं। गवर्नर को घोषित कर देना चाहिये कि पुलिस और सेना पर मन्त्रिमण्डल का अधिकार नहीं है। लीग ने अच्छा नहीं किया क्योंकि "जल में रह कर मगरमच्छ से बैर" वाली कहावत का आश्रय लिया है। बंगाल के गवर्नर और लीगी मन्त्री मण्डल को तत्काल हटा देना चाहिये

लीगी-डान—ने सारा दोष हिन्दुओं पर मढ़ते हुये लिखा है कि मुसलमान हिन्दुओं से चौगने मारे गये हैं।

हिन्दुस्तान टाइम्स—लीग ने जो कुछ किया है वह तो भूला नहीं जा सकता, परन्तु यह कह देना अनुचित नहीं कि सुहरावर्दी जनता का सब से बड़ा दुश्मन है।

असोशियेटेड प्रेस आव पेरिस—बंगाल, कलकत्ता, नोआखाली, बम्बई आदि के दंगे में हुए हताहतों की संख्या से पेरिस में गहरा क्षोभ प्रकट किया जा रहा है। लीग की हरकत अच्छी नहीं। इस सम्बन्ध में वहां के पत्रों ने स्वतन्त्रता पूर्वक लिखना शुरू कर दिया है। इस प्रकार के झगड़ों से भारत में कभी भी स्वतन्त्रता नहीं स्थापित हो सकती है। यदि मेल हो सके तो अच्छा ही है।

'असोशियेटेड प्रेस आव इण्डया'—के प्रतिनिधि से पौलेण्ड के राजनीतिज्ञ ने बतलाया है कि पौलेण्ड को भारत और भारतियों के सम्बन्ध में काफी जानकारी प्राप्त है। और आप ही भारतीय कांग्रेस के साथ उसे सहानुभूति है।

'असोशियेटेड प्रेस आव अमेरिका'—भारत (बंगाल) सरकार ने सेन्सर करने के लिए कलकत्ते आदि के दंगे सम्बन्धी चित्रों को, और सम्वाद जिन्हें उक्त संवाद समिति ने कल (२१ अगस्त को) रेडियो से लन्दन और अमेरिका भेजने की चेष्टा की थी, रोक लिया गया है। इसमें लीग मंत्री मण्डलकी चाल मालूम पड़ती है।

'न्यू स्टेट्समैन एण्ड नेशन (लन्दन)'--यह स्पष्ट है कि उन मुसलमान बलवाइयों ने, जिन्हें मोटर लारियां मिली हुई थीं और जो छुरों से लैस थे, हिन्दुओं पर पहले से बनी योजना के अनुसार हमला किया। उसका सारा उत्तरदायित्व लीग पर है।

'अमेरिकन न्यूज फाइल (बम्बई)'--लीग की यह नीति कलंकका टीका है। इस प्रकार 'पाकिस्तान' नहीं मिल सकता है।

'टाइम्स (लन्दन)'--भारतियों के सामने यह एक गूढ समस्या है कि दंगे के शुरू होने पर तुरन्त सेना क्यों नहीं बुलाई गई ? और इसके पश्चात् जब शुक्रवार को दंगा व्यापक रूप से फैल गया तो शहर में सैनिक कानून क्यों नही लागू किया गया ? जब सरकार ने लीगियों को बलवा करते देखा तो उनको क्यों नहीं पकड़ा।

'स्टेट्समैन (कलकत्ता)'--कांग्रेस द्वारा राष्ट्रीय सरकार का निर्माण कर लेने तथा मुस्लिम लीग को शासनका सूत्र प्राप्त न होने से लीग ने अपनी परवशता और खिसियाहट से ऐसा करवाया। १६ अगस्त को जब कि किसी को सवारियां कठिनाई से मिलती थी, तब लीगी उपद्रवियों को हर प्रकार के यातायात के साधन उपलब्ध थे। दंगे कराने में लीगी सरकार की सहायता अवश्य थी।

'हिन्दू'--जब से मुस्लिम लीगने 'सीधी कार्रवाई' का प्रस्ताव स्वीकार किया है, तबसे लीगी नेताओं के अत्यन्त उत्तेजनापूर्ण भाषण होने लगे 'चूंकि वे मुसलमानों को उनके विरुद्ध जिन्हें वे अपना शत्रु समझते हैं 'सीधी कार्रवाई' के लिए तैयार करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने उनके विरुद्ध खूब विष उगला। अपने भाषणों में मार-काट और अग्नि तथा लूट काण्डों का भी उल्लेख किया। उनका निश्चय था कि भारत के प्रत्येक नगर में एकदम झगड़ा हो जाय।

'टाइम्स आव इण्डिया'--१६ अगस्त को छुट्टी को लीगी मंत्री मण्डल ने दंगे को दबाने की कोशिश नहीं की। नोआखाली में

मौलवियों ने मुसलमानों को भड़काने के लिए 'तबलीगी' भाषण दिए। पुलिस और उपद्रवियों से हिन्दुओं पर हमला करने का इशारा लीगी मंत्री मण्डल की ओर से था। गलियों और सड़कों पर पड़ी तथा सड़ी हुई लाशों का हैल्थ विभाग की ओर से कोई व्यवस्था नहीं की गई।

'शेफोल्ड टैलीग्राफ (लन्दन)'—यद्यपि कलकत्ते में मुस्लिम लीग के "डायरेक्ट एकशन डे" को गुण्डों ने आग और नृशंस हत्या से रक्तरंजित अध्याय में उपस्थित किया तो भी मुस्लिम लीग का इस अवसर पर ऐसी कार्रवाही करने के अभियोग से मुक्त किया जाना असम्भव ह। डायरेक्ट एक्शन के सम्बन्ध में उनकी बहुत-सी पशुतापूर्ण बातों में उनके इन भावों ने कि उन्हें सरकार और कांग्रेस ने अपमानित किया है, उत्तेजना कर रक्खी है। ऐसे मंत्रीमण्डल को रख कर भारत को क्यों विनाशकारी बनाया जाता है ?

'फ्री प्रेस जनरल'—यह बात प्रमाणित है कि सब ओर साम्प्रदायिक भावनाएं भड़काने की जिम्मेवार मुस्लिम लीग है।

'मेहतर बंगाल संघ के अध्यक्ष श्री. के. चटर्जी'—ने जो इस समय लन्दन में हैं, भारत मन्त्री को अर्जी दी है। जिसमें उनसे कहा है कि कलकत्ताके दंगे तुरन्त बन्द कराये जांय और "सीधी-कार्रवाई दिवस पर सरकारी छुट्टी रखे जाने के बारे में जांच कराई जाए।

'बाम्बे क्रानिकल'—कलकत्ता के दंगे और देश के कई भागों की अशांत अवस्था का कारण राजनैतिक प्रश्न का निर्णय और अन्तः कालीन सरकार का निर्णय है। लीग का निश्चय था कि कांग्रेसियों को हानि पहुँचाए सो अपनी करनी में कसर नहीं

छोड़ी। इसके अतिरिक्त मन्त्री मण्डल को स्वयं इस्तीफा दे देना चाहिये, क्योंकि वह कानून और व्यवस्था को कायम नहीं रख सका है।

'लन्दन न्यूज'—भारत का जो भी दल किसी प्रकार के प्रदर्शन का आयोजन करे उसीको उसके परिणामों का उत्तरदायित्व लेना चाहिये। मुस्लिम लीग ने जो 'डायरेक्ट एकशन' जनता के विरुद्ध लिया है, उस का परिणाम केवल औरों के लिए ही नहीं बल्कि उसके स्वयं के लिए भी भविष्य में अच्छा नहीं।

पैरिस फायल—कलकत्ता की भीषण दुर्घटना ने मनुष्यों के हृदय हिला दिये हैं। उससे अधिक नोआखाली ने हिन्दुओं को सतर्क कर दिया है। इसमें मुस्लिम लीग का हाथ है।

पोलेण्ड न्यूज पेपर—यहां के राजनीतिज्ञों को यह आशा है कि अन्तर्राष्ट्रीय संघ इस विषय में हस्तक्षेप करेगा। मुस्लिम लीग ने अच्छा नहीं किया।

डेली टेलीग्राफ—कलकत्ता के दंगे के लिए बङ्गाल की मुस्लिम सरकार ने सीधी कार्यवाही दिवस को सार्वजनिक छुट्टी घोषित करने की मूर्खता करके अवसर प्रदान किया है। देश के अन्य भागों में ऐसी दशा होने से पूर्व भारत के इस प्रधान देश की दशा देखकर साम्प्रदायिक नेताओं को समझ आजानी चाहिये और भावी सरकार के विषय में उन्हें समझौता कर लेना चाहिये।

आज कलकत्ता की रक्षा करने वाले ब्रिटिश सैनिकों से वह सहायता ले सकेगी पर एक बार शासनारूढ़ होजाने पर भारत सरकार को अपने नागरिकों की रक्षा करने के लिए अपनी सेना पर ही निर्भर रहना पड़ेगा।

टाइम्स (लन्दन)—यह समझना कठिन न होगा कि जब ऐसे ही प्रदर्शन अन्य नगरों में शान्ति पूर्वक हो गए तो कलकत्ता में ही क्यों ऐसा उपद्रव हो गया। नोआखाली को मुसलमानों ने इस बुरी तरह क्यों नष्ट-भ्रष्ट किया। हिन्दू सम्पन्नता और मुस्लिम निर्धनता का जैसा अन्तर कलकत्ता, बम्बई, नोआखाली आदि नगरों में मिला वैसा शायद अन्यत्र नहीं।

कलकत्ता आज बड़ा भारी व्यापारिक केन्द्र बना हुआ है। बम्बई में अनेकों विदेशी व्यापारों का केन्द्र है। नोआखाली भी बंगाल की मण्डी है। इन नगरों में शान्ति और व्यवस्था रखने का भार मुस्लिम लीगी सरकार पर है।

हताहतों की बड़ी भारी संख्या, निरपराधी स्त्रियों के साथ बलात्कारी और हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन देखकर स्पष्ट हो जाता है कि अधिकारियों की दुर्बलता अथवा अयोग्यता के कारण नागरिकों को कितनी हानि उठानी पड़ती है। मुसलमानों और जिन्नाः को समझ लेना चाहिये कि उन्होंने अपने लिए जो पथ निर्धारित किया है वह कितना खतरनाक है। अब वे नहीं कह सकते कि कांग्रेस पार्टी ने दीर्घकालीन योजना को मुस्लिम हितों के लिए संरक्षण सहित स्वीकार नहीं किया है।

ट्रिब्यून—मुस्लिम लीग के 'सीधी कार्रवाई' दिवस से भीड़ों के द्वारा किए गये इस रक्तपात को अलग रखना असम्भव है। नहीं तो मुकाबले के लिए दूसरे लोग इसका बदला लेने की कोशिश करेंगे।

टाइम एण्ड टाइड—श्री जिन्नाः इस अवसर के अनुसार ऊंचे नहीं उठे। इसके लिए उनके कारण हैं; लेकिन नेहरू जी के अन्तः कालीन सरकार में भाग लेने से इन्कार करने से उनके

विरोधियों की शक्ति ही बढ़ी है। कलकत्ता के दंगों के लिए श्री जिन्ना की सीधा व्यक्तिगत उत्तरदायित्व न होने पर भी निश्चय ही उन पर यह आरोप लगाया जा सकता है कि या तो इस गुण्डापन को उनकी गुप्त स्वीकृति प्राप्त थी या आम लोगों पर उनका कोई नियन्त्रण न था। इसलिए इस सप्ताह श्री जिन्नाः के लिए अच्छा नहीं रहा। वे केवल राजनीतिज्ञ ही रह गए, जब कि नेहरू जी ने राजनीति कुशलता का परिचय दिया।

रायटर—मुस्लिम लीगने नोआखाली और कलकत्ता में जो जंगलीपन दिखाया है वह किसी से छुपा नहीं। परन्तु इन बातों से उनको 'पाकिस्तान' हासिल नहीं हो सकता-बल्कि एक जाति को अपना हमेशा के लिए दुश्मन बनाने का तरीका है।

भारत—बंगाल के इन दंगों में लूटपाट, बलात्कार, हिन्दू से मुसलमान बनाना, हत्या व अग्निकाण्ड करोड़ों की क्षति आदि जो भी कुछ की गई है उसमें लीग की पूरीर शरारत है।

हरिजन—महात्मा जी ने बंगाल के उपद्रवों की बात पढ़-कर या सुन कर अत्यधिक व्याकुलता प्रकट की है। अब नोआ-खोली स्वयं जा रहे हैं। जहां असम्भव और अनुचित व्यवहार हिन्दुओं के साथ लीग की ओर से हो रहा है।

हिन्दुस्तान स्टेण्डर्ड—

कलकत्ता में आम लोगों से तब तक विश्वास की भावना पैदा न होगी जब तक प्रान्त के वर्तमान अपराधी व अयोग्य अधिकारियों के हाथों में शासन प्रबन्ध की बागडोर न छीनली जायगी; केवल कलकत्ता ही नहीं वरन् सारा बंगाल तबतक अपने को सुरक्षित नहीं समझेगा और स्थिति विस्फोटक रहेगी जब जब तक कि इस प्रान्त में शान्ति का दायित्व वर्तमान मन्त्रि-

मण्डल अत्यधिक ग़ैर जिम्मेदारी लोगों का गिरोह है। यह एक भयानक कण्टक है। कलकत्ता में जो कुछ हो चुका है उसको देखते हुए बंगाल की ६ करोड़ जनता वर्तमान प्रान्तीय सरकार के आधीन रहने से इन्कार कर देगी; क्योंकि इस सरकार ने लोगों को नरक का मजा चखा दिया है। इस दुःख कार्य में गवर्नर के हिस्सा लेने का मामला हम उन लोगों के निर्णय पर छोड़ते हैं जिन्होंने उन्हें नियुक्त किया था।

स्थानीय समाचार पत्र

स्टेट्समैन—लीग की छुट्टी की घोषणा का ही यह दुष्परिणाम है जो इतना रक्त, धन, हानि, बलात्कारिता आदि बंगाल में हुए।

हिन्दुस्तान—लीग का मन्त्रि-मण्डल मूर्ख और अयोग्य है तथा इसके मन्त्री को भी इस पद से च्युत किया जाये। लीग की ऐसी कारस्तानी से हमें घृणा करनी चाहिये। लीग देश द्रोहिणी है। विरोधी भावों की घोषणा उसके लिए भी हानि कारक हो सकती है।

विश्वमित्र—हिन्दू कायर हैं। इनको पिटते २ सदियां गुज़र गई परन्तु अब भी इनकी नींद नहीं खुलती है। जब सारे हिन्दू-मुसलमान बना लिए जायंगे क्या उस समय इनको होश होगा कि कलकत्ता, बम्बई, नोआखाली तथा भारत के अन्य सैकड़ों नगरों में इन लीगियों ने ध्वंस मचा रखा है। परन्तु हम वैसे ही शान्ति का पाठ पढ़कर चुप हैं। शर्म की बात है।

वीर अर्जुन—शत्रु वास्तव में शत्रु है। इसको मित्र बनाने की भावना हृदय से निकाल ही देनी चाहिये। लीग से हिन्दू कभी लाभ की आशा न रखे। खेत में जाड़ा और गांव में गाढ़ा

(मुसलमान) रहेगा तो सदैव दुखदाई रहेगा। बंगाल की घटनाओं के सम्बन्ध में सुनने से पूर्व हमारी आंखों को फूट जाना चाहिये और कानों को फट जाना चाहिये।

तेज—उन उपद्रवों की बात सुनकर तो हमें अपना हिन्दूपन ताक़ पर रख देना चाहिये। जहां हमारी लड़कियों, स्त्रियों औ बच्चों के साथ ऐसा बलात्कार और दुर्व्यवहार किया जाय। उस स्थान के शैतानों को तो समाप्त करने पर भी चैन न लेना चाहिये, वाक़ई लीग ने बुरी शरारत की।

रतन—यदि ऐसे लड़ाई झगड़े ही होते रहे तो हिन्दू मुट्ठी भर भी न रहेंगे। हिन्दुत्व का बीज नष्ट हो जायगा। लीग को बदमाशों की एक जमायत कहना चाहिये।

डान—दंगे को इतना बड़ा रूप देना सब हिन्दूवादी पत्रों का काम है वरन् बंगाल में हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमान चार गुणे मरे हैं। लीग को झूठा बदनाम किया जाता है। यह सारी करतूत हिन्दू-संघ और कांग्रेस की है। लीग शैतानों की जमाअत नहीं। इसमें सब शरीफ आदमी सदस्य हैं। और फिर यह कहना पड़ता है कि यह पहला मौका है।

अंजाम- लीग बंगाल के झगड़ों की जिम्मेदार नहीं। लीगी मन्त्रि-मण्डल अपने कार्य में सतर्क और सफल है। ख्वाहम्ख्वाह में अल्जाम लगाने से कोई जमाअत बदनाम नहीं होगी। हिन्दुओं ने आज मुसलमानों को इजा पहुंचाई है। नोआखाली में जिनको मुसलमान बनाया गया है। वे पहले भी मुसलमान थे। सिर्फ तरजे मुआशरत (रहन-सहन) में फर्क था। अब मौका आने पर उनको मुसलमानों ने अपने में शामिल कर लिया है। इसमें मुस्लिम लीग का कोई हाथ नहीं था।

नया हिन्दुस्तान—बंगाल में हलचल मचाने की जिम्मेदारी लीग पर है। वास्तव में हिन्दुओं के साथ में लीगी मन्त्रि-मण्डल ने ज्यादती की है। हिन्दुओं को अब हर जगह होशियार हो जाना चाहिये। नोआखाली से अधिक हत्याकाण्ड कहीं अब तक के इतिहास में आया नहीं। हिन्दू निर्दोष हैं।

विदुषी श्रीमती ताहिरा बेगम बी. ए.

अध्यक्षा आलाए ख्वातीन (महिला) खाकसारान ए हिन्द कलकत्ता ने, कलकत्ते की रोमांचक घटनाओं पर अपना एक व्यक्तव्य प्रकाशित किया है, जिसमें बताया गया है:—

बंगाल में १६ अगस्त को राजकीय अवकाश था। जिसके कारण सब कार्यालय, दुकानें, पोस्ट आफिस, टेलीफोन और बाजार आदि बंद थे। सारे शहर के गुण्डे सहस्रों की संख्या में बड़े-बड़े चाकुओं, तलवारों और लोहे के डंडों से लैस होकर जिनमें कुछएक शराब में बदमस्त भी थे, संगठित होकर जलूस निकाल रहे थे। उनकी संख्या दस हजार से किसी भी प्रकार कम न होगी। वही जलूस वाली सेना आध घंटेके अन्दर चक्कर काट कर वापस लौट आई। पता चला कि यह लोग लूटमार करके आए हैं। मैंने अपने आंगन में से देखा कि उनमें से प्रत्येक व्यक्ति लूटी हुई सम्पत्तियों से लदा हुआ था। तांबे के पात्र, वस्त्र, घड़ियां, रेडियो और बहुमूल्य आभूषण आदि उनके पास थे। थोड़ी देर पश्चात बाजारों में से धुंआ उठते हुए दृष्टि-गोचर हुआ। ज्ञात हुआ कि सहस्रों की संख्या में गुण्डों ने बाजारों को अपने हाथों में ले लिया है। और बची हुई सामग्री और मनुष्यों को मार-मार कर, उनके शवों और दुकानों को

स्वाहा कर रहे हैं। जो सज्जन उनके कार्यों में हस्तक्षेप करने का साहस करते थे, वह भी उनकी दावानल की लपेट में आजाते थे। पुलिस को ड्यूटी देने से अधिकारियों ने रोक दिया था। सारे नगर में गुण्डों का राज था। निर्दोष जनता गुण्डों के भीषण अत्याचारों से ग्रस्त थी। 'मुस्लिम लीग जिन्दाबाद' 'अल्ला हो अकबर' के नारे लग रहे थे और उन नारों के साथ दुकानों को लूटा जा रहा था।

मेरे घर के नीचे गोल्ड-सिल्वर की दुकान, सर्राफ की दुकान, मिठाई की दुकान और बूट की दुकान--सब अल्ला-अक्कबर और मुस्लिम लीग के नारों के साथ लूटी जा रहीं थीं। दूकानें लोहे के डण्डों के साथ तोड़ी गईं और बुरी तरह लूट ली गईं।

साढ़े तीन बजे के लगभग एक लीगी की मोटर आई। गुण्डे मार्ग से हट गये थे और संभवतः लूटा हुआ माल पहुंचाने गये थे। इसके पश्चात गुण्डों ने मुस्लिम लीग जिन्दाबाद का नारा लगाया-और भीड़ फिर एकत्रित हो गई। लीडर साहब जो मोटर में आये थे, उन्हें पानी आदि पिलाया गया और वह आगामी कार्यवाहियों का निर्देश देकर चले गये। और जाते हुए भीड़ को यह कह कर गये कि भवानीपुर और श्याम-बाजार में मुसलमानों की अवस्था चिन्ताजनक है।

यहां गुण्डों ने चिल्ला-चिल्ला नारे लगा कर शेष सेना को एकत्रित कर लिया और हिन्दुओं के घरों पर आक्रमण कर डाला। नारों के साथ जो पाकिस्तान जिन्दाबाद के थे, द्वार तोड़ डाले और सैकड़ों गुण्डे टूट पड़े। रुपया-पैसा, सामान, आभूषण आदि जो कुछ वह ले जा सकते थे, ले गये। शेष को आग लगा दी। घर में जिसने तनिक भी चूं-चपर की उसी के पेटमें

छुरा घोंप दिया गया। समीप रहने वाले स्त्री-पुरुष, बच्चे-बुड्ढे सब हम से आश्रय मांग रहे थे। मेरे भाई अब्दुल मजीद और अन्य शरीफ मुसलमानों और खाकसारों ने लगभग दो सौ आपत्ति-ग्रस्त लोगों को यहां आने में सहायता दी। परिणाम यह हुआ कि गुण्डों ने हमारा घर घेर लिया और द्वार तोड़ना प्रारंभ कर दिया। किसी के समझाने का उन पर कोई असर नहीं हो रहा था। पूंजीपतियों को लूटने के जोश में सब अंधे हो रहे थे।

हमने स्पष्ट घोषणा करदी कि हम किसी भी दुःखी और आश्रय में आये हुये पर जुल्म न होने देंगे। चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान और जो भी हमारे घर पर आक्रमण करेगा उसका हम सब मिल कर सामना करेंगे। चाहे हमें कितनी ही हानि उठानी पड़े। मैं यह कह रही थी कि एक बदमस्त शराबी ने सोड़ावाटर की बोतल मुझे मारने का प्रयत्न किया, परन्तु मेरे भाई ने मुझे बचा लिया। चार दिन तक लगातार रात-दिन हमारा सुदृढ़ द्वार बन्द रहा और दोनों ओर से गुण्डे आक्रमण करने का यत्न करते थे। परन्तु वह समझते थे कि हमारे पास सामने का प्रबन्ध है और घर के स्वामी के पास दो बन्दूकें भी हैं, वह साहस न कर सके। इसके बीच में हमने सारे हिन्दुओं को सैनिक गाड़ियों के संरक्षण में उन्हें सुरक्षित स्थानों पर पहुंचा दिया। नाजिम आला-ए-गुलाम दस्तगीर के स्वयं सेवक चार दिन तक लगातार इस काम में लगे रहे। हिन्दुओं के चले जाने के कारण जो घर रिक्त हो गये थे, उन भयभीत हिन्दुओं को पुनः लिवा लाकर रखा गया। इस प्रकार खाकसारों ने १५ सहस्त्र सज्जनों की रक्षा की। ६ दिन तक सैकड़ों की संख्या में हिन्दू-मुसलमानों के शवों को गीद्ध-चील और कौवे खाते रहे। शहर के गली कूंचों बाजारों और छोटे-छोटे घरो में पड़े हुये शवों की दुर्गन्ध से महक उठे थे। सभी स्थलों पर

गुण्डे निर्दोष जनता को छुप--छुप कर खोज करते और मारते थे। अच्छे लोग हिन्दू, सिख और मुसलमान एक दूसरे को आश्रय प्रदान कर रहे थे।

बड़े-बड़े नवाब, सौदागर और पूंजीपति जो बचे हैं वह नंगे हो गये हैं, फकीर बन गये और उनको देखकर असीम पीड़ा होती है।

तीसरे दिन जब मिल्ट्री ने नगर का चार्ज ले लिया और सताये हुओं की सहायता की जाने लगी तो लीगवाले भी मिल्ट्री की रक्षा में निकले और लीग मिनिस्ट्री को सुरक्षित रखने के लिये रिलीफ वर्क का जोरदार प्रोपेगैंडा करने लगे।

अन्त में आदरणीय ताहिरा बेगम ने कहा है। मेरी प्रार्थना है कि कलकत्ते की दुर्घटना के अनन्तर मुसलमानों की आंखे खुलें और वह अपने मित्र और शत्रु को जानें।

घर संख्या ८७ न्यूयार्कस्ट्रीट कलकत्ता	मुहविया ताहिरा बेगम बी. ए. नाजम आला-ए-ख्वातीन खाकसाराये हिन्द

———

मुझे निहायत अफसोस है कि कलकत्ता बम्बई, नोआखाली आदि में खुदा की इतनी बड़ी अशरफउलमखलूक़ात की खूंरेजी (रक्तपात) गारत गिरी (विनाश). रहजनी (लूटपाट) आतिशज़दगी (अग्निकाण्ड) गुण्डों के जरिए हुई। हिन्दुस्तान के हिन्दू-पत्र इस दंगे को लीग की शै क़रार देते हैं! लेकिन मुझे पूरा पूरा यक़ीन है कि लीग ऐसा जुल्म नहीं कर सकती और अगर वाक़ई यह उसकी शरारत है तो मैं उसके लिए हद से ज्यादाः अफसोस ज़ाहिर करता हूँ। मुर्दे और जख्मी लोगों पर मेरा दिल निहायत रंज महसूस करता हूं। अब मैं हिन्दू और मुसलमानों से अर्ज करता हूं कि मुल्क में अम्नो अमान कायम रखो। इसका मुझे ख्याल रहता है कि जब कभी कहीं कोई दंगा या झगड़ा हो जाये तो सबसे पहिले वहां गुण्डों

के नाम की फेहरिस्त में मुसलमानों का नाम ही आता है। हां. यह ही वेहशी और शर्री क़ौम है इसके माने तो यह हुए कि "शहर में ऊंट ही बदनाम" कोई बात नहीं यह पहला ही मौका था।

—मोहम्मदअली जिन्नाः
कायदे आज़म
आल इन्डिया मुस्लिम लीग

मुझे अत्यन्त खेद के साथ यह विचारना पड़ रहा है कि हम भारतियों में साम्प्रदायिक दंगों के आने से विदेशी लोगों पर जो प्रभाव पड़ रहा है। उसका परिणाम भारत के लिए अच्छा नहीं। वह हमारी लड़ाई देख कर खुश होते हैं। कांग्रेस के जमाने में हिन्दू-मुसलमान 'हमनवाला हम प्याला' थे। आज मुस्लिम-लीग के कुछ गुण्डोंने हिन्दुओं पर अत्याचार, हत्याकांड और रक्तपात किया है। इससे हम हिन्दुओं को चेतावनी देते हैं कि अपने जन-धन की रक्षा करने के लिए उनको अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिये। गुण्डों के मुकाबले के लिए हम लोगों को हर तरह तैयार रहना चाहिये। हिन्दुओं को दया और शान्ति दोनों को तिलाञ्जली देनी पड़ेगी तब ही वे भारत में शान्ति पूर्वक बस सकेंगे, अन्यथा नहीं। जबसे मुसलमान लोग भारत में आए हैं हमने इनका आतिथ्य किया, इनकी धर्म-वृद्धि की, इनको भोजन दिया, आश्रय दिया, इनको लड़कियां दीं। परन्तु फिर भी इन एहसान-फरामोशों ने हमारे साथ कोई सहानुभूति नहीं रखी। कलकत्ता, नोआखाली, बम्बई तथा अन्य लगभग सारे देश में लीगी गुण्डों ने हल-चल मचादी। हिन्दुओं को मारा, जलाया, उनके साथ लूट-पाट का व्यवहार किया। युवति तथा स्त्रियों के धर्म नष्ट किए। हज़ारों को मुसलमान बना लिया। उनके घर छीन लिये—बे घर-दर कर दिया। इससे अधिक हिन्दुओं के विरुद्ध और अत्याचार-जुल्म क्या किया जा सकता है। जुल्म की सीमा का अन्त है।

पूज्य महामना मदन मोहन मालवीय,
काशी

कलकत्ता की निरीह जनता के जीवन से खेलवाड़—बंगाल मन्त्री मण्डल की न्याय प्रियता, कर्त्तव्य-परायणता और सहृदयता का जीता-जागता उदाहरण—बंगाल का कत्ले आम ! १६ अगस्त १९४६
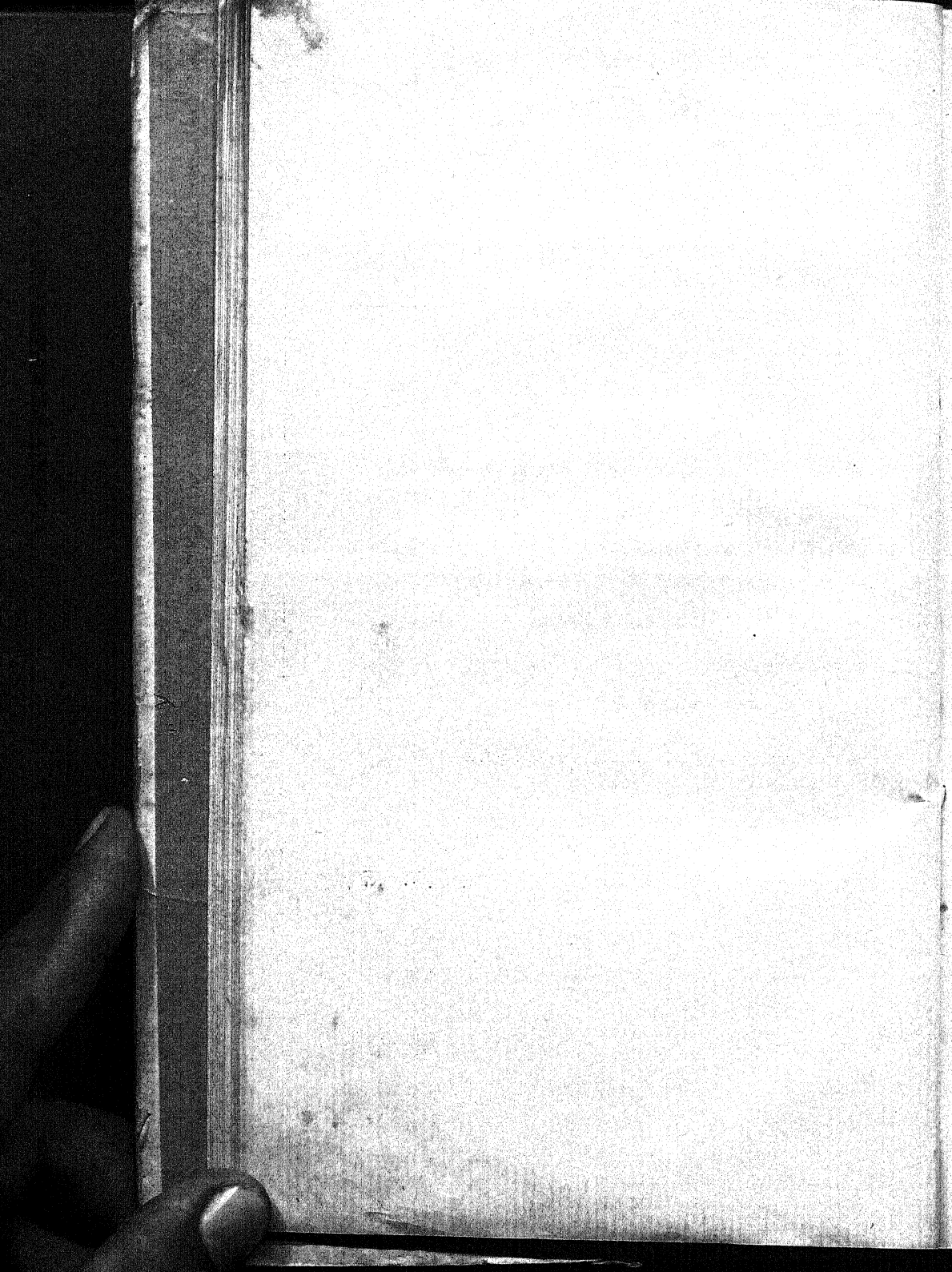
* बंगाल का हत्याकाण्ड *

अतः कालीन सरकार और लीग

राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू ने एक पत्र मौ० अ० जिन्ना को अन्तः कालीन राष्ट्रीय सरकार के निर्माण में उनकी सहायता प्राप्त करने के लिए वर्धा से एक दूत के द्वारा बम्बई भेजा।

लीगियों के झुर्मट ने उस पत्र पर कूट नीति से विचार किया। कांग्रेस का इतना अधिकार मुस्लिम-लीगियों को खला। १४, अगस्त ४६ की दोपहर से कुछ पहले यह पत्र उनको मिल ही चुका था, एक दिन तक उस पर हाशिया और चाशनी का रंग चढ़ता रहा। उस विचार और दूरदर्शिता का फल यह निकला कि मुस्लिम लीग के अधिकारियों ने '१६ अगस्त को जिहाद अर्थात् खुली लड़ाई की घोषणा करदी।'

कलकत्ते के मुस्लिम-मन्त्री और विशेष कर बंगाल के वजीर आज़म मि० शहीद सुहरावर्दी की कृपा से १६ अगस्त को कलकत्ते में मौत, लूट, और अग्निकाण्ड की पिशाची घटना का भयंकर रूप देखा गया।

मनुष्यों के रूप में पिशाचों और दानवों को भीरुता का रूप धारण कर लेने वाली दुर्बल, अपाहिज, अपंग मानवता का वक्षस्थल, मर्मस्थल रौंदते और मींजते देखा।

यह बात इस भयंकर ताण्डव को प्रमाणित करती है कि ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल के भारत आने के अवसर पर दिल्ली में जो मुस्लिम लीग की बैठक हुई थी उसमें जोश और ओज के साथ यह कहा गया था कि मुसलमानों की मांगें यदि ठुकराई गईं तो हिन्दुस्तान को जो दृश्य (नजारा) देखने को मिलेगा उसके सामने नादिरशाही और चंगेजखां की दिल दहलानेवाली कहानियां फीकी, नीरस और नगण्य मालूम होंगी।

दिल्ली में लीगी नेताओं द्वारा दिए गए वक्तव्य बंगाल के वजीरे आजम मि० शहीद सुहरावर्दी के राजत्व काल में कलकत्ते में अक्षरशः सत्य चरितार्थ करके दिखा दिए गए। इसके साथ २ मुस्लिम लीग के मन्त्री ने धार्मिक वाज़ (व्याख्यान) देते हुए तथा गर्जना करते हुए कहा—

"मुसलमानो, तुम्हें यह अवश्य ही याद रखना चाहिए कि जब क़ुरान शरीफ दुनियां में प्रकाश के रूप में लाई गई थी तो रमज़ान का पवित्र महीना था। और वह भी रमजान का पाक महीना ही था जब कि अल्लाह पाक ने 'जिहाद' करने का आदेश दिया था। तीसरी बात इस रमजान के पाक महीने में यह भी आश्चर्य जनक हुई कि मुस्लिम और बुतपरस्ती (मूर्तिपूजा) के बीच में अखण्ड युद्ध का श्री गणेश हुआ इसका नाम भी खुला युद्ध था। इस जिहाद में ३१३ मुस्लिमों द्वारा बुतपरस्तों को पायमाल (नष्ट) कर दिया। इसके अतिरिक्त अन्तिम बात यह है कि रमज़ान के पाक महीने में जब पैग़म्बर (मुहम्मद के जेरसायें (नेतृत्व) में दस हजार (१००००) मुसलमानों ने मक्का को जीत कर खुदाई हुकूमत और अरब में इस्लाम धर्म का साम्राज्य स्थापित किया। यहां यह कहना अनुचित नहीं कि

क्या मुस्लिम लीग के लिए भी यह घोषणा और यह रमजान का पाक महीना दोनों सौभाग्य की बात नहीं है। महीने के प्रारम्भ में ही संघर्ष का आरम्भ हुआ।"

इसके साथ २ मि० जिन्ना और मि० नाज़िमुद्दीन ने भी आंख बन्द करके नरसंहार करने की घोषणा की—"हम अपने सामने संघर्ष को देखना चाहते हैं। हमारे सामने हिंसा और अहिंसा होना कुछ नहीं। और हम यहां तक साहस करते हैं कि हमारा संघर्ष अहिंसा तक ही सीमित नहीं बल्कि हम खून की नदियां और नदियों में रुण्ड-मुण्ड लुढ़कते-पुढ़कते देखना चाहते हैं।"

मि० सुहरावर्दी ने कांग्रेस के विरुद्ध यह घोषणा कीः— "कांग्रेस के हाथों में अधिकार-शक्ति सौंप देने का सम्भावित परिणाम खुले आम युद्ध की घोषणा होगा।"

पाकिस्तान

एक सप्ताह में जो घटनायें हुई है वे भारत के इतिहास में अभूतपूर्व हैं। गत ३० वर्षों में देश भर में सैकड़ों साम्प्रदायिक दंगे और हुल्लड़बाजियां हुईं परन्तु कलकत्ते का यह भयंकर ताण्डव सब से बढ़ा चढ़ा था। सन् १९१० से लेकर १९२६ तक जो तीन बार दंगे हुए उनमें सारी धन-जन की जो हानि हुई वह भी इस धन-जन के सामनें तुच्छ हैं। इसमें जो नृशंसता और क्रूरता का नग्न चित्र दिखाया गया वह अत्याचारी नादिर-शाह की क्रूरता और निर्दयता से शायद बराबरी कर सकती थी या दूसरे शब्दों में यूं भी कहा जा सकता है कि उससे भी बढ़ कर थी। परन्तु यह कहते हुए कोई कम खेद की बात नहीं है कि बंगाल के मुस्लिम लीगी मन्त्रिमण्डल ने जो दुरुपयोग और अनुपयोग अपने अधिकारों का किया है वह यह सिद्ध करता है कि 'पाकिस्तान' में रहना ख़तरे से खाली नहीं। इससे पूर्व लोग यों ही 'पाकिस्तान' से डरते थे अब उसकी चासनी चख कर कौन वहां रहने का साहस करेगा।

---

१६ अगस्त को सरकारी छुट्टी

बंगाल के गवर्नर सर फ्रेडरिक वरोज को अयोग्य और अदूरदर्शी सिद्ध करने के लिए ही मुस्लिम लीगी मन्त्रिमण्डल के वज़ीरे आज़म मि० हस्सान शहीद सुहरावर्दी उनकी शक्ति और अधिकारों का दुरुपयोग किया है तथा इस घटना के अन्तर्गत बंगाल गवर्नर के प्रति उनके हृदय में द्वेषभाव भी विद्यमान थे। क्योंकि पिछले खाकसारी आन्दोलनों में गवर्नर बंगाल ने उनके कार्यक्रम में हस्तात्तेप भी किया था और खाकसारियों के विरुद्ध दोषारोपण भी किया था, अब उनको इसका बदला लेने का अच्छा मौका हाथ आ गया—इस मौके को मुस्लिम लीग तथा साम्प्रदायिक मुस्लिम अपने हाथों से खोना अपना दुर्भाग्य समझते थे। इस लिए इस झगड़े को जारी रखने का दोष बंगाल गवर्नर पर ही रखा।

इससे हम नतीजा निकालते हैं कि बंगाल में मुस्लिम लीग शासन करने के नितान्त अयोग्य है। इसके प्रमाण के लिए १६ अगस्त को पब्लिक हाल में (सरकारी छुट्टी) घोषित करना और उस दिन काले झण्डों सहित हड़ताल मनाना और अन्य मुस्लिम कांग्रेसियों से भी जबरदस्ती मनवाना कितने दुःख और अन्याय की बात है। जिसमें मुस्लिम जनता के अतिरिक्त अन्य हिन्दू, ईसाई और सिख जनता के लोग भी निवास करते हैं।

जब बंगाल असेम्बली और कौंसिल में इसके विरोध के लिए प्रश्न उठाया गया तो मि० सुहरावर्दी ने बताया कि किसी को जबरदस्ती दुकान से चीज लेना या उसकी दुकान बन्द कराने से छुट्टी और हड़ताल होना अच्छा है।

इसका तात्पर्य तो यह है कि यह मुस्लिम-लीगी मंत्रिमंडल का न्याय नहीं गुण्डों का अड्डा या मि० जिन्ना की क्रूर मजोरीटी है।

रक्तपात का समर्थन

मि० जिन्ना ने अपनी घोषणा में Direct action (डाइरेक्ट अक्शन) प्रत्यक्ष-कार्य का निश्चय किया तथा ख्वाजा नाजिमुद्दीन और सुहरावर्दी ने नोन वाइलेंस या अहिंसा की घोषणा खुले धड़ाके की और कहा कि हम इसके बिल्कुल पाबन्द नहीं।

अन्य लीगी लोग इस घोषणा की ताक में थे ही और उनको अपनी पिछले बुग्ज़ (शत्रुता) हिन्दुओं से निकालनी चाही, वह ही बात लीगी गुण्डों ने कर दिखाई।

जिन लोगों ने लीग से सहानुभूति और डर के कारण अपनी दुकानें और आफिस बन्द कर दिए थे उन पर भी कोई कृपा नहीं की, उनकी भी बुरी तरह से खबर ली। स्टेट्समैन (समाचार पत्र) का आफिस १६ अगस्त को बन्द था परन्तु इस पर भी आक्रमण हुआ, खिड़कियों के शीशे तोड़े गए, काम करने वालों पर पत्थर फेंके गए। उसके स्टोर में जो कागज रक्खा था वह भी निर्दयता के साथ जला दिया गया और इस प्रकार की हानियां पहुंचाई गयीं। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं क्योंकि स्टेट्समैन अपने अनुभव और प्रत्यक्षवादी के नाते इस मन्त्रिमण्डल की अयोग्यता, मूर्खता और अदूरदर्शिता की निरंतर चर्चा किया करता है। दर असल मुस्लिम लीग ने इस प्रकार का दंगा बंगाल (कलकत्ते) में करके अपना हाथ शेर के मुंह में दे दिया है। उसने देश की स्वाधीनता के मार्ग में रोड़े अटकाए हैं तो यह अवश्य ही खेद और दुःख का विषय है। यह समय मिलकर हाथ बटाने का था, इसका मूल कारण है कि लीग कांग्रेस के सिद्धांत से नितांत असहमत थी।

नादिरशाही का प्रारम्भ

पूरी जांच और पड़ताल के पश्चात् यह पता लगा है कि लीगी नेताओं ने स्थानीय मुसलमानों को पहले से ही भड़का दिया था और उनको संगठित रूप में दंगे के लिए तैयार रहने का आदेश दे दिया था। यहां तक भी उन्होंने किया कि लीगी नेताओं ने प्रमुख हिन्दुओं के मकानों, हिन्दू समाचार पत्रों के कार्यालयों, हिन्दू धनिकों के मकान और दुकानों की सूची तैयार करली थी उसी नियमित योजना के अनुसार लीगी मन्त्रीमन्डल ने ता० १६ अगस्त की ; तनिक भी चिन्ता किये बिना ही सार्वजनिक छुट्टी की घोषणा कर दी '

कांग्रेसपार्टी के सदस्य विरोध प्रदर्शनार्थ असेम्बली—हाल से उठकर चले गए। लीगियों ने यह अवसर शुभ समझा कि हिन्दुओं की जो दुकानें शान्ति स्थापित होने की संकेतक थीं, बन्द नहीं की गई थी। उन दुकानों पर लीगी नेता काले झण्डे हाथों में लिये पहुंचे और उन्होंने दुकानें बन्द करानी प्रारम्भ की, हिन्दू लोग बिना किसी विशेष कारण के दुकानें क्यों बन्द करें, यह सब विरोध लीग की ओर से हो रहा था इसलिए उन्होंने दुकानों के बन्द करने से इन्कार किया, दंगे का श्री गणेश हो गया।

दूसरी ओर मुस्लिम कार्यकर्ता मोटरों, लारियों तथा ट्रकों पर लीगी झण्डे लिए "जिन्नाः जिन्दाबाद", "मुस्लिम लीग जिन्दा-

बाद", "पाकिस्तान कामयाब हो" आदि के नारे लगाते हुये घूमते थे इस प्रकार की आग लगने वाली व्यवस्था से किसको सन्देह नहीं हो सकता था, कुछ अनुभवी और समझदार व्यक्तियों ने यह अनुमान लगाया कि यह दिन सकुशल नहीं बीतेगा।

दंगे को पूरा रूप देने का दूसरा सन्देह यह भी था कि मुस्लिम लीग की ओर से फर्स्ट एड सेन्टर (First aid center) (प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र) दो दिन पहले ही खुल चुके थे। स्टार ऑव इण्डिया पत्र ने अपने पूर्व लेखों में यह स्पष्ट रुप में प्रकट कर दिया था कि लोगों को चेताना चाहिए, न मालूम कि साम्प्रदायिक झगड़ा खड़ा हो जाए, इसके अतिरिक्त उर्दू का एक पत्र 'असरे जदीद' ने अपने लीगी भाईयों-को इस बात की चेतावनी दो दिन पहले ही दे दी थी कि हमें सदैव अपने बल पर विश्वास रखना चाहिए। दूसरी क़ौम (हिन्दू) हमसे शक्ति में बढ़े चले जा रहे हैं। उनका मुकाबला करने के लिए हर प्रकार का अस्त्र-शस्त्र प्रयोग में लाना चाहिए।

इतने संघर्षमय दृश्य की सम्भावना होने पर पुलिस की कोई रोकथाम कोई प्रबन्ध नहीं था। लीगियों के हाथों में लट्ठ थे और उन पर काले झण्डों की चिन्हात्मक कपड़े की धज्जियां लगी हुई थीं।

यह सब लीगी मंत्री मंडल का अन्याय है कि जब कभी छोटा सा भी मसान मूर्ति विसर्जन का जलूस निकलता है तो कलकत्ता पुलिस के सैकड़ों लट्ठबन्द जवान सार्जेण्ट और इन्स्पैक्टर इत्यादि मौकों और नाकों पर दल बान्ध कर इकट्ठे हो जाते हैं। परन्तु उस ताण्डव नृत्य के दिन पुलिस कमिश्नर

श्री नार्टन जोन्स के दिमाग में यह बात न सूझी कि झगड़े की सम्भावना प्रत्यक्ष होते हुए भी उसके लिए कोई इन्तजाम किया गया होता या लीगी मंत्री मण्डल के परामर्श पर ही पुलिस को प्रबन्ध करने पर नहीं लगाया गया अथवा पुलिस की कोई आवश्यकता ही नहीं समझी गई।

मानिक तल्ला में जो लीगी रहते हैं उन्होंने हिन्दुओं की जो दुकानें खुली हुई थी उनको जबरदस्ती तथा धमकियां दे दे कर बन्द करा दिया और कुछ निम्न कोटि के दुकानदारों का बाहर लगा हुआ सामान अपने हाथों से उठा उठा कर अन्दर दुकानों में डाल दिया और हुल्लड़बाजी के साथ हिन्दुओं की खुली दुकानें बन्द करा दी। कुछ दुकानदार जो शान्तिप्रद थे उन्होंने कहा कि आप लोग जाएँ हम अभी घन्टे आधे घन्टे में दुकानें बन्द करते हैं, तो लीगियों ने उनको आंखें दिखाई और कहा या तो दुकानें बन्द करो नहीं तो तुम्हारी दुकानें लूट ली जायेंगी। सज्जन और शान्ति प्रवृत्त हिन्दुओं ने उनके कहने के अनुसार दुकानें बन्द करनी प्रारम्भ की कि इतनी देर में पीछे से लीगियों का तैयार शुदा हुल्लड़ ने उन गरीबों की दुकानें लूटनी आरम्भ करदी और इसके साथ २ पत्थर और लकड़ियां बरसानी शुरु कर दी। इसका परिणाम यह हुआ कि यहां से फिर झगड़ा प्रारम्भ हो गया।

बाजारों में लीगी स्वयं-सेवक चकर लगा ही रहे थे वे लोग इस सुनहरे मौके को किस प्रकार हाथ से जाने दे सकते थे। उन्होंने खुल कर लाठियां चलाई और फिर छुरों के वारों से लोगों के हृदय चीर दिए और संगठित रूप से दुकानें भी लूटनी शुरु करदी! अब दंगों ने मंच का रूप धारण कर लिया दोपहर

के समय हावड़ा पुल पार करके दंगा करने वाले लीगियों की सहायता करने के लिए लारियों पर चढ़ चढ़ कर आगए। उनके हाथों में छुरे, बर्छी, लाठी, पत्थर और ईन्टे इत्यादि थी।

ज्यों ही उन लीगी सहायकों ने पुल को पार किया। लीगी नारों से बड़ा बाजार को गुंजा दिया—सब ओर 'अल्लाहो अकबर' 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' 'जिन्ना कामयाब हो' 'हिन्दुस्तान हमारा हो' 'काफिर बरबाद हों' के नारे से आकाश को गुंजा रहे थे।

अचेतन हिन्दू दुकानदार तथा मजदूरों को लीगी निर्दइयों ने मूली गाजर की भांति काटना आरम्भ कर दिया।

जकरिया स्ट्रीट में जो हिन्दुओं के मकान खुले हुए थे उनमें लीगी गुण्डे मस्त होकर घुस गए और दुकानों को लूटने लगे, बिजली के बल्वों को तोड़ २ कर वहां से करण्ट निकाल कर घरों में अग्निकाण्ड का नग्न दृश्य स्थापित करने लगे। लूटके बाद उन घरों और वहां की दुकानों में आग लगा दी गई। घरों में रहने वाले नरनारी, वृद्ध-बालक चनों की भान्ति भून डाले गए। जेवर और कपड़ों से लेकर घर की झाड़ू तक अग्नि देवी की भेंट हो गया' उन घरों में रहनेवाले जो नौकर मजदूर पेशा लोग अपने अपने कामों पर गए हुए थे। जितने उनसे से बच गए थे वे आकर क्या देखते हैं कि सुबह तो अमन चैन छोड़ कर गए थे, घन्टों में क्या का क्या हो गया। वे जब अपने बीबी बच्चों को सड़कों पर पड़े देखते थे, उनकी लाशों को खून से लथ पथ देखते थे, तो वे दिन भर के थके हुए व्यक्ति पछाड़ खाकर गिर पड़ते थे, घरों को लुटा हुआ देखकर उनके

होश ठिकाने नहीं रहते थे, वृद्ध मनुष्यों की मौत की दुर्दशा कितनी घृणास्पद थी।

बहुत लोगों की प्राणाधिक पत्नी और बालक ला पता हैं। जिन बच्चों को फूलों से अधिक कोमल और नाजुक समझा जाता था, आज लीगी गुण्डों ने उनको पैर पर पैर रख कर, चीर कर सड़कों पर पटका हुआ था, गृही-हीन नर-नारी और बालक भूख से तड़प तड़प कर प्राण दे रहे थे और जो शेष थे वे भूख की ज्वाला से छटपटाते हुए द्वार द्वार जाकर आश्रय मांग रहे थे।

मन्दिर स्ट्रीट में लीगी मुस्लिमों ने हाथों में झण्डे लिए प्रवेश किया और जो एक दो दुकानें भूल से खुली रह गई थी पहले तो उसके दुकानदार को झण्डों की लाठियों से खूब पीटा फिर जो उनके साथ में गुण्डे लगे हुए थे उनको दुकान में घुस कर गल्ला (Cash) उठाने के लिए कहा और सारी दुकान आहिस्ता अहिस्ता लूट कर खाली कर दी।

छोटी सी दुकान में एक हिन्दू वृद्धा जिसने मिट्टी के बर्तनों की दुकान की हुई थी उसको निर्दयता से मार कर उसके यहां से मिट्टी के सुन्दर सुन्दर बने हुए मटके और मिट्टी के खिलौने लूट कर ले गए और बदमाश स्वार्थी अन्त में वृद्धा का भी अन्त कर गए।

उसी स्ट्रीट में दो बंगाली बच्चियां और एक मारवाड़ी बच्चा जिनकी आयु लग भग ७-७ और ८-८ वर्ष की होगी। लीगी गुण्डों ने उनकी गुदाओं में छुरे घुसा कर उन निरपराधी बच्चों की हत्याएँ कर डाली। कितना अन्याय किया है (तख्ने नाइत्तफाकियों ने) जो अपने को मुसल्लेईमां या खुदा की

(अशरफ उल मुखल्लूकात में से बताते हैं) निर्दोष व्यक्तियों का इस प्रकार मारा जाना यह सब लीगियों का दोष है। उनके सीधे हमले Direct action ने लाखों नहीं तो हज़ारों को सीधा यमपुर अवश्य पहुँचा दिया।

हरिसन रोड़पर दो नवयुवक और आठ दस कन्यायें कालिज जा रहे थे 'डाइरेक्ट एक्शन' लीग के कार्यकर्त्ताओं और वालंटियरों ने उनको घेर लिया, पहले तो नवयुवतियों को छेड़ा और फिर उनसे अनुचित लाभ उठाने की इच्छा से उनको उठाकर किसी एकान्त स्थान में ले जाने लगे। थोड़ी दूर पर जाने वाले दो नवयुवकों ने यह दुर्दिन दृश्य देखा तो वे उनको बचाने की इच्छा से साहस करके गुण्डों के झुण्ड के सामने आए और उनको छोड़ने के लिए कहा, परन्तु गुण्डों ने उन नवयुवतियों के पास पहुँचने से पहले ही दोनों को लाठियों से मार कर गिरा दिया।

फिर मि० इलासेन के कथनानुसार उन नवयुवतियों की लाशें दो तीन मील दूर उनके कटे हुए उरोजों (छातियों) सहित सड़क पर बुरी तरह पड़ी हुई थीं। चील और कव्वे उनके पास बैठ २ कर लीगियों के दुष्कर्मों पर उनको धिक्कार रहे थे। उनकी ओर देख देख कर कांव २ कर रहे थे।

इन्हीं भागों से लगा हुआ जो केलाबागान स्थान है वहां पर एक परिवार जिसमें दो पुरुष, तीन स्त्रियां, तथा छः बच्चे सहित रहता था। उन पर ११ बजे के करीब छुरेधारी लीगियों तथा उनके अन्य साथियों ने मकान के दरवाजों को तोड़ दिया। ऊपर चढ़ कर उन्होंने सबसे पहले उन पुरुष और स्त्रियों से धन मांगने की चेष्टा की। परन्तु उन्होंने उनको अपनी ओर

आता देख कर कमरों के दरवाजे बन्द कर लिए, दैववश बच्चे जो छतों पर खेलते रह गए थे। गुण्डों ने निर्दयता के साथ बच्चों को पकड़ा और उनके पैरों को चीर कर मकान की चार मंजिलों से उनको पटक कर मार दिया। जब उन स्त्री पुरुषों ने उनके रोने की चीख पुकार सुनी तो उनके हृदय कांप गए और बच्चों को बचाने के लिए उन्होंने कमरों के दरवाजे खोले। गुण्डे इस ताक में थे ही कि कब दरवाजे खुलें। दरवाजे खुलते ही उन्होंने उन पर वार करके उनका अन्त कर दिया। उनका धन माल, कपड़े, बर्तन, जेवर सब कुछ लूट कर ले गए। यह था पाकिस्तान की न्याय और दया का सलूक प्रजा के साथ।

इसके साथ साथ **मछुवा बाजार** स्ट्रीट में से गुजरनेवाले चार परदेशियों को लूट लिया और उनको मार कर सड़क की नालियों में घुसा दिया। कई आदमियों के हाथ पांव धड़ काट कर रोड साइड पर फेंक दिया। पुलिस का एक गारद यह सब कुछ देखते हुए भी राइट-लैफ्ट करती हुई दूसरी ओर मुड़ कर चली गई। पुलिस ने उन मरते हुए व्यक्तियों पर ध्यान ही नहीं दिया।

उसी बाजार में १०-१२ हिन्दू भिखमंगे (फकीर) वहां से अपनी जान बचाने के लिए कहीं दूसरे स्थान पर जा रहे थे बीच में डाइरेक्ट अक्शन 'सीधा हमले' वाले मिल गए। उन फकीरों में से पूछ २ कर मारा कि तुम लोग कौन हो, उन्होंने साहस और निडरता के साथ कहा कि हम हिन्दू हैं। लीगियों और उनके साथियों को क्या देर थी, फौरन ही उनको आराम की नींद सुला दी। जिनके ऐसे नीच विश्वास हैं हम उनको

मुसलमान कहने से भी परहेज करते हैं। फकीरों से भी क्या शत्रुता थी उन निरपराधियों को भी मौत के घाट उतार दिया।

हरिसन रोड़ पर एक माधो भवन नाम की एक बस्ती है। वहां रहनेवालों की संख्या एक हजार होगी-लीगी वालन्टियरों ने अपने हाथों में पैट्रोल से भीगी हुई मसालें ली हुई थी, कितनों के हाथों में बोतलें थी जिनमें पैट्रोल का। हथियारधारी लीगियों ने माधो भवन पर 'सीधा हमला' किया वहां दो सौ स्त्री पुरुष और बच्चों को अपने अत्याचार द्वारा कत्ल किया सौ से उपर व्यक्ति तो हमले के साथ २ ही मर गए और शेष घायल होगए।

उसी स्थान में ई०आई०आर०बी०एम०आर० और ए० बी० आर रेलों के बुकिंग आफिसर है उनके दरवाजों को तोड़ और उनके कैशों को लूटने का प्रयत्न किया लीगी लोगों की ऐसी हरकत देखकर दफ्तर के बहुत से बाबू क्लर्क, चपरासी और अन्य नौकर काम छोड़ कर भाग गए, उसके पड़ौस में जो परिवार रहते थे उन्होंने डर के मारे अपने घरों के दरवाजे बन्द कर लिए।

गुण्डों ने डरे हुए व्यक्तियों पर भी अपने सीधे हमले के वार किए, पत्थर फेंके ईंटें मारी, रास्ते गली कूचों में आने जाने वाले अनजानों को मौत के घाट उतार दिया, बेकसूर उनकी जानें ली।

(सीधा कार्य) Direct action

लीगी मंत्री मंडल की सीधा कार्य करने की योजना ने कलकत्ता में भीषण काण्ड का स्वरूप स्थापित कर दिया। लीगी कार्यकर्ताओं ने अपनी बात कह कर शहर में तबाही मचवादी। उक्त काण्ड का न देखने योग्य दृश्य आंखों के सामने ला दिया, इसमें विशेष बात यह है कि १६ अगस्त को मंत्री-मंडल ने सार्व-जनिक छुट्टी करदी।

इस छुट्टी ने गुण्डों को भी साहसी बना दिया, 'अल्लाह अकबर' 'मुस्लिम लीग जिन्दाबाद' के नारों ने साम्प्रदायिक आग में घी का काम किया। नर संहार की यह आग शीघ्रही उत्तर कलकत्ता की ओर भड़क गई। लीगी हत्यारों ने अपने हाथों में छुरे लेकर बे रहमी के साथ निहत्थों और अनजानों पर अपने हाथ रंगने शुरु कर दिये।

राजा बाजार में दुकानदारों को बे रहमी से पीटा और बहुतों के पेटों में छुरे भोंक दिए। जो लोग उनको बचाने के लिए आए उन निर्दोषियों को भी पकड़ कर खूब पीटा और कइयों का का गला घोंट कर मार दिया, जिन बच्चों के मां-बाप मर गए थे अनाथ बच्चे रो रो कर बेहोश होगए। सड़कों में पड़े बच्चों पर लीगियों ने मोटर और लारी चढ़ादी। जिनसे वे पिचक कर मर गए। उनको उठाने वाले आदमी भी न मिले, बिचारे तड़प २ कर मर गए, यह था डायरेक्ट एक्शन।

कार्नवालिस स्ट्रीट से गुजरते हुए लीगियों ने दुकानों पर रहने वाले जो आदमी कमरों पर थे उन पर ईंटों और पत्थरों से आक्रमण किया गया। जो जीने खुले हुए थे उन पर गिरोह ने जाकर लाठियां बरसाई। बिचारों को सोता हुआ रात को उठा २ कर मारा। अन्याय की सीमा को पार करने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

रिपन कालेज के मुस्लिम विद्यार्थियों ने उसी दिन अपने लीगी दिवस को मनाने की खुशी में लीगी झण्डा फहराने का प्रयत्न किया। इसपर उन्होंने भी गुण्डापन मचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इसका परिणाम यह हुआ कि वह स्थान एक अच्छा खासा युद्धस्थल बन गया। कालेज के अधिकारियों ने कालेज बन्द करने की आज्ञा दे दी और झगड़ालु तथा दंगाबाजी करनेवाले विद्यार्थियों को वहां से निकाल दिया, प्रिन्सिपल ने कई दिन तक कालिज बन्द रहने की घोषणा करदी।

वहां से निकल कर मुस्लिम विद्यार्थियों ने अपना गिरोह फिर से तैयार किया। वह गिरोह विक्टोरिया इन्स्टीट्यूट की ओर गया। जो विशेषतया लड़कियोंका कालिज है। वहां कालिज के दरबान को छुरा भौंक दिया और फिर वे मुस्लिम विद्यार्थी कालिज के अन्दर घुस गये। वहां कालिज की लड़कियों पर आक्रमण किया।

लड़कियों को पकड़कर कइयों के तो उन नीचों ने धर्म नष्ट किए और कई लड़कियों के वक्षस्थल को काट डाला। छिः छिः कैसी घृणास्पद घटना हुई है नीचों ने हिन्दू, सिक्ख और ईसाई लड़कियों की इज्जत खराब की; उनको घर जाने से रोका, उनको मार्गों में कठिनाइयां स्थापित करदी।

कालिज की दो लड़कियां मिस कमला और श्री जसवन्त कोर कालिज से वर वापिस जा रही थीं। कई लीगी गुण्डों ने उन दोनों को सरे बाजार घेर लिया। वे बिचारी लड़कियां अपनी जान बचानेके लिए गलियोंमें घुस गईं। लीगी विद्यार्थियों ने दोनों लड़कियों की चोटी (बोदी) से पकड़ कर खींचा। यहां तक कि वे सड़क पर खींच कर लाई गईं। कंकर और पत्थर पर खींचने से उनके कोमल शरीरों पर खरोंच पड़ गई। हाथों की कोहनियां और पैरों के घुटने छिल गए। उनमें से एक लड़की जो बहुत चिल्लाई तो एक गुण्डे ने उसको घूसों-से मारा वह वही तड़प कर मर गई। दूसरी घायल को अस्पताल में भेजी गई दो घन्टे बाद वह मर गई।

धीरे २ यह गुण्डागिरी धर्मतल्ला और बनर्जी स्ट्रीट की ओर लूटमार और हत्याकाण्ड करती हुई अपने निश्चित स्थानों पर पहुंची। वहां ऐसे हिन्दुओंको जाकर छेड़ा जो बिल्कुल असावधान और बेखबर पड़े थे। अपनी बेखबरी के कारण हिन्दू और सिख लोग उनके शिकार बनने लगे। 'आनन्द बाजार पत्रिका' के कार्यालय में गुण्डों ने घुसकर संपादक पर आक्रमण करना चाहा, परन्तु वह तो बाल बाल बच गया। लेकिन एक क्लर्क और दूसरा एक और कर्मचारी घायल हो गए। एण्टाली-में प्रांतीय कांग्रेस कमेटी का दफ्तर है। वहां कई सदस्यों पर हमला किया—दो को अधिक चोट आई और तीन जान से मार दिए।

इससे आगे 'भारत दैनिक' समाचार पत्र के कार्यालय को पूर्ण रूप से नष्ट कर दिया गया। सबसे अधिक आश्चर्यजनक बात यह है कि जबकि हिन्दुओं को विशेषतः ईद का बकरा

बनाया जा रहा था। धन सम्पति को लीगी गुण्डों द्वारा लूटा गया। हिन्दू स्त्रियों और बच्चों की हत्या निर्दयता के साथ की जा रही थी।

अभिमान और शक्ति में चूर ब्रिटिश संगीनों की छत्रछाया में पल पोषकर तथा बढ़कर होने वाले उन्हीं संगीनों की सहायता से १६ अगस्त की शाम को एक मीटिंग नाजिमुद्दीन तथा सुहरावर्दी ने हिन्दुओं के विरूद्ध जिहाद करने के लिए लीगी मुसलमानों को भड़काया और हिन्दुओं का सर्वनाश करने के लिए उस मीटिंग में जोर दिया।

उसी दंगे के बचे हुए कुछ लोग जो बेलिया घाट में रहते थे। उनके घरों में रात को जाकर मिट्टी का तेल तथा पैट्रोल लेकर आग लगादी घर जलने के साथ २ मनुष्य जो उन घरों में रहते थे, वे भी भस्म होगए।

खिदरपुर के लोग इस दंगे से बचे हुए थे। उनको इसका ख्याल भी नहीं था कि शहर का दंगा उन तक भी पहुँच जायगा। अचानक उन पर भी वह आग बरसाई गई, कपडे लत्तों के साथ धन–जन भी स्वाहा हो गए। बालीगंज में जो मुसलमान लोग रहते थे उन्होंने अपने पास के रहने वाले हिन्दुओं को जितना नुकसान पहुँचा सकते थे, उन्होंने उनको पहुंचाया। उस बस्ती में घर भी कई जला दिए गए। काली घाट में लोगों पर छूरे, बर्छी और लाठियों से आक्रमण किया गया। वहां भी बीसों मकान अग्नि देवी की भेंट चढ गए।

पाशविकता का नंगा नाच

श्री राधानाथ चतुर्वेदी सहायक सम्पादक (लोकमान्य) दैनिक कलकत्ता अपने आंखों देखे संस्मरण अनुभव के रूप में बताते हैं:-कलकत्ता में जो कुछ भी भीषण काण्ड हुआ उसको हम केवल दंगा नहीं गदर कह सकते हैं। उस दिन की रात को वर्षा हुई। इस कारण ट्रामवे की लाईन पर जंग सा लग गया था और उस वक्त के दृश्य से ऐसा प्रतीत होता था जैसे वर्षों से ट्राम चली ही नहीं थी। दंगाइयों ने मार काट शुरु करदी। वे लोग सेन्ट्रल एवन्यू, केलावगान, और चोर बाग में चक्कर लगाते, आक्रमण करते हुए हरिसन रोड के विशाल राज-पथ पर पहुंचे-वहां छः निरपराधियों की लाशें रक्त से लथपथ मार कर गिरा दीं। सामने के रास्ते पर एक और व्यक्ति जो अपने को ५०० मील दूर से आया हुआ परदेशी बता रहा था, और कह रहा था कि मैं बाल बच्चेदार हूँ और मेरे साथ दस आदमी खाने वाले हैं। ईश्वर के वास्ते मुझे छोड़ दो मेरे स्त्री बच्चे बर्बाद हो जांयगे परन्तु निर्दयियों ने उसको लाठी से मार गिराया। गाड़ियों में लदे आगे पीछे ५ सैनिक तथा सशस्त्र पुलिस की संरक्षता में लीग के ७०-७५ संमर्थक सवार थे। उनके पास लारी में ईंटों का ढेर, हाथों में लाठियां और छुरे थे। जिनको घर में बैठे हिन्दुओं को डराने के लिए हिला हिला

कर दिखला रहे थे, और लारियों के द्वारा जो घर पास में पड़ जाता था उसमें ईंटों और पत्थरों की बौछार करते जाते थे। उनके नारे इस प्रकार की ध्वनि से मिश्रित थे—"तुम बंगाल में रहना चाहते हो तो हिन्दुओ! हमसे मिलकर रहो, तुम्हें शर्म नहीं आती! हम खून की नदियां बहा देंगे।"

हरिसन रोड पर दूकानें लुट रहीं थी और पुलिस की लारियां दनादन सामने से दृश्य देखती हुई निकल जाती थीं। उनके इन लक्षणों से मालूम पड़ता था कि इस अराजकता निवारण का उनके कर्त्तव्यों में कोई स्थान नहीं था। दैनिक लोकमान्य के कार्यालय के सामने सड़क पर ढेरों फटे हुए कागज और कार्डवार्ड (पट्ठे) पड़े हुए थे। पास में हरएक अध खुली दुकान को चार पुलिस के कान्स्टेबिल लुटते हुए देख रहे थे। परन्तु वे उन लोगों से उफ़ तक नहीं कह रहे थे। अन्य दुकानों में से तेल, साबुन, गंजी इत्यादि लूट कर मोटरों में भरी जा रही थीं। दूसरी ओर मेवे फलों पर भी नम्बर लग चुका था।

बड़ा बाजार पुलिस स्टेशन से कुछ दूर सामने की गली में एक रंगरेज की दुकान में से रंगे हुए कपड़े जो दूसरों के धुलने के लिए आए थे, लूटे जा रहे थे।

यह एक आश्चर्य की बात है कि उस दिन मुसलमानों की कोई दुकान सूत पट्टी, क्रास स्ट्रीट तथा खडोरा पट्टी आदि बाजार में नहीं खुली हुई थी। शाम को पांच बजे के करीब हवड़ा पुल की ओर से मुसलमानों का बड़ा जलूस आता दिखाई दिया। इस जलूस को देखकर लोगों में भगदड़ मच गई थी। लीगी जलूसधारियों ने हवड़ा पुल से आते जाते हिन्दुओं को उठाकर पुल की २०० फीट की ऊंचाई से गंगाजी में फेंक रहे

थे। बच्चे और स्त्रियों को बेरहमी से पानी में फेंक रहे थे! उस समय का दृश्य कैसा भयावना था कि ६-७ हिन्दुओं के बच्चों को गेंद की तरह जल में फेंक रहे थे और वे जल के धरातल पर जाकर एक डुबकी के साथ ही जल में विलीन हो जाते थे। इतने पर भी पुलिस ने कोई ध्यान न दिया।

इसके पश्चात् पत्थर वर्षा प्रारम्भ हुई—जिससे बिचारे राहगीर इधर उधर जान बचाने के लिए भागने लगे। कुछ घरों में घुस गए। सत्यनारायण पार्क के सामने गुजरते हुए देखा गया कि बारह लाशें दिखलाई पड़ रही थीं, जिनमें ४ स्त्रियों की थीं। उनमें से किसी के सिर की खील २ होगई थी, किसी के पेट में छुरा भोंक दिया गया था, और किसी का गला घोंट कर दम निकाल दिया गया था। कलाकार स्ट्रीट पर भी दस लाशें पड़ी उठाने वालों की प्रतीक्षा कर रही थीं! लोग अपने अपने घरों में खिड़कियों और चिकों में से बीभत्स दृश्य देख कर विस्मित हो रहे थे। कलाकार स्ट्रीट की विवेकानन्द रोड़ से लेकर गिरीश पार्क तक बिल्कुल सन्नाटा छाया हुआ था। लीगियों के गिरोह और उनकी लारियां बाजारों का चक्कर लगा रही थी—जो इक्का-दुक्का सड़क पर चलता फिरता नजर आता उसे मारकर लारी में डाल लेते या सड़क के किनारे डाल दिया जाता था। आगे गिरीश पार्क की अन्तिम स्थिति पर लाशों से स्ट्रीट भरी पड़ी थीं। लीगी अन्यायी लाशों को कुचलते हुए उन पर पांव रखकर जा रहे थे! बहुत घमण्डी लोग लाशों को ठोकर मारकर जा रहे थे।

उनमें दो लाशें जो अभी सिसक रही थीं, यदि उनको फ़स्ट-एड दी जाती तो शायद उनकी जानें बच जातीं। उस लीगी

समूह में से एक आदमी ने अपनी लाठी से उन दोनों की कपाल क्रिया कर दी। एक उनमें से "हाय पानी" कहते कहते तड़प कर मर गया। मानव, मानव के प्रति कितना शुष्क, निर्दयी और अत्याचारी है। जीवन के प्रति अन्यायी लोगों की कैसी धारणा है, मरते मरते व्यक्तियों के जीवन बचाने के बदले उनके जीवनों को शान्ति के स्थान पर कष्टमय बना दिया।

आग लूट-मार व कत्ले आम

यह हमें कहना पडेगा मानव निजी स्वार्थ भावनाएं लेकर मानव न रहकर दानव बन गया है, अर्थात् दूसरे शब्दों में यूं कहो कि मनुष्य से पशु बन गया है। इस मानवता की जघन्य संस्कृति ने अनेकों मनुष्यों को अत्याचार, बलात्कार और भीषणता का पाठ पढ़ा दिया है। इसका जीता जागता उदाहरण लीगियों ने कलकत्ता में जो हत्याकाण्ड किया है, वह है। यदि लोग वे चाहते तो रोक सकते थे, परन्तु जब वे रोकना चाहते तब ना!

हत्याओं की गिनती और लूट-पाट का ठीक ठीक अनुमान लगाना असम्भव है। पार्क सर्कस जिसको हम पूर्णरूप से मुसलमानों की बस्ती कहते हैं, उस बस्ती में जितने हिन्दू रहते हैं उनके घरों में घुस २ कर मारकाट की और धन को भी बेरहमी से छुरों से घायल करके मनुष्यों से छीना। इसी प्रकार लेविंग्टन स्ट्रीट में गुण्डों ने घरों में घुसकर जब कमरों और पाटियों के दरवाजे न खुले तो उनमें बन्द आदमियों पर मिट्टी का तेल डालकर आग लगा दी। छोटे २ बच्चे, स्त्रियां झुलस गए, भुनकर राख होगए। चिल्ला २ कर तड़प २ कर स्वर्ग सिधार गए।

चितरंजन एवेन्यू में आठ मकानों को बाहर से ताले लगा दिए और पीछे की दीवारों से लीगी गुण्डे चढ़कर अकेली

औरतों को छुरों से घायल किया और कुछ नवयुवति कन्याओं की छातियां काट डालीं।

उन स्त्रियों में कई गर्भवती थीं, लाठी की ठोक मार और पैरों की ठोकरों से उनके गर्भ गिरा दिए। कितना नफरत के क़ाबिल पैशाचिक सम ताण्डव है। धन की हानि का सब्र किया जा सकता है, परन्तु जिनकी आशाओं व जीवन का एक भाग समाप्त हो जाता है उनका इस प्रकार भ्रूण किया जाय, यह किसी भी जाति के लिये घृणास्पद है।

जब उन स्त्रियों के पति, चाचा, ताऊ, पिता, भाई आदि अपने २ कामों दफ्तरों, कारखानों से वापिस आए और उन्होंने बाहर से मकानों के कुण्डे (संकलें) बन्द देखा पहले तो वे लोग घबराये और फिर जब अपने २ मकानों पर पहुँचे तो उनके सांस ऊपर के ऊपर और नीचे के नीचे रह गये। उनके बदन से काटो तो खून नहीं, वे अनुभव कर रहे थे कि सुबह तो हम अपने बाल-बच्चों के साथ अच्छी तरह हंसबोल कर गए ही थे। पीछे से ईश्वर की क्या माया फिर गई। वे लोग धाड़ मार २ कर रोने लगे। दीवारों से सिर फोड़ने लगे। कई उनमें से बेहोश होगये, पागल होकर घूमने लगे, भूख के मारे दम निकलने लगे, घर में खाने को दाना भी न रहा, भूख प्यास से बेचैन हो गए। हाय! हाय!! करके रोने लगे, अब उनका दुनियां में क्या रह गया।

रूसा रोड़ पर लाशें ही लाशें पड़ी दिखाई दे रही थी, रक्त बह बह कर नालियों की ओर जारहा था, खून की नदियां नहीं तो नाले जरूर बह रहे थे। तुतलाते हुए कोमल बच्चे और कमर झुके निर्दोष बुढ़ों की कुचली हुई लाशें नङ्गी स्त्रियों के
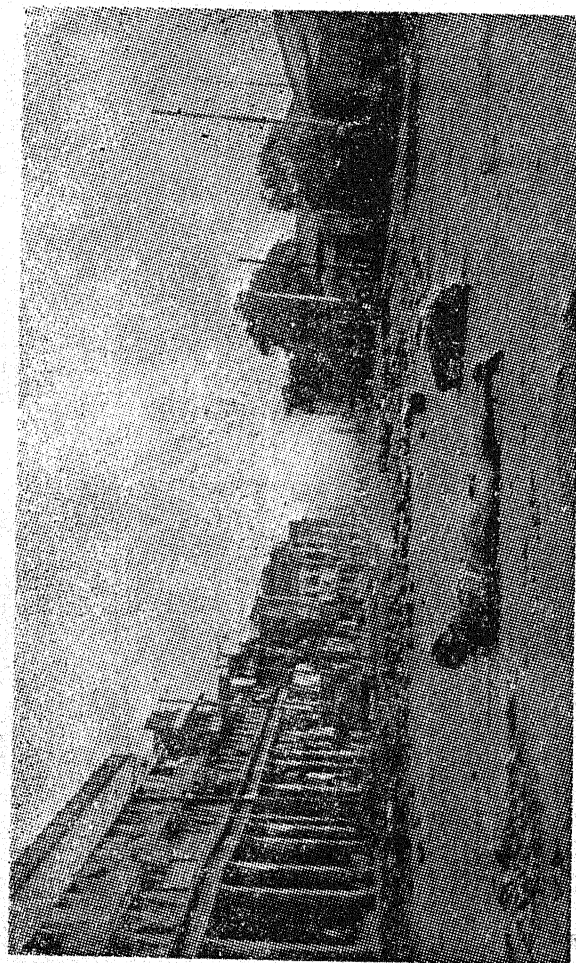
बंगाल में गुण्डों के अत्याचारों का रोमांचकारी दृश्य—अग्निकाण्ड किये जाने के कारण बाजार और मकान श्मशान नजर आ रहे हैं—मृतक मानवों के नग्न चित्र आंखों के सामने हैं। अगस्त सन् १९४६।
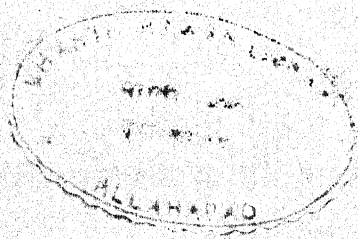
नंगे शरीर लाशों के रूप में सड़क पर बिछी हुई पड़ी थीं। कोई उनको उठाकर ठिकाने लगाने तक को मौजूद नहीं था। हर तरफ लीगियों की क़तारें, लाइनें और टोलियां सशस्त्र घूम रही थीं।

सड़क की दूसरी ओर लीगियों के गिरोह ने अपने हाथों में लम्बे २ बांस लिए हुए थे। उन बांसों के सिरों (किनारों) पर पैट्रोल और मिट्टी के तेल से भीगा हुआ कपड़ा लपेटा हुआ था। दियासलाई से उस बांसों के कपड़ों को जला कर ऊपर के कमरों को आग लगा रहे थे। कई स्थानों पर मकानों में जब आग लगाई गई तो घर में रहने वाले स्त्री, पुरुष बच्चे आदि को बाहर नहीं निकलने दिया गया—बाहर दरवाजों पर लाठी और छुरे लेकर खड़े हो गए। आप ही बताइए कि मार से तो भूत भी नाचता है। वे मकानों में बन्द व्यक्ति जीवित जलकर भस्म हो गए। कई आदमियों की लाशें सड़ने लगीं।

गारपा यूनिवर्सिटी होस्टल में जहां हिन्दू विद्यार्थी विशेषतः रहते हैं वहां लीगी नमक हराम घुस गए—वहां ६ विद्यार्थियों-की तो बोटी बोटी उड़ादी और बीसों को इस बुरी तरह घायल किया कि उनमें से १० तो जीवित बचने पर भी मोह-ताज ही रहेंगे। दो विद्यार्थियों की आंखों में लोहे की सलाखें घुसादीं। चारों में दो के हाथ उड़ा दिए और दो के पांव बाकी चारों को चलने के काबिल नहीं छोड़ा।

मिर्जापुर स्ट्रीट में कई परिवार तो घायल होने पर भी सुरक्षित रहे परन्तु एक और परिवार जिसमें १७ व्यक्ति रहते थे। उसको बिल्कुल मिट्टी में मिला दिया।

भवानीपुर में कई लाशें तो जमीन पर पड़ी पाई गई।

चार लाशें वृक्षों में रस्से बान्ध कर उनके गलों में फांसी लगी हुई मिली। उनमें से दो स्त्रियों को पैर बान्ध कर लटकाया हुआ था।

बालीगंज की एक पूरी बस्ती जो हिन्दुओं से ही निवसित है उसको जलाकर खाक कर दिया। जिन भी प्रत्यक्षदर्शियों ने इस कांड को देखा है वे कहने से मजबूर हैं। बड़ा भयंकर दृश्य था। वहां अन्याय और जुल्म की सीमा पार हो गई।

भारतीय कम्यूनिस्ट पत्रों के सम्वाददाता श्रीयुत निखिल चक्रवर्त्ती जिन्होंने काण्ड को देखा है वे अपने विवरण में लिखते हैं—जो नागरिक बिल्कुल शान्त और सरल थे उनको ही लीगी गिरोह ने रक्तरंजित किया। उनके सामने स्त्रियों की बेइज्जती की गई। जो लोग उनको बचाने के लिए पहुँचे उनको भी मार कर भगा दिया या जान से मार दिया।

गिरया घाट रोड़ पर कई लोग लाठियों और लोहेकी सलाखों से रास्ता चलने वाले राहगीरों पर टूट कर हमला करते थे। और उनको वहीं खेत रखते थे। उस समय के दृश्यसे ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे रात को चूहेदानोंमें बन्द चूहों को सवेरे पीट पीट कर मार डाला जाता है। मानवता ने आंख बन्द करली थी। सभ्यता और संकृति मानो इन लोगों में अभी तक आई ही नहीं थी। मनुष्य-मनुष्य का भेड़िये की भांति खून का प्यासा बन गया था।

घायल मनुष्यों की फ़स्टएन्ड का कोई प्रबन्ध नहीं था। पुलिस और डाक्टर दोनों ने मिलकर सलाह की थी कि इन लोगों को इसी प्रकार मरने दो। मरने वालों को बचाना और उनकी रक्षा करना इन लोगों का धर्म और कर्तव्य नहीं। यह मुसलिम लीग द्वारा 'खुली लड़ाई' का नग्न नाच।

कलकत्ता के श्री ओमप्रकाश, प्रत्यक्षदर्शी ने लाहौर जाकर वहां के पत्र सम्वाददाता को बताया कि हिन्दुओं की दुकानें जो १६ अगस्त को खुली हुई थी उनको लीगी हरकतियों ने जबरदस्ती बन्द करा दिया।

सुबह सात बजे ही लीगियों का एक गिरोह अल्लाह-ओ-अकबर, 'या अली' और 'मुस्लीम लीग जिन्दाबाद' 'खून से पाकिस्तान ले के रहेंगे' के नारे लगाते हुए, टोलियों की टोलियां हिन्दुओं के मुहल्लों में घूमती फिर रही थी। उन्होंने स्वयं अपनी आंखों से देखा कि मुस्लमान हाथों में तलवार, छुरे और लाठियां लिए जोश के साथ बढ़े चले जा रहे थे। एक मोची जो अपनी दुकान में ही रहता था उसकी दुकान लूट ली और उसके बाल-बच्चों का वध कर दिया। उसकी स्त्री एक चारपाई के पीछे अपने प्राण बचाने के लिए छिप गई थी, पर जालिमों ने उसको चारपाई के पीछे से सिर के बालों द्वारा खींच कर मार दिया। उसी बाजार में हिन्दुओं की दुकानें खुली हुई थी। उसमें लाखों रुपए का माल था। उनको लूट लिया और उनमें आग लगा दी।

उसी दिन १२ बजे पुलिस उस टोली के पास आई और स्वयं ही दृश्य को देखने लगी। वजाए इसके कि वह उनकी रक्षा करे। बल्कि ऐसा करने के लिए उनको शै दे रही थीं। मुस्लमान अपनी अनुचित प्रगति के साथ हिन्दुओं की ओर बढ़ते चले आ रहे थे। यह अन्याय की बात नहीं तो क्या है? कि पुलिस वालों ने हिन्दुओं पर अत्याचार करने वाले मुसलमानों को रोका तक नहीं। अपितु उनको सहायता दी। प्रत्यक्षदर्शी ने स्वयं एक पास में खड़े पुलिस सार्जेन्ट से कहा कि

हम कष्ट में हैं हमारी सहायता करो तो उस समय उसने मुंह चिड़ा कर ताने के स्वर में उत्तर दिया 'मौलाना आजाद' और 'शरतचन्द्र बोस' के पास जाओ। तुमको अब स्वतन्त्रता मिल चुकी है, हम इसके लिए कुछ नहीं कर सकते।"

इसी प्रकार दिन भर हिन्दुओं पर न देखने योग्य आक्रमण होते रहे। शाम से कर्फ्यू आर्डर लग चुका था फिर भी लीगी टोलियों का गुजरना उसी प्रकार था। शहर में चारों ओर आग ही आग लगी दिखाई देती थी। इसके अतिरिक्त एक और घृणास्पद घटना देखी गई कि बाजार में एक ऐसी लारी घूम रही थी जिसमें अस्त्र-शस्त्र भरे थे और उसमें बैठे व्यक्ति मुसलमानों को शस्त्र बांट रही थी। उस समय पुलिस के पहरे प्रत्येक मोर्चे पर मोजूद थे। परन्तु पुलिस इन हरकतियों को नही रोक रही थी। जब हमारे सिक्ख भाईयों ने हिन्दुओं की ऐसी बुरी दशा देखी तो उन वीरों से यह सहन न हो सका और वे हिन्दुओं की मदद के लिए आना चाहते थे। पुलिस ने उनको बीच में ही रोक दिया और उत्तर में कहा–कि यह हिन्दू-मुसलमानों में, सिखों में नहीं। जब तुम्हारे गुरुद्वारे पर आक्रमण होगा तब हम तुम्हारी रक्षा करेंगे।"

हावड़ा के पुल पर सैकड़ों आदमियों की लाशें पड़ी थी उनमें अधिक संख्या अनजान और परदेशियों की थी। बहुतेरों को मारकर गंगा में बहा दिया गया था। शहर में मुर्दों की इतनी घनी संख्या थी कि स्थान स्थान पर ढेर का ढेर लगा हुआ था। उनकी अन्त्येष्टि की बात तो दूर की है। उनको केवल उठाने वाले तक भी नहीं थे। वास्तव में देखा जाए तो कलकत्ता शहर एक बूचड़खाना बना हुआ था। जहां

देखो वहां लाश ही लाश थी। कही कोई लाश सिसक रही थी, कोई दम तोड़ रही थी, कोई प्यास के कारण अपने मुख पर हाथ रखकर पानी पीने का संकेत करके समाप्त हो गया है। यदि कोई हिन्दू उनकी सहायता या फ़स्ट-एड के लिए जाना चाहता तो उनको पुलिस डंडे मार कर भगा देती थी। किसी भी व्यक्ति को लाशों के पास नहीं जाने दिया जाता था। एक स्त्री जिसका पति आततायियों द्वारा मार दिया गया था। वह उसकी लाश देखना चाहती थी ताकि पहिचान कर उसकी क्रिया कर्म इत्यादि का प्रबन्ध करे। पुलिसने उसको पहले तो धमकियां दीं। फिर उसको बल पूर्वक नरमेध से निकाल दिया, आगे लीगियों की टोली ने उसको घेर लिया। और उसका काम तमाम कर दिया। वह मरने से पहले चिल्लाती रही—"जालिमों, मेरे दो बच्चे बहुत छोटे २ हैं वह बिना मां-बाप के विलख २ मर जायेंगे, मुझे छोड़ दो। ईश्वर के लिए मुझे जाने दो।" परन्तु निर्दइयों ने जरा दया नहीं की।

'अमृत बाजार पत्रिका' के एक प्रत्यक्षदर्शी ने कलकत्ता की घटनाओं का इस प्रकार समर्थन किया है:—लीगियों ने हिन्दुओं के बदन छुरों और बर्छियों द्वारा फाड़ डाले थे, स्त्रियों के स्तन काट डाले थे, और बच्चों के टुकड़े-टुकड़े कर डाले थे। कई बच्चों को पैर पर पैर रखकर चीरता हुआ देखा गया।

पत्र के संवाददाता द्वारा पता लगा है कि एक फौजी अफसर ने अलीपुर के अस्पताल में जाकर देखा कि २५-३० स्त्रियां और बच्चे ऐसे देखे गए जिनके क्रमशः स्तन और गले काटे गए थे। बहुत बच्चों के सर धड़ से जुदा पड़े थे और बहुतों के टुकड़े २ कर दिए गए थे। अफसर ने अपने शब्दों में कहा पशुता का ऐसा नग्न नृत्य मैंने पहले कभी नहीं देखा था।

बहुत सी लाशों को नगर की सड़कों और गलियों के अतिरिक्त हुगली नदी तथा उपनगर नहरों में भी देखा गया। अस्पतालों में विचित्र रूप में विकृत लाशें और घायल व्यक्ति (स्त्री पुरुष) तथा बच्चे देखे गए। उनमें बहुत सी ऐसी लाशें थीं। किसी के धड़ नहीं था तो किसी का सर नदारद था, दूसरी का कोई अंग गायब था। उनके शरीरों पर छुरियों, बर्छियों और लाठियों के स्पष्ट चिन्ह दिखाई पड़ रहे थे। एक अस्पताल ऐसा देखा गया कि जहां घायल आदमियों को एक दूसरे पर चुन कर छत तक एक लाइन सी लगादी गई थी। ऊँचे ढेर में बहुत तो अधमरे व्यक्ति भी असावधानी के कारण मर गए तथा इनकी चिकित्सा समय पर नहीं हो सकी, २४ घंटों लाश नगर तथा नगर के अस्पतालों में पड़े रहने के कारण बदबू और दुर्गन्ध से शहर सड़ा जा रहा था। इस दुर्गन्धि से बहुत व्यक्ति बेहोश होगए और कई उनमें से स्वर्ग सिधार गए।

सैन्ट्रल ऐवेन्यू की पुलिस चौकी जहां पर पुलिस की लारी लाशों को उठा उठा कर इकट्ठा कर रही थी। वहां भी मुर्दा स्त्री पुरुषों का ढेर लगा हुआ था। घायल लाशों में से खून बह बह कर सड़कों पर आ रहा था और फिर वह रक्त नालियों में से बह कर जा रहा था। कई अर्ध व्यक्तियों ने अपने बचने की प्रार्थना पुलिस वालों से की तो पुलिस वालों ने डांट और धमका कर चुप कर दिया। कई घायलों को डंडा मारकर मौत के हवाले कर दिया। यह था भीषण नरमेध दृश्य।

———
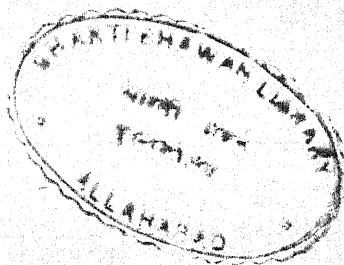
दंगे की प्रथम भयावनी कालरात्रि

चारों ओर लीगियों का गुण्डाशाही दल चक्कर लगाता हुआ घूम रहा था। शैतान उनके दिमाग पर उत्तेजना के बादल घेर घेर कर ला रहा था। तामसी भोजन खाते खाते उनके मस्तिष्क लूट और गुण्डागिरी से परिपूर्ण थे। जोश के मारे उनके हृदय बल्लियों उछल रहे थे। जहां पर हिन्दू वातावरण दिखाई देता था, उनके रक्त खौलकर उनके सशस्त्र अंगों को खुजला देते थे।

शाम के ७ बजे रात को उदास और अशुभ अंधियारी चादर ने संघर्ष शांत कलकत्ता के प्रथम दिन ने अभिनय का पटाक्षेप किया। रात में अशांति चरम सीमा पर आगई थी। मालूम पड़ता था कि आज से यम के यहां के पट खुल गए हैं। वैसे कहने को कर्फ्यू आर्डर था लेकिन हजारों आदमियों की भीड़ मछुआ बाजार से निकल कर करनपुत रोड के चौराहे पर खड़ी थी और बांगल बिल्डिंग जैसी विशाल इमारतों में तेल और पैट्रौल छिड़क २ कर आग लगा रही थी। चारों ओर धुंआधार फैल रहा था। धुंए के कारण हाथ को हाथ नहीं सुझाई दे रहा था। परन्तु उनमें से कुछ गुण्डों के हाथों में मसालें थीं और कुछ अपने अपने हाथों में बैटरी (टौर्च) लिए हुए थे। हिन्दू लोग डरकर अपने घरों में घुसकर घरों के दरवाजे बन्द कर रहे थे और मुसलमान 'अल्लाह-ओ-अकबर' के नारे

लगा रहे थे। नारों से आकाश गूंज रहा था। कुछ देर बाद जबकि वह इमारतें जल कर राख हो गयीं तो लारियों में लदी हुई पुलिस और सेना उस स्थान पर आई। परन्तु उस समय तक उस भीड़ या लीगी दल के लोग अपने 'सीधे हमले' के अनुसार इधर उधर तित्तर बित्तर हो गए।

कुछ लोग डर कर स्ट्रीटों, गलियों में भाग गए। कुछ निडरता से बाजार में आने जाने लगे। पुलिस ने उनमें से किसी अत्याचारी या आग लगाने वाले व्यक्ति को नहीं पकड़ा न उन पर कोई दोष ही लगाया।

एक घंटे के बाद यह खबर मिली कि मछुआ बाजार में मुसलमानों की एक भीड़ ने जो उधर से पुलिस के आते ही इधर उधर हो गई थी। उसी ने जकरिया स्ट्रीट के सिख गुरुद्वारे में आग लगादी है। यह जनश्रुति वड़वाग्नि की भांति फैल गई। और चन्द ही घंटों में दोसौ-अढ़ाईसौ सिक्ख अपने २ हथियार संभाले जलूस के रूप में जान लगे। आप जानते हैं कि भारत में सिख ही एक ऐसी जिन्दादिल कौम है जो हिन्दुओं को जिन्दा दिल रख सकती है। वे लोग अपने दल बल सहित जकरिया स्ट्रीट में जाने को प्रस्तुत हुए। आगे पुलिस मुसलमानों के स्थानों-को सुरक्षित रखने के लिए खड़ी हुई थी। उसने तत्काल ही उनको रोकने के लिए पाबन्दी लगा दी और कहा आगे मत जाओ, कर्फ्यू आर्डर है। सिखों ने कहा हम किसी से झगड़ा करने नहीं जा रहे हैं हम तो अपने गुरुद्वारेकी रक्षा के लिए जा रहे हैं। पुलिस सार्जेन्ट के एक दल ने आरा अफीम चौरास्ते के सामने उनसे हरिसन रोड पर मुसलमान क्षेत्रों की रक्षा के दृष्टिकोण से मोर्चा लिया, और पुलिस ने सिखों को बहकाया कि "तुम लोग

जाओ। यह लड़ाई हिन्दू-मुस्लिमों की है, तुम क्यों खाहमखाह बीच में पड़ते हो।" परन्तु सिखों ने अपनी तलवारों और किरपाणों को उठाकर कहा--"हिन्दू और सिख दो नहीं, एक हैं! एक मां की औलाद हैं।"

परन्तु जब पुलिस के सार्जेण्टो ने उनको लौट जाने पर विवश किया तो लौट जाना पड़ा। क्योंकि उनको यह कह दिया गया था कि वह एक अफवाह है। वस्तुतः गुरुद्वारा जलाने की एक अफवाह नहीं थी। गुरुद्वारे पर बहुत मुसलमान चढ़ आए थे और उन्होंने गुरुद्वारे में जलती हुई लकड़ियां फेंकी थी और जो दुकानें गुरुद्वारे के नीचे थीं उनमें पत्थर आदि भी फेंके थे।

कुछ भी हो पुलिस को लीगी गुण्डों की इतनी हिमायत नहीं लेनी चाहिए थी। जब वह हिन्दू मुस्लमानों की लड़ाई कराते थे। तो वे बीच में अपनी चारपाई क्यों तुड़वाते थे। यह सब कारण था लीगी मंत्री मंडल होने का।

स्त्रियों और बच्चों की हत्या

उसी दिन के लीगी दल द्वारा किए गए उपद्रवों में छोटे बालकों और बालिकाओं की किस प्रकार निर्दयता और निर्भयता से हत्या की गई। यदि उसको वर्णन किया जाए तो शरीर के रोएँ खडे हो जाते हैं। उस दिन की कुछ घटनाओं का विवरण इस प्रकार है। लीगी लोग अपने सीधे हमले करते जा रहे थे एक घर में जा घुसे तो वहां सब घर वाले तो कहीं सुरक्षित स्थानों में छिपे हुए थे। परन्तु एक तीन वर्ष का बालक बाहर आंगन में रह गया था। लीगी अपने जुल्म के करने में लगे हुए थे, उन्होंने उस बालक की हत्या करके उसको दरवाजे पर कीलों से गाड़ दिया और बाहर से घर को बन्द करके चल दिए।

इसी प्रकार एक बालिका जो वेष भूषा से सिक्ख मालूम पड़ती थी, उसके सिर पर केश, हाथ में गुरु का कड़ा, सिलवार पहने हुए थी। उसको भाले से बींध कर उसे भाले में लटकाए हुए उसका सारे बाजार में जलूस निकाला गया। जिसके साथ लीगी झण्डे फहरा रहे थे और मुस्लिम लीग जिन्दाबाद के नारे लगाते जा रहे थे। इसमें खूबी यह है कि उन हत्याओं को पुलिस तमाशबीन बन कर देख रही थी। इसमें पुलिस का कसूर नहीं है तो किसका है ?

एक और हृदय विदारक घटना है कि एक १८ वर्षीय नवयुवति जिसको घर से जीवित उठा लाए और चाकूओं से उसकी

छातियां काटी, वह रोती और चिल्लाती रही, किसी ने भी उस पर दया नहीं की। जब वह मर गई तो उसको सड़क पर डाल दिया। यह बलात्कार किया इन लीगियों ने। जिस पर किस साधारण हृदयी मनुष्यों को घृणा और रोष नहीं आवेगा! हिन्दू जाति कब तक इन अत्याचारों और जुल्मों को सहती रहेगी!

कई स्थानों पर उत्तेजित भीड़ ने मकानों पर आग लगाते, आक्रमण करते हुए बच्चों को दूसरी और तीसरी मंजिलों से नीचे पटक कर तड़पाकर मार दिया। एक बच्चे को उसकी मां से दूध पीते २ छीन कर उसकी मां के सामने ही दोनों हाथों से उसके पैर पकड़ कर पत्थर पर पटक कर मार दिया। उसकी मां ने बिलख २ कर उसी स्थान पर अपनी जान दे दी।

उत्तरी कलकत्ता में एक स्थान पर भीड़ के एक दस्ते ने कालिज के छात्रावास पर सशस्त्र हमला किया। उस हमले के कारण छात्रावास के दरवाजे तोड़ दिए गए। फिर लीगी दल अन्दर जा घुसा और वहां से दो जान बचाते हुए छात्रों को पकड़ कर कुल्हाडों से काट डाला। बाहर खडे हुए लीगियों ने पत्थर बरसाने शुरु कर दिये। वहां से दो लाशें खींचकर बाहर ले जाई गई। दो छात्रों के गालों में छुरे पार कर दिए और चारों की गर्दन काटकर उनके सिर छात्रावास की छतों पर डाल दिये गये। वहां पर भी पुलिस की एक लारी आई और हत्याकाण्ड देखती हुई गुजर गई।

बड़ा बाजार में चीनी दरवाजे में एक परिवार एकान्त में निवास करता था। वहां दस मुसलमानों का एक गिरोह जीने पर चढ़ गया और खाना खाते हुए स्त्री, पुरुष और बच्चे को गला

घोंट २ कर मार दिया। पुरुष डरकर ऊपर के कमरे में भाग गया। उसके पीछे पीछे दो गुण्डे भागे और उसको कटहरे से नीचे धक्का दे दिया वह नीचे आते ही मर गया ।।बाकी गुण्डों ने उसकी स्त्री से बलात्कार किया ! यह था बीभत्स का प्रलयंकारी दृश्य, जिसको देखकर आंखों में खून उतर आता है। शरीर में रोंगटे खड़े हो जाते हैं। लौटते हुए गिरोह ने घर का सारा माल लूट लिया। जो खाने का सामान रखा था वह उन्होंने पेट भर कर खाया।

एक अंग्रेज प्रत्यक्षदर्शी ने बताया है कि एक परिवार में कई व्यक्ति थे, जिनमें एक बुढ़िया जो हिल-जुल भी नहीं सकती थी। दंगाइयों ने उसको एक खम्बे से बांध दिया और रस्सों तथा लकड़ियों से खूब पीटा वह बेहोश हो गई। उसका पेशाब पाखाना आदि भी निकल गया। फिर भी गुण्डे वहां पर ही डटे रहे। उसको फिर होश सा आया तो गुण्डों ने पूछा—बुढ़िया, बता तेरा धन-माल कहां रखा है ? बुढ़िया अभी पूरी होश में नहीं आई थी वह इतनी पीटी गई थी कि बोल भी नहीं सकती थी। लीगी गुण्डों ने उसको फिर पीटना शुरू किया तो भय के कारण उसने धन-माल का कमरा ही नहीं बल्कि उसकी चाबियां (कुंजिया) भी देदी। जिस कमरे में रुपया जेवर रखा था—वहां पर ही बुढ़िया के लड़के और लड़कियां भी छिपे हुए थे।

पहले उन्होंने बुढ़िया के लड़कों को उसके सामने ही कत्ल कर दिया। बुढ़िया बहुत रोई चिल्लाई परन्तु उसकी सुनता कौन था। फिर उसकी लड़कियों के साथ गुण्डों ने व्यभिचार किया और अन्त में उनको मार डाला ! उन स्वार्थी नारकीय कुत्तों ने इतना ही नहीं स्त्रियों, बालिकाओं, छात्राओं की तथा अन्य

छोटी २ बालिकाओं की केवल हत्याएं ही नहीं की अपितु महिलाओं अबोध, बालिकाओं, के साथ उन्होंने बलात्कार भी किया। तत्पश्चात उनके अंग प्रत्यंग काटकर इधर उधर सड़कों पर फेंक दिए, घरों में फेंक दिए। कुछ को पैरों के नीचे कुचल दिया।

एक सात वर्षीय लड़की के साथ इस प्रकार बलात्कार किया गया कि वह बेहोश होगई और उसकी योनि क्षत-विक्षत होगई। उसको हिन्दुओं की सहायता से मोटर कार में डालकर अस्पताल पहुंचाया गया। वहां डाक्टरों ने उसकी कोई परवाह नहीं की। लड़की ने तड़प कर प्राण दे दिए।

एक ऐंग्लो इण्डियन महिला जिसको मुसलमान गुण्डों न बाजार में घेर लिया था। उसने पुलिस स्टेशन पर हिन्दुओं की सहायता से जाकर यह बयान दिया। किस प्रकार एक १५ मुस्लिम के गिरोह ने एक के बाद एक ने निरन्तर उसके साथ बलात्कार किया। उसको अचेतनावस्था में छोड़कर वह समूह चलता बना। हिन्दू सहायक समिति की सहायता से उसको अस्पताल पहुंचाया। इसके बारे में डाक्टरों की राय है कि उस महिला का इतना अधिक खून गया है कि उसका जीवित रहना असंभव था। महिला चीख २ कर २४ घण्टे के बाद मर गई। यह था मि० जिन्ना की "सीधी कारवाई" का नग्न चित्र, धिक्कार है ऐसी मानवता पर।

मकानों के सामने, खिड़कियों में देखने से पता चला कि लाशों के ढेर पड़े हैं। बीभत्स और खौफनाक नजारा था। सड़क क्षत-विक्षत शरीरों से पटी पड़ी हैं। प्रति ५० गज के फासले पर एक लाश पड़ी आंखें ढेर रही है। लुटेरे अपने कामों में लीन हैं। परन्तु अंधी पुलिस अपना हाथ साफ करने

से बाज नहीं आ रही थी। एक मनुष्य जो पहले ही धराशायी था उसके सिर को लोहे को छड़ों से तोड़ा जा रहा है अविवेकी एंग्लो इण्डियन भी लूट-खसोट में हाथ बंटा रहे थे!

हत्या और लूट

जकरिया स्ट्रीट में हिन्दुओं की वह दुर्दशा की गई है। उसका वर्णन करना बहुत ही कठिन है, जिस समय वहां ये सब घटनाएँ हो रही थी, तब हरिसन रोड़ का 'भारत कला भण्डार' लीगियों द्वारा बुरी तरह से लूटा जा रहा था। उसके मालिक के लड़के को मौत के घाट उतारा और फिर आजादी से उन्होंने खूब माल लूटा। हिन्दुओ! अब तुम अपनी नींद को त्याग दो। यह बात यहां ध्यान देने योग्य है कि जिस समय जकरिया स्ट्रीट के मन्दिर में आग लगाई जा रही थी, निकलते-बढ़ते हिन्दुओं पर हमला किया जा रहा था, सड़क पर मकानों पर पत्थरों की वर्षा की जा रही थी। उस समय कलकत्ता के मेयर श्री उस्मान जो मुस्लिम हाई स्कूल के हेडमास्टर हैं, वह इस समय अपने स्कूल में मौजूद थे। उनकी मोटर कार बाहर खड़ी थी, यह हाईस्कूल २६ वीं जकरिया स्ट्रीट से बिल्कुल सामने है, जब दंगे का जोर बढ़ा और लीगी लोग अपने नारों के साथ दस्तों के दस्तों में आ रहे थे। इस घटना को देख कर मिस्टर उस्मान का पता भी न लगा। न मालूम कार को किस मार्ग से ले गए। जब उनको घटना घटने का पता था तब ही तो फौरन कार में भाग गए। इस घटना के होने का ऐलान लीगियों ने अपने जलसे और १४-१५ तारीखों के वाजों में मस्जिदों के मुल्लाओं-मौलवियों ने कर दिया था। उन्होंने मुस्लिमों को पहले से सूचित कर दिया था। और उनको लड़ने के लिए

भी उत्साही किया गया था। उनके लड़ने के लिए हथियार भी बांटे गए थे ,मरने-मारने की शिक्षा भी दी थी!

मकानों में बन्द स्त्री पुरुष छिपे हुए अपने मकानों की खिड़कियों की दराजों में से हृदयद्रावक घटना देख देखकर हाथ मल रहे थे। जिनके बच्चे, बच्चियां उस नरमेध में स्वाहा हो गए थे, वह दो-दो आंसू रो रहे थे!

मुस्लिम पुलिसवालों ने भी इस साम्प्रदायिक घटना में खूब हाथ रंगे। अपनी बन्दूक और पिस्तौल का प्रयोग असहाय, दयनीय और निर्दोष हिन्दुओं पर किया। आग लगाने में जितनी सहायता पुलिस ने की वह अवर्णनीय है। जिन्दा व्यक्तियों को जलती आग में डाल दिया। वह कांप कर, तड़फ कर मर गए। उनके घर का धन, रुपया सब लीगी लोग उठाकर ले गए। लोगों के जलते मकानों को देख कर फायर ब्रिगेड़ के आफिस को टेलीफोन किया। प्रथम तो टेलीफोन के कनवशन ही नदारद थे। फिर एक दो टेलीफोन ठीक काम भी दे रहे थे तो उनपर फाफर ब्रिगेड़ वालों ने कम ध्यान दिया। क्योंकि उनमें भी तो कुछ लीगियों का प्रभाव मौजूद होगा ही।

मकान धड़ाधड़ जल रहे थे, इमारतें फटा-फट जल जल कर गिर रही थीं। परन्तु वहां आग बुझाने का कोई प्रबन्ध नहीं था, जबकि पुलिस के आला अफसर वहां पर ही खड़े भीषण दृश्य देख रहे थे! यह समझो कि दूसरों की झोपड़ियां जलते देख कर उनको तमाशबीनी की सूझी थी। दिन को उस रास्ते पर फायर ब्रिगेड़ का इंजिन और पुलिस की लारियां भी निकली, परन्तु ये सब तमाशाइयों की तरह चली गई।

रेस्क्यू पार्टी ——के लोगों ने पुलिस के लोगों से दरियाफ्त किया कि कौन से मकान जलाए गए हैं ? या कौन सी इमारत गिर कर उनके नीचे स्त्री पुरुष तथा बच्चे दब गए हैं ? उनका पता इत्यादि बतादो ! वास्तव में सारी घटनाओं का पता उन पुलिसवाले पहरेदारों को था। परन्तु लीगी मन्त्रिमन्डल के कारण सब कुछ व्यर्थ रहा। स्वयं सहायता देना तो दूर की बात है रेस्क्यू पार्टी या फायर ब्रिगेड़ के इंजिन की सहायता से भी पीड़ित और दुखित जनता को लाभ उठाने से भी वंचित रखा।

उन पुलिसवालों ने सहायक लोगों को गलत सूचना और पते बता दिए और बहुतेरों को तो यह कहकर भगा दिया कि "भाग जाओ नहीं तो पुलिस की गार्द और कई सार्जेण्ट आदि अभी घटनास्थल पर आने वाले हैं। वे सड़क पर खड़े हुए लोगों को अवारा समझ कर गिरफ्तार कर लेंगे। तुम लोग जल्दी से भाग जाओ। सहायक लोग फौरन भाग गए। अपनी जान सबको प्यारी होती है।"

पुलिस विभाग में जितने मुसलमान कार्यकर्त्ता तथा अधिकारी थे उन्होंने भी अपने हाथ खूब रंगे। उनको अपनी साम्प्रदायिक शत्रुता निकालने का एक अच्छा मौका मिल गया। बन्दूकों और पिस्तौलों को खुले हाथों प्रयोग में लाए। उनको यदि किसी हिन्दू अधिकारी ने धमका कर कहा भी कि गुण्डों के बजाए तुम जनता पर गोलियों की बौछार क्यों करते हो ? भीषण रक्तपात को दमन करने के बजाए तुम उस आग को अधिक भड़का कर फैलाना चाहते हो। यह साधारण बात एक भीषण आग का रूप धारण कर लेगी तो इस पर

पुलिसवालों ने अधिकारियों को मूर्ख बनाने के लिए कहा—"जिन पर हम हमले करते हैं या धमकियां देते हैं वे सब गुण्डे हैं। जनता के शरीफ और सज्जन लोगों को तो हम खूब पहचानते हैं। हमको हिन्दुओं से कोई दुश्मनी नहीं।"

सरासर उपर्युक्त बातें मुस्लिम पुलिसवालों ने भोली-भाली जनता के साथ की। इसका परिणाम यह निकला कि रात को जिन्ना के 'सीधे हमले' की घोषणा ने नगर में हृदय द्राविक दृश्य उत्पन्न कर दिया। चारों ओर 'मारो-मारो' 'काटो-काटो' "हाय! हाय!!" "मर गए" "मर गए" 'बचाओ, बचाओ' की चीख पुकार आने लगी। मनुष्यों के हृदय दहलने लगे। कमजोर दिल के लोग कमरों के अन्दर के ताले लगा-लगाकर चुप होकर सो गए। सब अपनी अपनी जानों की खैर मनाने लगे! कोई भी किसी की सहायता के लिए अपना घर छोड़ कर आने को तैयार नहीं।

दूसरे दिन प्रातःकाल से दंगा अपनी शीर्षतम स्थिति में आगया और जनता में उसने भगदड़ मचा दी। जनता के लोगों के हृदय अनिश्चित हो गए। अब वे लोग किंकर्त्तव्य विमूढ़ की भाति हो गए। न उस घिरी हुई जनता के पास खाने को अन्न था और न किसी प्रकार की सामग्री थी। आधी से ज्यादा जनता ऐसी थी जो प्रतिदिन मजदूरी करती थी और सुबह का सुबह शाम का शाम खाती थी। बहुत उनमें ऐसे व्यक्ति थे जिनको सुबह नहीं तो शाम और शाम नहीं तो सुबह ही केवल मिल सकता था। लीगी गुण्डों ने दुकानों को खूब लूटा और बहुत दुकानदारों को मौत के घाट भी पहुंचा दिया। हालत घड़ी घड़ी पल २ में बदतर होती जा रही थी। आहत

और मृतकों की पहले दिन की संख्या ८-१० हजार के लगभग थी इस बात के प्रमाण के लिए यह बात दूसरे दिन के नगर-व्यापी भ्रमण ने स्पष्ट करदी। गिरिश पार्क के आगे कार्नवालिस स्ट्रीट से होते हुए मानिक तल्ला की मोड़ पर जिस समय कार में गुप्त खोजी लोग ४०-५०मील की गति से कार्पोरेशन की समस्त गति सम्बन्धी नियमों को चुनौती देते हुए बढ़ रहे थे। उस समय लीगियों द्वारा जलाए हुए आदमियों के ढेर नालियों और सड़कों पर फेंकी हुई लाशें स्त्री बच्चों और वृद्धों के नंगे अधनंगे शव और रक्त के पनाले छाया-चित्र की भांति उनकी ही गति से आंखों के सामने से निकलते जा रहे थे। कई व्यक्तियों के अंग-भंग किसी का धड़ किसी का सिर कटे अलग पड़े थे और वे बुरी तरह तड़फ रहे थे। कई लोग एक आंख, एक हाथ, एक पांवके बिना उस विद्रोह से बचने के लिए अथवा जान की खैर मनाने के लिए घिसट २ कर सड़क के किनारों पर आना चाहते थे। परन्तु अत्याचारी गुण्डों ने मरते हुए विवश तथा मजबूर व्यक्तियों को लाठियों द्वारा मार कर स्वर्ग पहुंचा दिया। स्थान स्थान पर अग्निकाण्ड से ध्वस्त मकान धड़ा-धड़ गिर रहे थे। उनमें कोई बिल्डिंग पूरी जल गई और कोई आधी तथा किसी के नीचे तक अग्नि-देव ने प्रवेश कर लिया था। उन मकानों में जीवित व्यक्ति चिल्ला चिल्ला कर गला फाड़ २ कर अपने प्राण दे रहे थे। आग अपनी भयंकरता का भीषण रूप मानों उन गरीबों को उसी दिन दिखाना चाहती थी।

ये सब मुसलमान क्षेत्र थे। अकेले हिन्दू पर आक्रमण किया और उनको धराशायी किया। यह विचार करने की बात है

अकेला व्यक्ति कहां तक मुकाबला कर सकता है। जब सैकड़ों की संख्या में गुण्डे हों तो दो चार व्यक्ति कुछ भी नहीं कर सकते हैं। नालियों और सड़कों में पड़ी लाशों की संख्या इतनी अधिक थी कि उनकी गिनती करनी भी असम्भव थी। भीषण काण्ड का यह हाल था कि अपर सरक्यूलर रोड़ से लेकर मौला अली तक सारी सड़कों पर शव ही शव पड़े दिखाई दे रहे थे। उन शवों को पड़ा देख कर किसके मनमें प्रतिशोध की भावनाएँ न जाग उठेंगी। मानव की पैशाचिकता का मानवता ने शायद ही कभी ऐसा नंगा नाच देखा हो। जिधर देखो उधर 'मारो-काटो' का अन्यायी नारा और आहत तथा घायल व्यक्तियों का आर्त-नाद और चीखपुकार। परन्तु नकारे के सामने तूती की आवाज कौन सुनता है। एक बात और भी है कि आततायियों ने उन पर पहले तो आक्रमण किया और फिर उनको घायल करके या मार कर उनका माल असबाब लूट कर ले गए।

कलकत्ता में धर्मतल्ला स्ट्रीट एक प्रमुख व्यवसायिक सड़क है। जहाँ प्रत्येक प्रकार के व्यवसायी रहते हैं। यह मानने योग्य प्रमाण है कि जहां पर बिजनिसमैन या व्यापारी लोग रहेंगे वहां लड़ाई झगड़े का क्या काम—ये लोग बिल्कुल सज्जन और संघर्ष आदि से डरने वाले होते हैं। और यदि कोई झगड़ा करता भी है तो उनको इस कार्य में धनकी कितनी ही हानि हो जाए वह जहां तक हो सके उसका फैसला ही करा देते हैं। इस बात को आगे बढ़ने नहीं देते। वे लोग झगड़ालू नहीं होते अर्थात् वे सिंहजी लोगों से डरते हैं। उनको दूर से ही सलाम कर लेते हैं। इसलिए यह मानना पड़ेगा कि धर्मतल्ला स्ट्रीट में झगड़ा गैर व्यवसायी अर्थात् लीगियों ने किया।

गुण्डों ने वहां कई बार आग लगाने का प्रयत्न किया परन्तु जब भी आग लगाई, ईश्वर की कृपासे वहां के लोग आग लगाने में पूरी तरह सफल नहीं हुए-हां, धर्मतल्ला के कोने में एक छोटी सी दुकान पर जहां ज्यूट का सामान बिकता है वहां जरूर आग लग सकी। जिसके कारण आसपास की दो-चार दुकानें जली। परन्तु अन्य बाजारों की भांति वहां अधिक अग्नि-काण्ड न हो सका परन्तु लूट मार की इस जगह भर मार थी। दुकानों के ताले तोड़कर जबरदस्ती उनको लूटा जा रहा था। लूटते हुए जो सामान दुकान से बाहर गिर जाता था। वह सड़क पर उसी तरह पड़ा हुआ था, उसको कोई उठाने वाला मौजूद नहीं था। क्योंकि लीगी एक बार में इतनी मालियत का सामान ले जाते थे कि फिर दुबारा उनको लौट कर आने की आवश्यकता नहीं होती थी। अथवा नीचे पड़े सामान को उठाने के लिए वे दिक्कत समझते होंगे।

इस पैशाचिकता तथा घृणात्मक दृश्य को देख कर किसका हृदय द्रवित नहीं होगा कि बेकसूर लोगों की दुकानें इस प्रकार लुटी जारही थी और पुलिस के अधिकारी उनकी ओर आंखें उठा कर भी नहीं देख रहे थे! बल्कि उस वातावरण से यह प्रतीत होता था कि लूट पाट में पुलिस की शै है। यातायात तो बिल्कुल बन्द था लेकिन स्वयं सेवक संस्थाओं के रक्षात्मक दल लारियों और ट्रकों में चढे इधर से उधर संकट ग्रस्तों को बचाने की चेष्टा कर रहे थे। उनमें से रक्षात्मक दल के एक नेता ने कहा कि हमने ५० हिन्दू परिवार के ऐसे व्यक्तियों की रक्षा की है जो मुसलमानों के बीच में घिरे हुए थे। मुसलमान गुण्डे उनको हलाल करने का डर दिखला रहे थे। वे लोग मारे डर के दुखित थे। उनमें से जितनों का हम रक्षा कर सके हमने उन सब की रक्षा की। परन्तु उस समय दृश्य बहुत ही खौफनाक था।"

रोमाञ्चकारी दृश्य

गुण्डों का समूह अपने सीधे हमले की पूर्ति करने के लिए इधर उधर गीद्ध दृष्टि फेंकते हुये घूम रहे थे-उनको अपने शिकार की तलाश थी। जहां भी उनको हिन्दू स्त्री, पुरुष, या बच्चा मिलता था उसको निर्दयता के साथ हलाल करके गली कूंचे या सड़क पर डाल देते थे। रक्षा कमेटी के सावधान व्यक्तियों ने कई स्थानों पर नवजात शिशुओं को नालियों, मकानों के टूटे-फूटे खण्डहरों में पड़ा पाया। कइयों की दोनों टांगे चिरी हुई मिली उनमें से कई बच्चों के सिर फटे तथा उनके सिरों की खील-खील हुई मिली। कई बच्चे ऐसे मिले जिनके पेटों के ऊपर जालिमों ने पैर रखकर उनकी हत्या करदी है। उनकी अंतड़ियां मुख और गुदा के रास्ते से निकली हुई पाई गई। कई बच्चों की आंखें फटी हुई मिली। यह थी जाति के विरोधी गुण्डों की काली करतूतें।

धर्मतल्ला से आगे बढ़कर एक स्थान पर जिस समय मुस्लिम घर से निकल कर एक हिन्दू दम्पति अपने छः मास के शिशु सहित रक्षा-लारी पर अपनी जान बचाने के लिये चढ़ रहे थे। उस समय एक नृशंस मुसलमान गुण्डे ने पीछे आकर शिशु को उसकी मां से छीन लिया और शिशु के दोनों पैर पकड़ कर ज़ोर से दे मारा बच्चे के शरीर की खील-खील हो गई। मां-

से यह करुणाजनक दृश्य अपनी आंखों से न देखा गया---वह पृथ्वी पर पछाड़ खाकर गिर गई और बेहोश गई। शिशु का पिता भी यह घृणित दृश्य न देख सका और अपनी स्त्री को होश में लाने की चेष्टा करने लगा। इतनी ही देर में दम्पति भी छुरों से घायल होकर पृथ्वी पर छट-पटा रहा था। पुलिस के सिपाहियों के हाथों में बन्दूकें ज्यों की त्यों तनी रह गई। और वहां से अवहेलना पूर्वक दूसरी ओर मुख मोड़कर चले गए। यह था लीगी मन्त्रिमण्डल का हिन्दुओं के प्रति न्याय।

उस समय के इस दृश्य के सम्बन्ध में इन शब्दों को लिखते हुए भी शिशु की करुण चीख और दम्पति की दर्द भरी आहों के स्मरण से आपाद मस्तक शरीर सिहर कर बेहोश हो जाता है। मेरा अनुमान है इस साम्प्रदायिक गदर के बाद ठीक-ठीक मृतकों की गणना की जाती तो इन दो दिन में ही वह २० हजार से कम न ठहरेगी। तथा धन माल की हानि करोड़ों तक सीमित न रह कर अरबों की संख्या में दौड़ेगी।

श्री राधानाथ चतुर्वेदी सहायक सम्पादक 'लोकमान्य' प्रत्यक्षदर्शी कहते हैं कि मृत-शवों को देखकर स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि मरने वालों में वे व्यक्ति थे, जो मध्यवर्गीय थे। तथा अपरिचित, परदेशी और निर्दोष होना ही जिनका अपराध था। लीगी पक्ष के पूंजीपतियों ने ३ 'कत्लेआम' का संघठन किया था। उत्तेजनात्मक प्रचारों में पैसेवालों तथा गुण्डों इन्हीं दो की प्रमुखता थी। घरों में आग लगानेवालों में मुसलमानों ने हद करदी।

एक इमारत में जिसमें ३-४ हजार आदमी रहते थे, उन्होंने बेरहमी और निर्दयता के साथ आग लगादी। उनमें कई

हजार व्यक्ति जिन्दा जलकर खाक हो गए। ऐसी दशा में अन्य घरवालों के लिए घर छोड़ देने के अलावा और कोई चारा हो ही नहीं सकता था।

नृशंसता, निर्मम हत्याओं और लूटमार को दृष्टिगत रखते हुए उभय पक्ष में दंगे की आग भड़की हुई थी। इस भीषण काण्ड में मुसलमानों ने व्यभिचार, बलात्कार तथा अपने अत्याचारों से अपने आपको इस बात का अधिकारी नहीं रखा है कि वे और अपने आपको पवित्र इस्लाम का सदस्य घोषित कर सकें। कायरता और नीचता की सीमा भी शायद इन लोगों ने छोड़दी थी। ४० हजार निर्दोष हिन्दू-मुसलमान नागरिकों के रूप से रंगी हुई कलकत्ता की सड़कें युग-युग तक पुकार-पुकार कर कहेंगी कि शायद नादिरशाह ने भी दिल्ली में कत्लेआम और लूट-मार में इतनी भयंकरता नहीं बरती होगी, जितनी इन दिनों लीगियों ने की है।

जो निर्दोषी मुसलमान कांग्रेस के साथी थे उनको भी हिन्दुओं की भांति जन-धन की हानि पहुंचाई गई। मुसलमान भाइयों का तो ध्यान रखना ही चाहिये था। परन्तु उनको तो अपनी संस्था लीग का समर्थन करना था, उसमें कोई भी हो।

मृतक शवों को देख २ कर किसी भी कठोर से कठोर व्यक्ति की आंखों के सामने उन अभागी मां, निर्दोष बहिनों तथा पतिपरायणा पत्नियों का अश्रु पूर्ण चेहरा घूम सकता था। किसी भी पक्षपात हीन व्यक्ति के मुख से ये शब्द अकस्मात् निकल सकते थे—"यह सब क्यों ? किस के लिये ? किसने किसका क्या बिगाड़ा ? ये लोग वह ही तो हैं जिनके साथ हम लोग १५ अगस्त की रात को, हंस-बोल कर, खेल कर, सिनेमा

आकर सोये थे।" अनाथ पड़े शवों पर दृष्टि जा कर यह ही कहा जा सकता था कि ये भी किसी के पुत्र, पति तथा भाई थे। उनकी प्रतीक्षा भी की जारही होगी। आज ये लाशों के रूपों में पड़े अनाथ से दीख रहे हैं। जिस समय उनके घर वालों को उनकी यह दशा ज्ञात होगी कि उनका पति, पुत्र या भाई अपने २ कामों से वापिस नहीं लौटेंगे। उस समय उस दृश्य की कल्पना भी करके, किस व्यक्ति की छाती न फट जायगी।

क्या इस प्रकार की ग़दरमयी घटनाओं से मियां जिन्ना की रक्त पिपासा शान्त होगी ? क्या मुस्लिम लीग को इससे शान्ति मिलेगी ? क्या लीगी मन्त्रीमण्डल इस प्रकार हत्याएं कराकर भी अपनी मिनिस्ट्री को स्थायी रख सकता है ? जिन्ना और जवाहर के मतभेदों के निर्णय का क्या यह स्वरूप सदैव के लिए चालू रह सकेगा ?
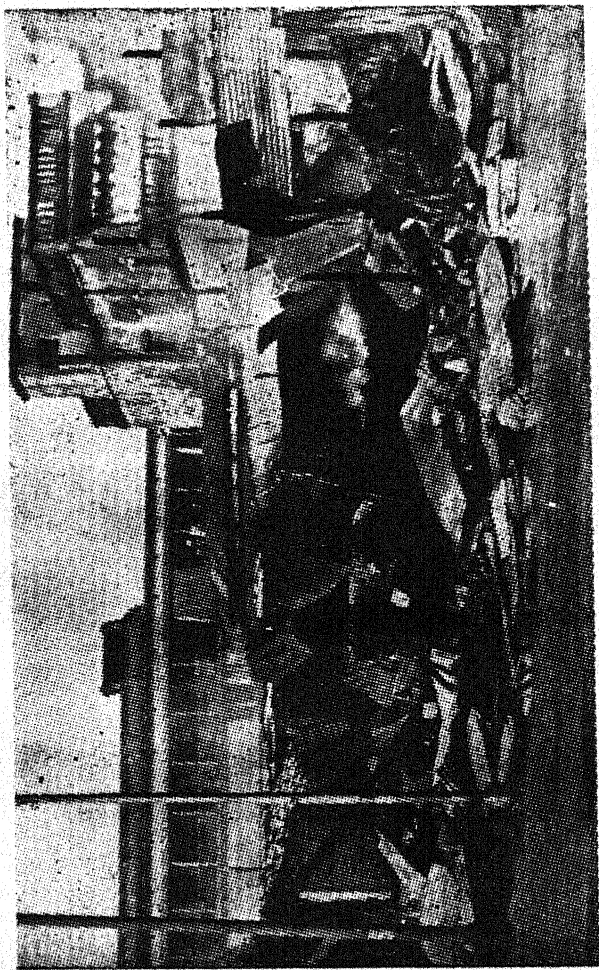
दुकानों का करोड़ों रुपये का माल जलाकर भस्म कर दिया। हजारों जीवित मानव आग में जल कर चनों की तरह भुन गये।
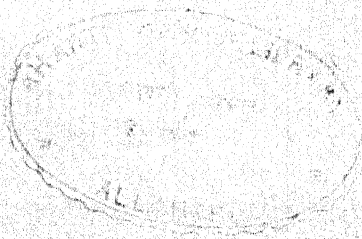
मुसलमान गुण्डों को लीग की सहायता

सरकार ने राशन व्यवस्था को अपनी सहूलियत के लिए जारी किया था। इसके कारण कम-अधिक सारी जनता को प्राप्त हो जाता था। परन्तु इस दंगे में हिन्दू जनता को खाने-पीने के लिए मुँह ताकना पड़ा क्योंकि कलकत्ता में लगभग सारी राशन शौप मुसलमान दुकानदारों के हाथों में हैं। और जो हिन्दुओं के हाथों में हैं वे सब नहीं के बराबर हैं। इसके अतिरिक्त एक और भी बात है कि इस दंगे से पूर्व रमजान के बहाने मुसलमान जनता को एक महीने के लिए राशन दिया जा चुका था। इस लिए रसद की उन्हें कमी नहीं। इसमें लीग का हाथ था और ये लोग इस प्रकार लड़ाई को अधिक दिनों तक भी जारी रख सकते थे। हिन्दू जनता बिना राशन के भूखी मरी।

चान्दनी (बाजार) में हिन्दू बन्दूकवालों की जो दुकानें थी वे भी पुलिस की सहायता तथा लीग के इशारे पर मुसलमानों ने लूट ली। बस, बन्दूकों पर गुण्डों का कब्जा हो गया। अब क्या शेष रह गया था। कारतूसों तथा गोलियों की दुकानें मुसलमानों की थीं ही उनसे अनुरोध और आग्रह के साथ गोलियां आदि प्राप्त कर लीं।

कलकत्ता में जिन हिन्दुओं के पास बन्दूकों के लाइसेंस थे लीगी मन्त्रीमण्डल ने व्यवस्था ठीक करने के लिए उनसे

बन्दूकें वापिस ले लीं और वे हजारों बन्दूकें मुसलमानों को देकर उनकी सशस्त्र सहायता की।

बांस की मण्डी में से लाठियां बनाने के लिए गुप्त स्थान रखे। परन्तु वहां से मुसलमानों को ही बिना किसी क़ीमत पर लाठी दी गई। जिनका प्रयोग हिन्दुओं के निरपराधी परिवारों पर किया गया।

मुसलमान लुहारों ने अपने भाइयों की सहायता के लिए रात भर छुरे और बर्छियां तैयार की और वे किसी मूल्य पर उनको बेचदी। जो मूल्य न दे सके उनको लीगी बजट से फ्री दे दी गई। और उनके नाम और पते लिख लिए गए।

लारियों, ट्रकों तथा मोटरों के लिए लीगी आक़ाओं से पेट्रोल मिला। जब उनके पास समाप्त हो गया तो उन्होंने हिन्दुओं के पेट्रोल पम्प तोड़ लिये और उनसे मनमाना पेट्रोल लें लिया। इस प्रकार मुसलमान इस बार बहुत तैयारी और मजबूती के साथ मैदान में उतरे थे। इससे यह न समझना चाहिये कि हिन्दू जनता बिल्कुल ही चुप रही उसने भी ईंट का जवाब पत्थर से देने की ठानी और ज्योंही वे लोग मैदान में आये कि इतनी ही देर में उनके आते ही लीगी मुस्लिम भी आ धमके और उन्होंने हिन्दुओं के हाथों से शस्त्र छीनना व इन्हें पकड़ना आरम्भ कर दिया अर्थात् इनको मैदान में दो-दो हाथ दिखाने का मौका न दिया गया। इस लिये गिरफ्तार शुदा आदमियों में हिन्दुओं की संख्या अधिकाधिक रहीं ये सब कर तूतें सुहरावर्दी साहब की करामातें हैं।

लीग की ओर से लड़नेवाले मुसलमानों तथा गुण्डों के लिये खाने पीने का प्रबन्ध अलग किया हुआ था तथा जो कोई एक

आध मुसलमान परिवार गलती से गुण्डों की झपेट में आ गया था। उसकी सहायता के लिये अलग पुलिस के पहरे शुदा कैम्प लगे हुये थे। उन कैम्पों में हर तरह का प्रबन्ध था।

मुसलमानों को 'सीधी कार्रवाई' सफल बनाने के लिए लीग की ओर से पुलिस की ट्रकें तथा लारियां मिली हुई थी। जिनमें बैठकर कलकत्ते के बड़े से बड़े बाजारों में आग लगाकर धुआं-धार मचाया गया। लूट का माल लाद-लाद कर मुसलमानों के घरों में पहुंचाया गया। हिन्दू परिवार को मार-काट कर उनका माल निकालने में सहायता मिलती थी। इसके प्रमाण के लिये सम्पादकाचार्य पं० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी जकरिया स्ट्रीट के जिस मकान में रहते थे वे लिखते हैं कि उस बाजार में हालांकि कोई बड़ा धनी नहीं रहता था। परन्तुफिर भी वहां से लुटेरे कई लाख रुपये का माल मोटरों में भरकर ले गए। कई लोग जो अपने मकान के कोनों में छिप गए थे, वे माल समेत बच गये।

इस प्रकार दयारामजी पोद्दार जो व्यापार के में बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति थे वह ताराचन्द दत्त स्ट्रीट में रहते थे। उनके घर में दो तिजूरियां रुपये धन माल और जेवर से भरी पड़ी थी और इसके अतिरिक्त कई लाख के नोट इनमें थे, वह भी सब लूटकर ले गए। कोई इन नोटों का अनुमान १८—२० लाख लगाते हैं।

गुण्डों ने इन तिजूरियों को तोड़ना चाहा परन्तु तिजूरियां बहुत प्रयत्न करने पर भी तोड़ी न जा सकी। तो फिर उन्होंने दोनों को लारियों में रखकर किसी सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दिया।

एक हिन्दू फर्नीचर वाले की दुकान के सामने मुसलमानों ने लारी खड़ी करके उसका ताला तोड़दिया और सारा बढ़िया

फर्नीचर निकाल कर गाड़ी में लाद कर ले गए और फिर उसी दुकान में आग लगादी। उसकी सहायता से पांच-छः और दुकानें भी जल गईं।

जौहरी बाजार में गुण्डों ने दुकानों के कुल्फ तोड़ कर उनमें से कीमती जवाहर निकाल लिए—तथा सोने चांदी के जेवर आदि भी लूट लिए।

एक लारी जिसमें लाठी, छुरे, बर्छी, भाले आदि लदे थे। दंगे के समय जो भी मुसलमान निहत्था दिखाई दिया उन सब को लारी वाले लीगी भाइयों ने उनको अस्त्र शस्त्र दे दिया। अर्थात् जिसको जो हथियार अच्छा लगा वह ही उसने सम्भाल लिया और उसको निहत्थे हिन्दुओं पर प्रयोग किया।

एक हिन्दू और एक सिख लड़की सड़क को पार करके अपने मकानों या किसी दूसरे के मकानों के शरणार्थ जा रही थीं। लारी वाले मुसलमानों ने लारी रोक कर उन लड़कियों को लारी में बिठा लिया और उनके साथ बलात्कार व्यभिचार किया। पता लगाया गया कि उन दोनों लड़कियों को लारी के सामने डालकर उनके ऊपर से लारियां चला दीं गईं। जिससे वे कुचलकर सड़क पर खून आ लूदा पड़ी मिलीं।

गुण्डों का राज्य

हत्यारे गुण्डों ने कलकत्ता में जो भी भीषण काण्ड मचाया है उसको देखकर या सुनकर लोमहर्षण होता है। हत्यारों ने जो बीभत्स कृत्य किए हैं, उनमें से एक घटना वाजपेयी जी ने प्रत्यक्षदर्शी होने के नाते इस प्रकार वर्णन किया है कि कलकत्ता के उत्तरी भाग से जहां पर अधिकांश मुसलमानों की ही बस्ती है। वहां से बचाकर लाई गई स्त्रियों और बच्चों ने रुंधे हुए गले से करुणापूर्ण शब्दों में बताया कि किस प्रकार स्वयं उनकी आंखों के सामने उनके पतियों और बच्चों को काट काट कर डाल दिया गया था। और उनकी लाशों की दुर्गति की जा रही थी।

एक परदेशी स्त्री खून से लथपथ साड़ी पहने हुए अपने छः मास के बच्चे को अपनी छाती से चिपटाए जा रही थी—साथ में उसके बच्चे के घावों से भी रक्त बह रहा था और बच्चा अर्ध-विक्षिप्त सा था।

मल्लिक क्षेत्र जहां हिन्दू बत्तीस दांतों के बीच जीभ की तरह रहते हैं—उनके घरों को लूट लिया और स्त्रियों की बेहुरमती की। जो उनकी हिमायत या सहायता के लिए आए उनको पहले तो पुलिस ने ही रोका। परन्तु ओजस्वी तथा जोशीले आदमी अन्दर आए तो उनकी मानहानि के अतिरिक्त उनकी

खूब मरम्मत बनाई। उनके कपड़े निकालकर नंगे करके भेजा। उनमें से बहुतेरे हिन्दुओं ने सेण्ट एस्कीयर कालेज की हद में जाकर शरण ली।

केला बाजार भी बड़ा बाजार के अत्यन्त समीप हिन्दुओं की एक बस्ती है किन्तु सामने ही मुसलमानों से भरा मछुआ बाजार है। या यह समझो कि मुसलमानों का वहां पूरा २ जोर है। वहां हिन्दू का एक बच्चा भी नहीं रहता, सारा का सारा प्रदेश हिन्दू से खाली करा लिया गया है। मुसलमानों ने वह बिल्कुल खाली करा कर अपने अधिकार में ले लिया है। वहां रहने वाले हिन्दू लुट पिट कर निर्धनों की भांति कंगाल अवस्था में इधर उधर मांग कर उदर पूर्ति करते हैं। यहां भी मुसलमान गुण्डों ने हिन्दुओं के घरों में बलपूर्वक घुसकर स्त्रियों से व्य-भिचार और बलात्कार किया। शान्ति को भंग कर दिया, वहां के असली रहने वालों को निकाल कर स्वयं उन मकानों पर काबिज होगये। इस पर लीगी मन्त्री मण्डल ने कोई ध्यान नहीं दिया।

इस दंगे का वास्तविक वर्णन इस कारण से पूर्ण रूप से न मिल सका क्योंकि कलकत्ते से निकलने वाले सब पत्रों पर लीगी मन्त्री मण्डल के द्वारा पाबन्दी लग गई थी। परन्तु फिर भी कुछ अंग्रेजी और बंगला पत्रों ने अपनी जानों पर खेल कर ज्यूं की त्यूं घटना का वर्णन करने का प्रयत्न किया है। अखबारों ने केवल मानिकतल्ला उलटा डेंगी, नारिकेल डंगा, ताल तल्ला, एण्टाली कड़ाया पार्क सर्कस, मौलाआली इत्यादि का ही वर्णन किया है। परन्तु कलकत्ते में बड़ा बाजार या जकरिया मन्दिर और ताराचन्द दत्त स्ट्रीट भी हैं। जहां मुसलमानों के पाकिस्तान में

गरीब और अमीर मारवाड़ी और अन्य प्रदेशों के हिन्दू भी रहते हैं–इनकी पूरी सूचना किसी समाचार पत्र ने नहीं दी क्योंकि ऐसे समय में इन बाजारों में।जो भी आदमी जायगा। उसको हथेली पर जान लेकर जाना पड़ा होगा। वहां से जो भी जीवित लौट कर आजाए तो उसको हम बड़ा भाग्यवान ही समझेंगे।

इसका मूल कारण यह है कि वहां गुण्डों का अखण्ड राज था। जो उधर की ओर देखता भी था उसी को मौत के घाट की धमकी दी जाती थी। यह मानने में हमें कोई आपत्ति नहीं कि दंगे का बिसमिल्लाह जकरिया स्ट्रीट और मन्दिर स्ट्रीट से ही हुआ। मन्दिर के पास हिन्दू व्यक्ति के पास एक मुसलमान पानी पी रहा था––पहले तो उस गुण्डे मुसलमान ने पानी पिलाने वाले लाला पर पानी का कुल्ला कर दिया, फिर पेट्रोल लेकर मंदिर में आग लगादी। आग ने एकदम भीषणता धारण कर ली–– परन्तु हजारों की, हानि पर ही आग पर काबू पाली। इस बीच में ही गुण्डों ने हिन्दुओं को डराने के लिये झूठे फायर किए। इसपर हिन्दुओं की ओर से कोई जवाब न मिल सका। मुसलमानों के साहस बढ़ गए उसी स्थान पर सिख की साबुनकी दुकान थी। उसके गोदाम में आग लगादी। सिख को आग लग जाने से बहुत हानि हुई। पास ही उसका एक ट्रक भी खड़ा था। उसमें भी गुण्डों ने आग लगादी। ट्रक की सारी बोड़ी जलकर राख होगई।

इससे आगे चलकर ८ नम्बर मन्दिर स्ट्रीट के 'तुलसी पुस्तकालय' पर धावा किया—बांसों और लकड़ियों के जोर से पुस्तकालय के किवाड़ तोड़ डाले। और उसमें जो उनके मतलब की वस्तु मिली उसको उठाकर ले गए शेष को तोड़ फोड़ कर इधर-उधर बखेर गए। अलमारियों में लगी हुई पुस्तकों को गिरा दिया

अलमारियों के शीशों को फोड़ कर चकनाचूर कर दिया। पुस्तकालय में जो चित्र या तस्वीरें लगी हुई थी उनको फोड़ कर डाल दिया। व्यर्थ में गुनाह-बेलज्जत वाली बातकी। वहांसे लौटते समय पुस्तकालय के पिछले भाग पर पेट्रोल छिड़क कर आग लगादी।

फिर शिव मन्दिर पर पुनः धावा बोला, वहां की मूर्तियों को खंडित कर दिया। देवों की पोशाकें उठाकर ले गए। अन्त में उस पर पेट्रोल छिड़ कर फिर से आग लगादी। मन्दिर का दरवाजा तोड़ कर अन्दर घुस गए, मन्दिर भ्रष्ट कर दिया। कुछ मूर्ति तोड़ कर बाहर फेंक दी, देवता की पूजा तथा उनकी योग्य सामग्री, घी चावल मीठा आदि कुछ खाया, कुछ बाहर आग की भेंट कर दिया। शेष दूर खड़े उनके अन्य साथियों ने इकट्ठा कर लिया, कुछ शान्ति होने पर उस मन्दिर के पुजारी रक्षा समिति के सदस्यों तथा पुलिस के सार्जेण्ट के पहरे में वहां जा सके। वहां जाकर उन्होंने देखा कि टूटे हुए शिवलिंग पर एक हिन्दू की बलि चढ़ी हुई है।

इस मन्दिर के पास ही एक सकलनारायण नामक विद्यालय था, उसका भी ताला तोड़ कर चीजें निकाल ली। वहां जो अध्यापक अत्यन्त संतोष के साथ रहता था उसको मारपीट कर निकाल दिया और उसका सारा सामान गुण्डों ने लूट लिया। इसी समय में बिड़लों के मकानों के ऊपर भी आक्रमण किया—उनमें से दो मकानों पर पैट्रोल डालकर उनमें आग लगादी-लोगों ने उनका मुकाबला करना चाहा, उलटा उन पर धावा किया गया और उनको स्वर्ग धाम पहुंचाया गया। इस आक्रमण से जितने व्यक्ति मरे उनके नाम या स्थान का अब तक कोई पता नहीं। केवल कुछ आदमियों का पता अवश्य लगा है जो उसी स्थान के रहने वाले थे। उनके साथ बहुत से परदेशी भी काम में आए।

लीग पर ही उत्तरदायित्व—

कलकत्ते में ४०,००० हजार निरपराधी मानवों के प्राण लिए जाने का उत्तरदायित्व मुस्लिम लीग तथा कलकत्ते के मुस्लिम लीगी मन्त्री मण्डल पर ही है। क्योंकि आक्रमणकारियों के पास कार, लारी और ट्रक थे जिन में लाठी, छुरे, तलवारें, बर्छे, भाले, किर्चे आदि हथियार भरे थे। और इन्हीं लोगों के पास छोटी २ बन्दूकें भी थी जो लाइसेन्सदार हिन्दुओं से छीन कर मुसलमानों को दी गई थीं और ये बन्दूकें थाने में आश्रय लिए हुए स्त्री, बच्चे, पुरुषों पर चलाई गई–इतने पर भी वहां पर स्थित पुलिस ने कोई पक्ष जनता का नहीं लिया और न बलवाइयों को उनकी हरकतों पर ही गिरफ्तार किया गया।

लोगों ने पुलिस अधिकारियों तथा नगर पिताओं से पूछा कि गुण्डों को ये बन्दूकें किसने दी थी? परन्तु इसका उत्तर कौन दे सकता है यह तो स्वयं ही सोचने समझने की बात है। यदि इसमें बंगाल सरकार का हाथ न होता तो दंगा होने के पश्चात् ही धारा १४४ न लगादी जाती। जहां पूरे १५-२० घन्टे तक कोई धारा या नियम या कर्फ्यूआर्डर नहीं लगाया गया, लीगीपन की धान्दले बाज़ी नहीं तो क्या है?

गोली न चलाने का आदेश—

जब नगर में सब ओर अग्निकाण्ड, रक्तपात, और शस्त्रास्त्र

वर्षा हो रही थी ! निर्दोषियों पर अत्याचार और अन्याय किया जा रहा था !! दुकान और मकानों को दरवाजे तथा ताले तोड़ कर लूटा जा रहा था !!! तो उस समय सरकारी प्रवक्ता से पूछा गया। क्या १६ अगस्त को पुलिस को आज्ञा दी गई थी कि उपद्रवी भीड़ के विरुद्ध बल प्रयोग न किया जाय ? इसका उत्तर देते हुए प्रवक्ता ने साहस के साथ कहा कि भीड़ को तित्तर-बित्तर करने के लिये सरकार की ओर से गोली न चलाने का आदेश था। इसीलिये पुलिस ने जनता को अशान्त करने की बजाय शान्त ही रहने दिया।

पुलिस पर आक्षेप—

लीगी मन्त्री मण्डल ने खुले शब्दों में पुलिस को बता दिया था कि भीड़ को रोकने से तुम्हारा कोई अभिप्राय नहीं होना चाहिये और साथ में यह भी आदेश दिया कि जहां लाशें पड़ी हों वहां पर पहरे की कोई आवश्यकता नहीं। तुम्हारा काम बलवाइयों को देखने का है, उनके यातायात को रोकने का तुम्हारा अधिकार और कर्त्तव्य नहीं।

पुलिस पर यह आक्षेप भी लगाने योग्य है कि दंगाई पैट्रोल पम्पों को तोड़ कर उन में से पैट्रोल निकाल कर ले जाते थे और उन पेट्रोल से घरों को जलाते। थे परन्तु पुलिस ने न तो पेट्रोल पम्पों को तोड़ते हुए गुण्डों को रोका और न उनको मकान, घर और दुकानें जलाते हुये ही रोका, फिर यह सारा उत्तरदायित्व किस पर है ? बल्कि पुलिस तो उनके कृत्यों का तमशा देखती रही ? पुलिस का काम नगर की जनता की रक्षा करने का है या गुण्डों के अन्याय और अत्याचार देख २ कर खुश होने का ? गुण्डों की लारियां नहीं रोकी गई !

जो हिन्दू लोग अपनी रक्षा के लिये लकड़ी या लाठी बाजार में से ले जाते थे तो पुलिस विशेषतः उनसे ही हथियार छीनती थी एक प्रत्यक्षदर्शी ने बताया है कि उसने यहां तक पुलिस का अत्याचार तथा पक्षपात देखा कि एक सिख दरबान से तो कृपाण छीन ली (जिस कृपाण रखने की आज्ञा सिखों को उनके धर्म और अब तक होने वाले प्रत्येक राज्य (सरकार) की ओर से है) पर उसके पास वाली एक मस्जिद के मुसलमानों से न तो हथियार बन्दूकें ही छीनी गईं और न मस्जिद में इकट्ठी की गई ईंटे ही फिकवाई गई।
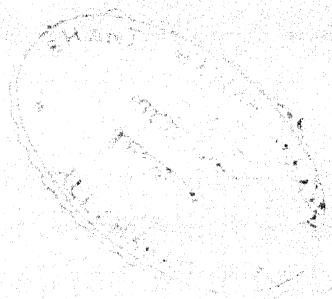
कलकत्ता क्षेत्र के कमाण्डर ब्रिग्रेडियर सिक्सस्मिथ

का कहना है कि १६ अगस्त को जब सारे उत्तरी कलकत्ते में दंगा हो रहा था, रक्तपात से जनता के लोग विचलित थे। तो उस दिन सरकार ने कलकत्ता की सारी पुलिस प्रबन्ध करने के लिये नहीं बुलाई। मुझको भी तब जाकर सूचना दी और बुलाया गया। जब कि सम्पूर्ण कलकत्ता नगर उपद्रव की आग से बुरी तरह भभक उठा था। सब ओर नगर में हा, हा, कार चीख, और रुदन की भरमार थी।

कलकत्ता कारपोरेशन की अंधेर गर्दी

कलकत्ता की सड़कों, बाजारों, गलियों में लाशों के ढेर के ढेर पड़े रहे, परन्तु उनको उठाने के लिये कोई प्रबन्ध नहीं किया गया। यद्यपि वहां की कारपोरेशन की ओर से नगर का कूड़ा कर्कट उठाने के लिये बहुत सी लारियां रोकी हुई हैं। क्योंकि उन मोटर लारियों का प्रयोग गुण्डों के द्वारा किया जा रहा था इसी कारण शवों को उठाने के लिये उनको कहां फुर्सत थी। स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को हत्याकाण्ड के तमाशे देखने से फुर्सत नहीं थी। सफाई के दारोगा तथा सैनीटेरी इन्स्पेक्टर आदि सड़कों पर लाशों और मुर्दों को देख २ कर अपने घरों में घुसने जाते थे। मुर्दों और लाशों के नालियों में पड़े रहने से नालियां रुक गई थीं। उनका गन्दा पानी रुक कर

नालियों से निकल कर सड़कों पर आ रहा था। परन्तु फिर भी नगर की स्वास्थ्य विभाग कमेटी ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। कलकत्ता कारपोरेशन के चीफ़ एक्जीक्यूटिव अफसर श्री शैलपति चटर्जी ने अपने स्टेटमैंट में कहा कि कलकत्ते की सारी नालियां मुर्दों से भर गई थीं। मुर्दों के ढेर को लोहे की रस्सियों तथा फावलियों से हटा कर बड़ी कठिनाई से पानी बहाने का कार्य चलाया जा रहा है। जब कारपोरेशन से पूर्णरूप से प्रबन्ध न हो सका तो 'रक्षा समिति' ने लाशों को कुर्गति से बचाने के लिए हुगली या कोई पास के नालों में लाशों को बहाने का प्रबन्ध किया और जिनके जलाने या दफ़न करने का ठीक प्रबन्ध हो सकता था उनकी अन्त्येष्टि क्रिया भी की गई। सरकार की ओर से मुर्दों के क्रियाकर्म का कोई प्रबन्ध नहीं था। और न उनको उठा कर एकान्त स्थान पर रखने का ही।

लूट में पुलिस के साथ यूरोपियन और ऐंग्लो इन्डियन भी शामिल

प्रातः ही लूट पाट आरम्भ हो गई थी। पुलिस दिखाई भी नहीं देती थी और हिन्दुओं को अधिक आश्चर्य तो इस बात पर था की जहां (काग्रेस को) स्वाधीनता दिवस आदि पर वह आन बान और शान के साथ तैयार दिखाई देती थी वहां इस अवसर पर बिल्कुल ग़ायब थी। मानों मुस्लिम दंगाइयों को हिन्दू पीड़ितों से निबट लेने की मनमानी छुट्टी दे दी गई थी। लेकिन जब पुलिस आई भी तो वह लूट-मार अग्निकाण्ड और हत्याकाण्डों को देखती रही।

वास्तव में पुलिसवालों ने जिनमें कुछ यूरोपियन और ऐंग्लोइण्डियन सार्जेंट भी शामिल थे। माल असबाब, रुपया

पैसा, फर्नीचर जवाहरात और अन्य कीमती चीजों को दिल खोल कर लूटा। यह भी कहना चाहिये कि ऐंग्लोइण्डियनों ने इस आम लूट में भाग लेकर नैतिक हीनता का परिचय दिया। कितने ही नागरिकों ने पुलिस और दूसरे लोगों द्वारा की गई इस लूट के चित्र लिए हैं। ये चित्र जांच करने वाले अधिकारियों के सामने रखे जाने चाहिये। यदि पुलिस वालों के घरों की तलाशियां ली जांय तो लूट का बहुत काफी माल बरामद होगा।

"यह तो केवल शुरुआत है।"

हिन्दू और सिख नागरिकों की ओर से एक गम्भीर शिकायत यह है कि प्रधान मन्त्री श्री सुहरावर्दी खुद पुलिस कोतवाली में मौजूद थे। जब कि हत्याकाण्ड, अग्निकाण्ड और रक्तपात, लूट मार की शिकायतें उन तक पहुंच रही थीं। परन्तु फिर भी उक्त महाशय खुद ही सबको हिदायतें दे रहे थे। नगर के प्रमुख लोगों ने २५०० स्थानों से दंगे की सूचना टेलीफोन द्वारा दी परन्तु टेलीफोन के चोंगे उठाकर कानों पर लगाए और उनको वापिस फोन पर रख दिया। इससे यह ख्याल बना कि मुसलमानों की सहायता की मांग तुरन्त पूरी की गई; लेकिन हिन्दू पीडितों की पुकारों की उपेक्षा की गई। यह बात किसी दूसरी तरह समझ में नहीं आती कि उन्हीं तिथियों को शुक्र और शनिवार को दोनों दिन मुसलमानों की भीड़ें बे रोक-टोक बड़े पैमाने पर लूट-पाट और अग्निकाण्ड में लगी रही और पुलिस के किसी अधिकारी की सूचना पर उनको नहीं रोका गया।

लोगों ने सैकड़ों बार स्वयं जाकर तथा तार और टेलीफोन द्वारा गवर्नर को सूचना दी। परन्तु उसने ख्याल किया कि मन्त्री-मण्डल के काम में दखल देना उनके लिए विधान विरुद्ध होगा।

जबकि कांग्रेस के किसी भी अवसर या अधिवेशन बिना किसी इरादे के ही नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया। सुहरावर्दी ने यह घटना चक्र चलते देखकर कहा—"यह तो केवल शुरुआत है।" इसका तात्पर्य तो यह है कि वह इसे अधिक रक्त होने की आशा में थे। वहां के वातावरण की परिस्थिति का अध्ययन करने वाले लोगों ने यह भी सुना था कि साम्यवादी किस प्रकार कानून भंग करने वाले लोगों को सहायता दे रहे थे और अराजकता उत्पन्न करने में सुहरावर्दी का हाथ बंटा रहे थे। सुहरावर्दी ने अपनी आंखों के सामने सारा दृश्य देखा परन्तु उसके हृदय पर इसका कोई प्रभाव न पड़ा।

अस्पतालों में स्थान नहीं

'हिन्दू रक्षा समिति' के कई सदस्य आहत तथा घायल व्यक्तियों को लेकर कलकत्ते के प्रमुख दो अस्पतालों में पहुंचे। वहां के इञ्चार्ज डाक्टर लीगी मुसलमान थे। उन्होंने अपने कर्त्त-व्य को पालने के लिए हिन्दू अधमरे (घायलों) को दाखिल करने या उनकी चिकित्सा करने से इन्कार कर दिया—हालांकि उन अस्पतालों में बहुत काफी स्थान पर्याप्त था। इलाज की बात छोड़कर उनकी फ़स्ट एड करने के लिए भी तैयार नहीं थे। और जब अस्पताल के अधिकारियों पर अधिक जोर दिया गया तो उन्होंने बड़े रूखे शब्दों में उत्तर दिया कि चीफ मैडिकल आफिसर ने दंगाई लोगों की चिकित्सा करने के लिए हमें अभी कोई आज्ञा नहीं दी है—और न हमारे पास इतनी मात्रा में औषधि ही मौजूद है। जिससे हम प्रतिदिन आनेवाले मरीजों को छोड़ कर अकस्मात घायलों या रोगियों की चिकित्सा कर सकें।

इस बात को सुनकर नगर के प्रमुख लोगों ने अस्पताल अधिकारियों पर काफी क्षोभ प्रकट किया ।

दूसरे अस्पतालों में भी जाकर देखा तो वहां मुसलमान गुण्डों की परिचर्या और चिकित्सा भलीभांति की जा रही थी । हिन्दुओं को भर्ती करने के लिए कहा गया तो उन्होंने उत्तर दिया कि आहतों की संख्या इतनी अधिक मौजूद है कि हम और ज्यादा भर्ती नहीं कर सकते । कई हिन्दू मिलिट्री जवानों ने घायलों को अपने इन्डियन मिलिट्री अस्पताल में जाकर भर्ती कराया । उस क्षेत्र में सैकड़ों लाशें सड़कों और नालियों में पड़ी सड़ रही थीं ।

पुलिस ने भी जेब गर्म की

जनता को दंगे के कारण कष्ट और कठिनाइयों का सामना तो करना ही पड़ा । धन-माल लुटा, जन की भी हानि हुई । अग्निकाण्ड का भी मुकाबला करना पड़ा, पिताओं को पुत्र और स्त्री से हाथ धोना पड़ा, माताओं को पुत्री और पुत्रों के शोक और खेद भी सहने पड़े । हिन्दू जनता को अपनी पुत्री और स्त्रियों की बेहुर्मती, बलात्कारी और बेइज्जती भी आंखों के सामने देखनी पड़ी । ये मुसीबतें तो उनके ऊपर से गुजरी ही और जनता को सहनी ही पड़ा । परन्तु इनके अतिरिक्त पुलिस का एक और अत्याचार भी बर्दाश्त । करना पड़ा और वह उनका जेब कतरना तथा लूट-खसोट करना । इस दंगे के कारण कलकत्ता नगर में हलचल बहुत काफ़ी होगई थी । लोग अपनी जान बचाने की फ़िक्र में इधर से उधर मारे मारे फिर रहे थे । दंगे के समय तो पुलिस का कुछ पता भी नहीं था परन्तु अब पुलिस का पहरा प्रत्येक स्थान पर विद्यमान था—कोई चौकी पुलिस के पहरे से खाली नहीं थी, इसका मूल कारण था उनकी टेंट गर्म होना । क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपने प्राण बचाने के लिए कलकत्ता से बाहर जाने का प्रयत्न कर रहा था, हिन्दू लोग पैसे को पानी की भान्ति बहा रहे थे । जान बचाने के लिए पुलिस वालों ने जो कुछ भी मांगा । जनता के भयभीत व्यक्तियों ने वह ही दे

दिया। उसी समय ब्लैक मार्कीटिंग भी खूब हुआ—क्योंकि पुलिसवालों ने पब्लिक में से आदमी पकड़कर उनको अपना दलाल बना लिया-कुछ तो वे लोग पुलिसवालों को दे देते थे और कुछ स्वयं ही खा जाते थे। सवारियों का मिलना कठिन हो गया था। जिस भाव में भी कोई लारी देने को तैयार होता उतने में ही जनता के लोग तैयार होगए। बालीगंज से बड़ा बाजार (५-६ मील) अथवा हवड़ा स्टेशन पहुंचाने के लिए एक हजार रुपया तक दिया गया। बांस तल्ला स्ट्रीट से हवड़ा जो एक मील भी नहीं है; वहां का मार्ग बिल्कुल सुरक्षित है—वहां से जाने वाले लोगों ने १२-१२ रुपये टैकसियों का देकर मार्ग तै किया। और ज्यूं-त्यूं करके अपनी जानें बचाई।

९३ धारा लागू की जाय

हत्याकाण्ड ने इतनी भीषणता धारण करली थी कि इसको रोकने के लिए धारा ९३ लागू कराने पर कलकत्ता की जनता उतारू होगई। वहां के अधिकारियों को बार २ धारा लगाने के लिए सूचित किया गया परन्तु मन्त्री मण्डल ने इस पर कोई गौर नहीं किया। इसके प्रमाण के लिए स्टेट्समैन, समाचार पत्र ने लिखा हैकि कलकत्ते की दुर्घटनाओं को देखते हुए धारा ९३ लागू करने पर अवश्य विचार होना चाहिए। वर्तमान मन्त्रीमण्डल तो अयोग्य आदमियों का समूह है या उससे भी अधिक बुरा है। "अमृत बाजार पत्रिका" ने लिखा है कि हिन्दू-मुस्लिम में अब भी काफी तनातनी जारी है हालत सुधरने को नहीं करती। गर्वनर को यह बात घोषित कर देनी चाहिए कि पुलिस और सेना पर मन्त्री मण्डल का कोई अधिकार नहीं है।

'डान' पत्र लीगी और जिन्ना ही छाप का होने के कारण

लिखता है कि मुसलमान हिन्दुओं से चौगुने मारे गये हैं। इसमें कलकत्ता के मन्त्री मण्डल का कोई दोष नहीं है। 'हिन्दुस्तान टाइम्स' ने लिखा है कि सुहरावर्दी जनता का सबसे बड़ा दुश्मन है।

लन्दन से **'न्यूस्टेट्समैन एण्ड नेशन'** ने लिखा है कि यह स्पष्ट है कि उन मुसलमान बलवाइयों ने जिन्हें मोटर लारियां भी मिली हुई थ और जो छुरों से लैस थे, हिन्दुओं पर पहले स बनी योजना के अनुसार हमला किया और १६ अगस्त को इस मौके को अच्छा समझकर छुट्टी भी करदी इसका उत्तरदायित्व लीग पर है। इसके मन्त्रीमण्डल में कुछ परिवर्त्तन होना अनिवार्य है। इस प्रकार की घटनाओं से किसी देश में कोई उन्नति या उत्थान की कोई आशा अगले जीवन में होती नजर नहीं आती।

अमेरीका के कई पत्रों ने आलोचनात्मक दृष्टिकोण से लिखा है कि लीग की यह नीति घृणास्पद है। इस प्रकार के अत्याचार करने के पश्चात् एक कौम दूसरे का सदैव शत्रु रह सकती है तथा ऐसी जाति कभी भी अपनी विपक्षी जाति के सम्बन्ध कोई भी भलाई की बात नहीं सोच सकती है! इस प्रकार की बातों से व्यापार में भी हानि होती है।

लीगियों की गद्दारी

कलकत्ते के साम्प्रदायिक युद्ध के सम्बन्ध में बिहार के प्रमुख उद्योगपति और जमीदार रायबहादुर श्यामनन्दन सहाय के भाई श्री हरनन्द सहाय ने बताया है कि दंगे के दिनों में एक दिन श्री किरण शंकर राय और मियां सुहरा वर्दी मोटर पर सफेद झंडा लगाए गश्त लगाने जा रहे थे कि भीड़ ने मोटर रोक ली और सुहरावर्दी को मोटर से बाहर खींच लिया। श्री किरणशंकर राय उनके शरीर पर चिपट गए और उन्होंने हिन्दुओं से कहा कि पहले मुझे मार डालो तब उनको कुछ कहना। इस पर भीड़ ने मियां सुहरावर्दी को छोड़ दिया।

इस प्रकार एसोसिएटेड प्रेस का समाचार है कि एक दिन बंगाल असेम्बली के कांग्रेस दल के मन्त्री श्री मजुमदार मियां सुहरावर्दी के साथ उनकी मोटर से क्षतिग्रस्त क्षेत्रों को देखने निकले। लौटते समय सुहरावर्दी ने उन्हें उनके मकान के पास मोटर से उतार दिया। मोटर से उतरते ही मुस्लिम गुण्डों ने उन्हें घेर लिया और पीटना शुरू कर दिया। मियां सुहरावर्दी ने उन गुण्डों से उफ़ भी न कहा—और स्वयं वहां से चलते बने, जनता के नेताओं की दो तस्वीरें हैं। ये सब हरकतें सुहरावर्दी की थी।

घोर अराजकता

मौलाना अबुल कलाम आजाद कलकत्ते से दिल्ली जाते वक्त चकेरी हवाई अड्डे पर कुछ देर तक रुके थे। लोगों के कलकत्ता के हालात पूछने पर आपने कहा कि वहां की हालत बहुत ही गम्भीर और हृदय द्रावक है। सड़कों पर खुली लड़ाई हो रही है। मालूम होता है कि कलकत्ता में कोई शासन व्यवस्था ही नहीं है। कारण पूछने पर आपने बताया कि १६ अगस्त को बंगाल सरकार लीगी मन्त्री मण्डल द्वारा छुट्टी की घोषणा कर देने के कारण ही भयंकर दंगा हुआ।

१२०० स्थानों पर आग

प्रथम दिन की अर्धरात्रि को फायर ब्रिगेडवालों (दमकल-वाले) को ३५० स्थानों पर जाकर आग बुझानी पड़ी। इस प्रकार गत तीन दिनों में १२ सौ से अधिक स्थानों पर आग बुझाई गई। २५२ जगहों से आग लगने की सूचना दी गई, उनकी सूचना पर कोई भी फायर ब्रिगेड नहीं आई। दक्षिण कलकत्ता में मोटर कम्पनी के एक गैरेज में आग लगाई गई, जिसमें कई लाख की हानि हुई। केन्द्रीय कलकत्ता में एक राशन के गोदाम में भी उसी दिन आग लगाई गई। चितरंजन एवेन्यू के एक होटल में आग लगादी गई।

बच्चों तथा पुरुषों को आग में झोंका गया तथा कोठरी में बन्द कर सैकड़ों व्यक्तियों की हत्या

कलकत्ता की घटनाओं का वर्णन करते हुए एक मुस्लिम कांग्रेसी सज्जन ने अपनी प्रत्यक्षदर्शिता का अनुभव बताया है कि उत्तरी कलकत्ता की एक गुंजान बस्ती में एक लीगी भीड़ ने आग लगा दी थी। आग की लपटों और धूएं से दम घुटने के

कारण सर्व प्रथम बच्चे घरों से बाहर निकले। उसी भीड़ ने उन असहाय बच्चों को उठा कर आग में झोंक दिया। इसके पश्चात् युवक और बृद्ध हाथ जोड़े हुए बाहर निकले—उन्होंने उस भीड़ से बहुत ही क्षमा याचना की किन्तु उस निर्दयी साम्प्रदायिक भीड़ ने उन्हें लाठियों से पीट कर आग में झोंक दिया गया। जो स्त्रियां घर के एक कोने में खड़ी हुई थीं। उनको गुण्डों ने बाहर निकाला और कुछ को उठा कर ले गया और उनके साथ बलात्कार किया उनमें से कुछ को मौत के घाट उतार दिया।

ब्लैक हाल

लाल बाजार थाने के एक बाजार पर एक भीड़ ने जबर्दस्ती कब्जा कर लिया। अन्दर लोग चीखने चिल्लाने लगे, उस लीगी भीड़ ने भीतर से चारों फाटकों का ताला बन्द कर दिया। बाजार के भीतर ३५० व्यक्तियों में से एक भी बाहर नहीं निकल सका, उनको बिना जल-भोजन के १८ अगस्त तक (तीन दिन) उसी स्थान पर बन्द रखा गया। उनमें से केवल २० व्यक्ति बचे जिनको रक्षा समिति ने अस्पताल भेजा।

इसी प्रकार डेढ़ हजार व्यक्तियों की भीड़ ने १८ अगस्त को 'हिन्दुस्तान-स्टैंडर्ड' और 'आनन्दबाज़ार पत्रिका' के आफिसों पर दो बार हमला किया। पहली बार तो उस भीड़ को अपने प्रयास में सफलता नहीं मिली। किन्तु द्वितीय वार सन्ध्या समय भीड़ ने उक्त पत्रों के आफिसों में आग लगादी। जिसमें दफ्तर के कई मनुष्य अग्निदेव की भेंट हो गये और उन्होंने संपत्ति को लूट लिया। कागज़ गोदाम की आग २४ घन्टों के पश्चात् बुझाई जा सकी। दोनों पत्रों के आफिसों के लगभग २५ व्यक्ति घायल हुए।

धर्मतल्ला स्ट्रीट पर 'कमलालय' स्टोर डेढ़ हजार व्यक्तियों

द्वारा लूटा एवं जलाया गया। अनुमान लगाने पर पता चला है कि स्टोर वालों को कई लाख रुपये की क्षति पहुंची है।

सड़कों पर लाशें

सहायता कार्य के लिए नगर में गश्त करने वाले स्वयं सेवकों ने बताया है कि नगर की विभिन्न बस्तियों में विशेष कर टालीगंज क्षेत्र में सड़कों पर लाशें पड़ी हैं गढ़िया हाटरोड़, नान्दी स्ट्रीट और लसडाउन रोड़ पर भी लाशें पड़ी हैं।

बंगाली पत्र 'भारत' ने समाचार दिया कि कल १६ अगस्त की रात को ३ सौ व्यक्ति मरे और ४ सौ घायल हुए। इस प्रकार तीन दिनों में कुल ११०० व्यक्ति मरे और ४५०० घायल हुए—जिनमें से सड़कों पर लगभग ८०० लाशें पड़ी सड़ रही थीं। स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारियों को जनता की ओर से कई बार सूचना दी जा चुकी थी परन्तु उनके कानों अबतक कोई जूं नहीं रेंगी थी। करोड़ों रुपये की क्षति का अनुमान है। अनाथ स्त्रियों तथा बच्चों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया जाता था।

समाचार पत्रों का प्रकाशन स्थगित कर दिया

जब दिनों दिन दंगे की दशा चिन्ताजनक होती गई तो लीगी मन्त्री मण्डल ने अपनी बदनामी और बेइज्जती होने से बचाने के लिए समाचार पत्रों पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया कि कलकत्ता का हाल कोई पत्र न प्रकाशित करें अथवा अपने समाचार पत्र को दंगे के होने तक के समय के लिए प्रकाशन स्थगित कर दें। पत्रों के लिए यह सम्भव था दंगे के कारण बहुत से समाचार पत्रों का प्रकाशन स्थगित करना पड़ा।

कई हिन्दू पत्रों से जमानत मांगने की धमकी भी दी गई तथा उनके आफिस की तलाशी भी ली गई। कई समाचार पत्रों

पर झूठे इलजाम लगा दिये। आपत्तिजनक साहित्य रखने के दोष में आरोपित कर लिया यह था लीग का न्याय।

श्री मणीन्द्रनाथ बनर्जी की मृत्यु

अलीपुर क्षेत्र के अतिरिक्त ज़िला तथा सेशन जज श्री मणीन्द्रनाथ बनर्जी भी कलकत्ते के दंगे में मारे गये।१७ अगस्त को जब आप घर से बलवाइयों को उनकी हरकतों से बाज रखने के लिये शान्ति स्थापित करने निकले। उन्होंने देखा कि दंगाई लोग एक हिन्दू लड़के का पीछा कर रहे हैं। आपने उक्त लड़के को शरण दी। परन्तु मुस्लिम लोगो दंगाइयों ने आपको छुरों से घायल कर दिया। जिस के परिणाम स्वरूप आपकी मृत्यु २५ अगस्त को हो गई।

कलकत्ता के पीड़ितों की सहायता

शहर के प्रमुख नागरिकों ने दंगों से उत्पीड़ित व्यक्तियों को पुनः उनके निवास स्थान पर बसाने के सम्बन्ध में विचार किया और बी.सी. घोष की अध्यक्षता में एक सहायता संघ की स्थापना की गई। इस संघ के प्रमुख पदाधिकारी डा. विधानचन्द्रराय और कलकत्ता विश्वविद्यालय के वायसचान्सलर श्री पी. एन. बनर्जी हैं।

दंगे के अभियुक्तों को कानूनी सहायता देने के लिए एक और रक्षा समिति १७ अगस्त को बनाई गई है। इस अवसर पर शरतचन्द्र बोस, डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी और श्री नलिनीरंजन सरकार भी उपस्थित थे श्री एन० के० वसु इस समिति के अध्यक्ष हैं।

जिन निर्दोषियों को लीगी पालिसी ने अपराधी ठहराया है उनसे इनको सुरक्षित करने के लिये यह समिति बनाई गई। इसके विरोध में मुस्लिम समिति पहले से ही लीगी मन्त्री मण्डल की गोद में पोषित हो चुकी थी!
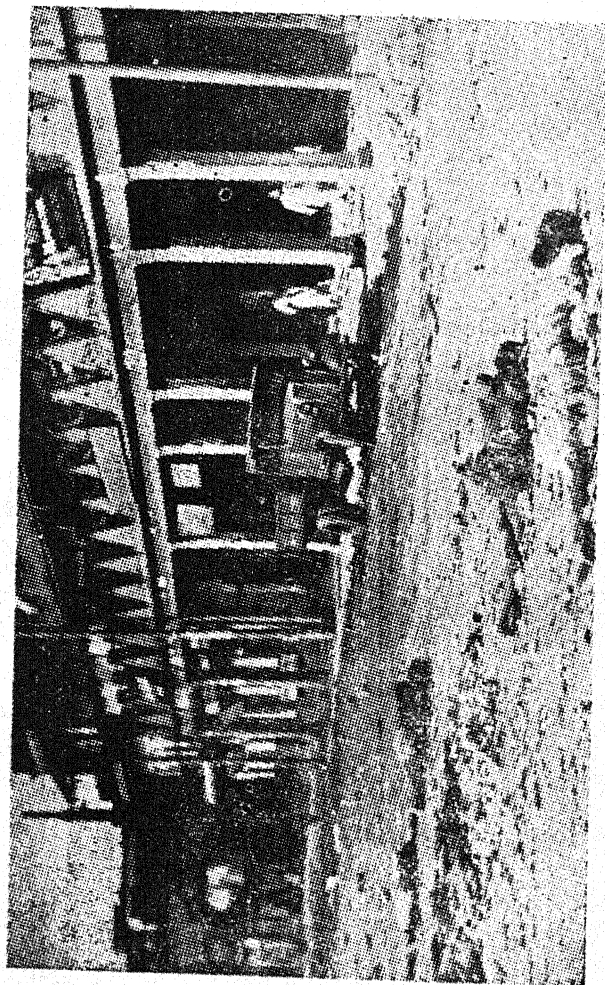
कलकत्ता में गुण्डों द्वारा जनसंहार का हृदय-विदारक दृश्य - क्या यह आसानी से भुलाया जा सकेगा ?

कलकत्ता के भीषण काण्ड की जाँच के लिए वायसराय का दौरा—

बंगाल असेम्बली में विरोधी दल के नेता श्री किरणशंकर राय, डा० विधानचन्द्र, डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी और श्री नलिनीरंजन सरकार ने १६ अगस्त सन् ४६ को संयुक्तरूप में ४५ मिनट वायसराय से भेंट की।

उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि कलकत्ता में जो सम्पत्ति की अपार क्षति हुई तथा ४०,००० व्यक्तियों को प्राणों से हाथ धोना पड़ा है। उसकी जांच के लिये एक कमीशन नियुक्त किया जाए। उन्होंने वायसराय के सामने दंगे के मुख्य कारणों तथा क्षति, विध्वन्स और हत्याओं के सम्बन्ध में प्रकाश डाला। ऐसी घटनाओं को फिर न होने से रोकने के उपायों पर भी प्रकाश डाला गया। उन्होंने वायसराय से प्रार्थना की कि शरणार्थियों को स्थान देने के लिये एक सैनिक कैम्प खाली करवा दिया जाए। शहर की बदबू और गन्दगी की ओर ध्यान आकर्षित कराया गया तथा साधारण स्थिति स्थापित करने के लिये तत्काल ही कार्रवाई के लिये ज़ोर दिया।

नवनिर्मित अन्तःकालीन सरकार के सदस्य श्रीशरतचन्द्र बोस ने भी इस सम्बन्ध में वायसराय से काफी देर तक बातचीत की। बंगाल असेम्बली में यूरोपियन दल के नेता ने भी वायसराय से भेंट की और कलकत्ता की सारी स्थिति उनके सामने रखी और उस नेताने बताया कि मुस्लिम लीग ने किस प्रकार हिन्दुओं को

क्षति पहुंचानेकी अनधिकार चेष्टा की और यहभी बताया कि यह भारी अन्तर्कालीन सरकार बन जानेके कारण लीग को जलन थी।

लीग द्वारा हत्याओं को प्रोत्साहन

लीग की ओर से हत्याओं सम्बन्धी प्रोत्साहन तो आरम्भ से ही चल रहा हैं। लीग की नीति है कि जो उसके साथ मिल कर कार्य करे वह तो मित्र है अन्यथा सब उसके शत्रु हैं और वे देश-द्रोही तथा गद्दार हैं। लीग की घृणास्पद नीति का अध्ययन करते हुये कहना पड़ता है कि पिछले दिनों सर शफात पर कुछ मुस्लिम युवकों द्वारा घातक आक्रमण करने तथा सैयद अलीजहीर को हत्या की धमकी देने के प्रश्न पर केन्द्रीय सरकार गम्भीरता पूर्वक विचार करे। ये दोनों सज्जन नई अन्तःकालीन सरकार के सदस्य हैं। इसो प्रकार आई० एन० ए० के मेजर-जनरल शाहनवाज की हत्या के सम्बन्ध में एक योजना का युक्त प्रान्तीय पुलिस ने आश्चर्य जनकरूप से उद्घाटित किया है।

सरकार को मि० जिन्ना द्वारा २६ जौलाई ४६ को अखिल भारतोय मुस्लिम लीग कौंसिल के अधिवेशन में दिए निम्न लिखित भाषणों पर भी विचार कर रही है:—"हम इस बात को कभी स्वीकर नहीं कर सकते कि गद्दार मुस्लमानों को कांग्रेस वायसराय की कार्यकारिणी कौंसिल में सम्मिलित करे ब्रिटिश सरकार ने अपने देश के साथ क्या किया? जान एमरी और लाड हा हा के साथ कैसा व्यवहार किया? उन्हें अन्त में फांसी की सजा ही तो दी गई। देशद्रोह के अपराध में इसीप्रकार अन्य अंग्रेजों को फांसी पर लटका दिया गया। मैं भी गद्दार मुसलमानों की वायसराय की कार्य-कारिणी में नियुक्ति स्वीकार नहीं कर सकता। क्या जिन्ना साहब के इस प्रकार के वक्तव्य हत्याओं तथा बलवों को प्रोत्साहन देनेवाले नहीं समझे जाते?

लीग का विष-वमन, कांग्रेस के विरुद्ध प्रचार

हिंदुओं के प्रति ग्लानि और अश्रद्धा बवण्डर

नरसिंह गढ़ में जनाब होम मेम्बर साहब मुल्ला अब्दुल कादिर की प्रेरणा द्वारा मुस्लिम लीग, जिसके सैयद अमजद-अली सा० टीचर हाईस्कूल के सेक्रेटरी हैं, स्थापित हुई ता० ७-७-४० को मि० आशफ शमीही, अहमदअली और अनवर मसूद भोपाल से आये। और मुस्लिमलीग का जलसा बड़ी शान से किया। जिसमें उन्होंने खान शाकिर अली खां, कांग्रेस और रियासती प्रजामण्डल के कार्यकर्त्ताओं के खिलाफ खूब जहर उगला। और मध्य भारत के प्रजामण्डल कार्यकर्ताओं को जरायम पेशा आदि नफरत और तआस्सुब भरे अलफाज कहे। अभी हाल में मि० शब्बीर अहमद टीचर हेड मोलवी हाई-स्कूल अब्दुल हमीद खां सा० पेशावर आ० पी० जी तहसील पधारे। तबलीगी और मजहबी जहर से बुझी हुई तकरीर करते हुए खुजनेर छीपीहेड़ा का दौरा किया। मस्जिदों में जहरीली और मुत्तासुबाना तकरीरें कीं। और हर मुकाम पर लीग का का संगठन कायम किया।

रियासत के इस तरह के इखराजात भुगतने की एक कमेटी बनाई गई है जो गुण्डेशाही का साथ देती है और हिन्दुओं से मुसलमान बनाने के लिये हौसला अफजाई करती है।

ता० १४-७-४६ को आल इन्डिया स्टेट्स मुस्लिम लीग के

प्रेसीडेण्ट मि० आलम यहां पर तशरीफ लाये और गेस्ट हाउस पर ठहराए गए। जिनकी सरकारी तौर पर मेहमानदारी की गई, रात को मस्जिद में उनकी तकरीर हुई जिसमें मुस्लिमलीग की कलकत्ता की बहादुरी बयान की गई, और मुस्लिम जजबात को उभारा गया। और साथ में यह भी कहा गया कि जहां तक हो सके, हिन्दुओं को हर तरह से नुकसान पहुंचाया जाय, उनके घरों को लूटा जाय, उनके घरों में आग लगाई जाय-- उनके बीबी बच्चों को जबर्दस्ती मुसलमान बनाया जाय। औरतों के साथ व्यभिचार या बलात्कार करके उनको अपने घरों में डाला जाय। हिन्दुओं को जितनी तादाद में मारा जायगा तुम्हें उतना ही सवाब मिलेगा। और अगर हिन्दू औरतों को मुसलमान बनाओगे तो तुम्हें (मुसलमानों को) जन्नत मिलेगी। कांग्रेस हिन्दुओं की जमाअत है। इसको जितना भी बदनाम किया जाय थोड़ा है। हम मुस्लिम लीग के साथ 'अली' का झंडा हिन्दुस्तान पर देखना चाहते हैं। और किसी का नहीं।

लीग का आन्तरिक डायरेक्ट एक्शन

साप्ताहिक हुरैयत (२-११-४६)

लीग ने गैर लीगी मुसलमानों और हिन्दुओं के विरुद्ध जो योजना शुरू कर रखी है उसके परिणाम स्वरूप सहस्त्रों हिन्दू मुसलमान कत्ल हो चुके हैं. हजारों बेगुनाह स्त्रियां विधवा हो गयीं। हजारों निरपराध बालक अनाथ हो गये। मगर अभी तक प्रांतीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय (सेंट्रल गवर्नमेंट) ने लीगी लीडरों को सर्व साधारण में शांति स्थापित करने के लिए न कोई मुकद्दमे चलाए गये न इन को जेलों में बन्द किहा गया,

जिसका समर्थन सन् १९४२ का आंदोलन आरम्भ होने से पूर्व अन्धाधुन्ध वे रोक टोक गिरफ्तारियों का क्रम मि० जिन्ना असेम्बली में कर चुके हैं।

नेहरू गवर्नमेंट के प्रियमर की मांग पर लीग इन्ट्रिम गवर्नमेंट में सम्मिलित हुई। परन्तु ज्यों ही सम्मिलित अधिकारों के सम्बन्ध में प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी कोठी पर मीटिंग बुलाई तो मि० लियाकत अली ने उसमें सम्मिलित होने के बजाये यह लिखा कि "यह जलसा मेरे मकान पर होना चाहिये।" अर्थात् अनादर और लज्जा पूर्ण हार होने के पश्चात् भी आप यह स्वप्न देख रहे हैं कि आपका गौरव पं० जवाहरलाल नेहरू के बराबर है जो अपने साथ अवर्णनीय बलिदानों के उदाहरण का रिकार्ड रखते हैं। इस केबनेट के हैड हैं। जिनके साथ १४ में से नौ वोट हैं। जो लार्ड वेवल के पश्चात् इस गवर्नमेंट के प्रधान हैं जिसने इतनी कोशिश और परिश्रम के पश्चात् यह मिनिस्ट्री स्थापित की है।

अगर मि० लियाकत अली की यह हरकत वायसराय की साजिश से नहीं है तो कोई कारण नहीं मालूम होता कि मि० लियाकत अली पर अविश्वास पात्र होने का समर्थन मन्त्रि-मण्डल की मीटिंग में रखकर इनसे सदैव के लिए छुटकारा क्यों न प्राप्त किया जाये? और मन्त्रि मण्डल के काम में दखल देने का जो भय उत्पन्न होगया है उससे मन्त्रि मण्डल को क्यों न बचाया जाये? और मि० लियाकत अली के स्थान पर किसी कांग्रेसी मुसलमान को क्यों न नियत किया जाये? शेष लीग के चार मन्त्री भी मि० लियाकत अली का ही समर्थन करें उनके साथ भी वह ही व्यवहार किया जाय!

और इसके साथ भारत को अशान्ति से सुरक्षित रखने के लिए लीग की पहली और दूसरी पंक्ति के लीडरों की ज़बान-बन्दी और उनकी बुरी चाल और कूटनीति पर सख्त पाबन्दियां क्यों न लगादी जांय ? और यदि ये लोग इसके विरुद्ध जांय तो तुरन्त ही इन पर धारा लागू करके मुकदमे चलाये जांय, जिससे देश इनकी शरारत से सुरक्षित हो जाये ! और ये लोग देश की उन्नति में रोड़े न अटका सकें।

अगर नेहरू सरकार देश को अशान्ति, दङ्गा, अत्याचार, लूट-पाट, अग्निकाण्ड आदि से सुरक्षित रखना चाहती है तो इसको अब सख्ती बर्तनी पड़ेगी वरन् निर्दोषियों के रक्तपात और धन-जन की हानि से कोई नहीं बचा सकता। और यह विचार किया जाय कि तीसरे आदमी इस आग को बुझा देंगे-वे बुझायेंगे नहीं बल्कि आग को और भड़काकर फैलाने की कोशिश करेंगे-जिसका प्रभाव नई सरकार पर बहुत ही बुरा पड़ेगा।

बंगाल को बचाना ही चाहिये

नामक लेख श्री इलासेन अपने अनुभव और प्रत्यक्ष होने के नाते लिखा है—

उन्माद और मनोमालिन्य लोगों के हृदयों में खूब फैला हुआ है। दुर्घटना घटित होने की आशंका हो रही थी। लोगों को अपने पर पूरा विश्वास ही नहीं हो रहा था। नगर में चारों ओर हुल्लड़ और दंगे की ध्वनि आ रही थी। हिन्दू व्यापारी अपने सुरक्षित रहने के लिए भागते फिर रहे थे। साथ में उनको अपने परिवार को बचाने की चिन्ता सता रही थी। बाजार बिल्कुल चौपट था---लीगी गुण्डों तथा पुलिस के सिपाहियों के अतिरिक्त इक्के दुक्के आदमी नजर आ रहे थे। फुटपाथ खाली पड़ा था। शहर का वातावरण धूमाच्छादित-

सा था। मुसलमान दर्जी ने अपने हिन्दू ग्राहकों से कहा कि हमारी 'कमेटी' ने कहा है कि तुम हिन्दुओं के मौहल्ले में कल १६ अगस्त को मत जाना।

अविश्वसनीय कहानियाँ

जो लोग दंगे से पीड़ित हैं जब वे अपनी कहानियां सुनाते हैं तो अब विश्वसनीयसी प्रकट होती हैं। मवालपुर में जो एक हिन्दू बस्ती है वहां कई सौ मुसलमान आ गए और उन्होंने हिन्दुओं को घेर लिया और बुरी तरह से मारा। वहां कई दिनों तक लाशें नालियों में पड़ी रहीं। उठाने वाले भी न मिले।

एक और घटना भी सुनी गई है। भरे पूरे-वैभवशाली हिन्दू घरों से बसे अपर-सरक्यूलर रोड़ की एक पिछली गली में कोई एक मुसलमान जिल्दसाज रहता था। मुहल्ले के अधिकांश लोगों से इसका मेल-जोल था। सभी जानते थे कि वह गरीब है और सदैव ही उसका कुछ न कुछ काम बना रहता है। अनेकों से वह काम पड़ने पर रुपये उधार ले आता था, और निश्चित समय पर अवश्य ही लौटा देता था। एक व्यक्ति से उसका लेन-देन का सम्बन्ध अधिक था। १५ अगस्त को यह जिल्दसाज अपने उस हिन्दू साहूकार के वहां पहुंचा और कुछ रकम उधार मांगी। सदैव जैसी साधारण बात समझकर उस व्यक्ति ने अपना कैशबक्स निकाल कर कहा—भाई, मैं आज ही बैंक से तीन सौ रुपये लाया था। दो सौ तुम ले जाओ और एक सौ मेरे लिये रहने दो। ज़िल्दसाज़ बिना रुपये लिए ही चला गया। २ दिन बाद १७ अगस्त को वहां जिल्दसाज़ अपने सदा के हितू और सहायक के यहां हाथ में नङ्गा छुरा लिए हुए पहुंचा और बोला कि जो कुछ तुम्हारे पास है वह सब मेरे हवाले करो,

नहीं तो यह छुरा तुम्हारे छाती के पार होगा। उस व्यक्ति को गहरा धक्का लगा, पर क्या हो सकता था। सब कुछ वहां छोड़ कर वह व्यक्ति किसी तरह अपने प्राण लेकर वहां से भाग आया। यह मजा है मुसलमान ड्राइवर, मुसलमान नौकर, मुसलमान दर्जी, मुसलमान चपरासी आदि रखने का।

सीधे जन्नत

सन् १९४३ ई० के भीषण अकाल के बाद अनेकों हिन्दुओं ने शहर में अकालग्रस्त मुसलमानों को अपने यहां रख लिया है। और उनसे नौकर का काम लेते हैं। पूर्वीय कलकत्ते के एण्टाली मुहाल में एक हिन्दू परिवार ने मुसलमान अकाल पीड़ित को इसी प्रकार रख लिया था। और वह व्यक्ति भी अच्छा नौकर सिद्ध हो रहा था। १६ अगस्त को वही नौकर अपने मालिक के पास खुली करौली हाथ में लिए हुए पहुंचा और बोला कि तैयार हो जाओ, मैं तुम्हें इसी समय मार डालूंगा, हतबुद्धि होकर मालिक ने कहा—नहीं भाई, यह काम तुम अपने आप न करो, किसी और को बुला लो। नौकर ने उत्तर दिया—नहीं, मैं ही खुद ऐसा करूंगा। क्योंकि हमें मौलवी द्वारा बताया गया है कि हिन्दू काफिर को मारने वाले मुसलमान को 'सीधी जन्नत' नसीब होती है। यह वही अकाल पीड़ित मुसलमान था जिसे कि उस हिन्दू ने अर्धमृतावस्था में नाली से उठा लाकर, सेवा सुश्रुषा करके, भोजन और कपड़े देकर फिर से जीवनदान दिया था।
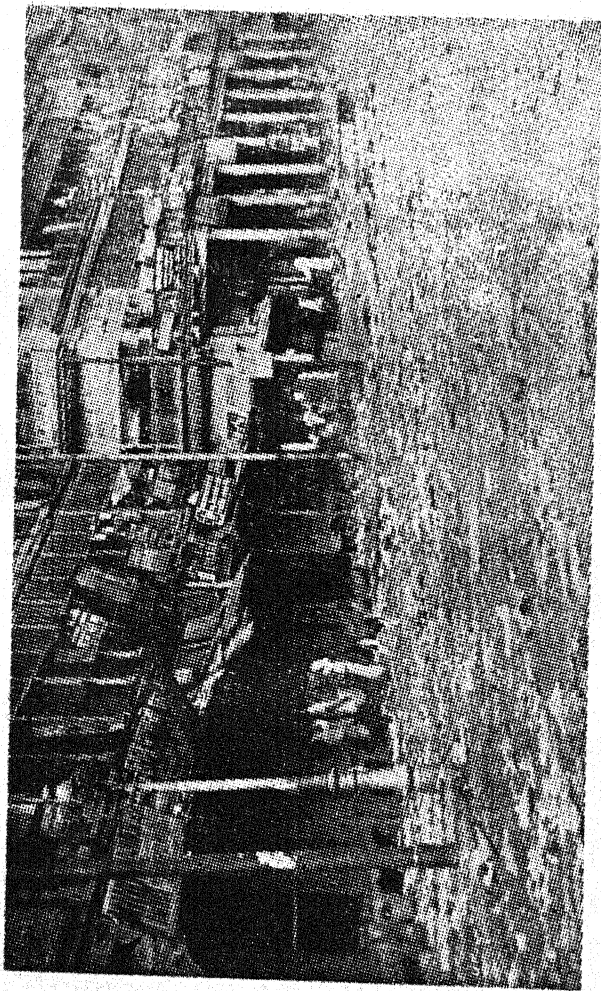
कलकत्ता में बिड़ला खादी भण्डार वर्षों से जनसेवा कर रहा था यह किस भांति लूटा गया—
हृदय हीन भी एक बार इस दृश्य को देख कर बिना आंसू बहाये नहीं रह सकता।
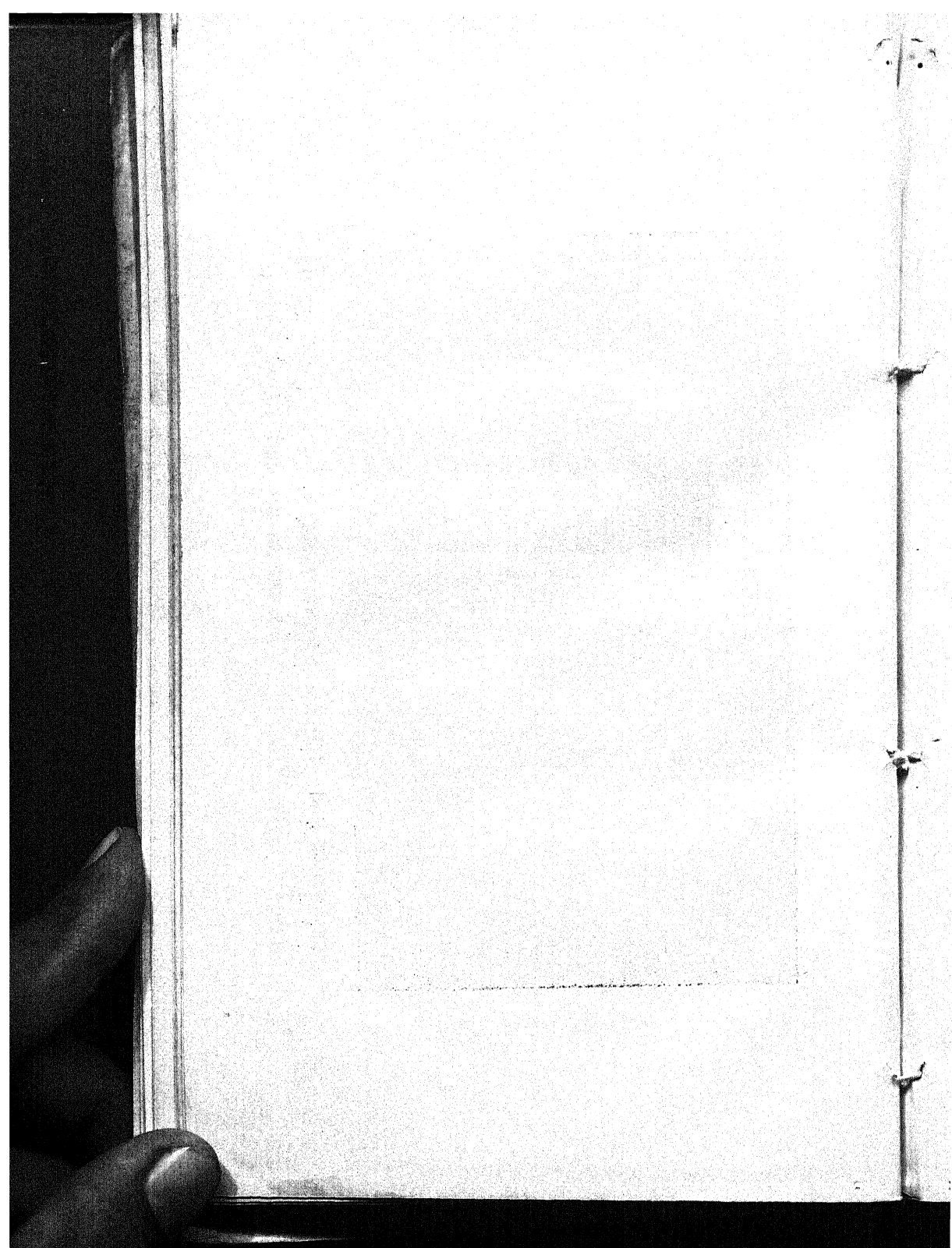
कलकत्ता के उपद्रव में नारी की वीरता

बड़ा बाजार एक्सचेंज की आपरेटर कुमारी नारी मुखिया जब अपने काम के लिए आ रही थी कि भीड़ ने आपका पीछा किया। परन्तु कुमारीने इसकी कोई चिन्ता नहीं की। कई गुण्डों ने उसको पकड़ना चाहा परन्तु उसकी साड़ी फट जाने पर भी उसने एक गुण्डे को धराशायी कर दिया।

नलिनी (कुमारी) अपने आफिस से वापिस जा रही थी कि बीच में मुसलमान गुण्डों ने उसको रोका। रास्ते में तो कुमारी ने कुछ न कहा परन्तु जब वह इस प्रकार छेड़खानी सहती हुई एक सड़क के मोड़ पर आई तो उससे न रुका गया। उसने अपने सैंडिल निकालकर एक का पीछा किया तो अन्य गुण्डे उसको पकड़ना चाहते थे कि उस कुमारी को पीछे आता देखकर भागे तो आगे दीवार थी। उनमें कइयों के सिर फूट गये।

एक्सचेंज कार्य करने वाली कुमारी जगती विश्वास ने अपने साथ वाली चार लड़कियों को बचाया। परन्तु उनमें से एक को गहरी चोट लगी उसको तुरन्त ही अस्पताल पहुंचा दिया गया।

कुमारी एच. खाटून उसमें पत्थर ईंट के हमले से दफ्तर में बैठे २ घायल हुई। एक गुण्डे ने आकर उसको कुर्सी पर बैठे हुए पीछे से पकड़ना चाहा परन्तु कुमारी जी अकस्मात् संभल गई। उस गुण्डे के साथ १०-१२ और भी लीगी मुसलमान थे

कुमारी ने जब अपने को उनमें घिरा हुआ पाया तो अवसान से काम लिया कि उसने पास में रखी तेजाब की बोतल उठाकर उनके ऊपर छिड़कनी शुरु की। उनके शरीर तेजाब से जल गए। और कई उसी स्थान पर खेत रहे। शेष कई स्थानों पर जाकर रुक गये और फिर किसी की सहायता से अस्पताल भेजे गये।

हिन्दू स्त्रियों का जौहर

२५ अक्टूबर के समार से ज्ञात हुआ है कि नौआखाली जिले में मुस्लिम लीगी गुण्डों ने जो असहनीय अत्याचार किये हैं उनके परिणाम स्वरूप बहुत सी हिन्दू वीरांगनाओं ने अपने सतीत्व की रक्षा करने के लिए आग में जल कर अपने प्राणों की आहुति दे दी। जलते हुये मकानों की सुलगती हुई आग में कूद कर आत्महत्या करली। जब गुण्डो ने बलात्कार की सीमा पार करने की ठानी तो सती नारियों ने विष खाकर जानें दे दी। कुछ नारियां जो अपने प्राण बचाने के लिए जंगलों में भाग गई थीं उन्होंने वृक्षों में रस्से लटका कर अपने गले में फांसी लगा कर आत्म-त्याग कर दिया।

भारत की सती नारियों ने अपने सतीत्व की रक्षा करने के लिए आत्महत्या करली पर अपने को बलात्कारियों, व्यभिचारियों तथा गुण्डों के हाथों में न सौंपा। बहुत नारियों के साथ जबर्दस्ती करने के परिणाम स्वरूप उन्होंने कुओं में छलांग लगाई। तालाबों में कूद कर अपने गौरव को कायम रखा। कई स्त्रियां शान्ति होने के पश्चात वृक्षों पर से चढ़ी हुई, छुपी हुई उतारी गईं। आठ २ दस २ दिन की भूखी नारियों ने अपने नारीत्व की हिफाजत की। वाह री, भारत नारी!

वायसराय का दौरा

१५ अगस्त को वायसराय का लार्ड वावेल ने कलकत्ता का दौरा किया। उस दिन तीसरे पहर ६० मिनट तक दंगे की पूछ-ताछ की। उन्होंने मन्त्री मण्डल के सदस्यों से बातचीत की। प्रेस प्रतिनिधियों से उनकी जानकारी की रिपार्ट ली। सैनिक दस्तों से उनकी ड्यूटी के सम्बन्ध में पूछा।

मिलट्री से सेक्रेटरी कर्नल डी० एच० अरी मेजर जनरल एक्सन लेफ्टिनेंट जनरल बुचर, बंगाल के गवर्नर सरफ्रेडरिक वरोज आदि से भी मुलाकात करने पर दंगे के विषय में जानकारी की। ख्वाजा नाजीमुद्दीन, पेयर मि० मुहम्मद उस्मान, मिस्टर एम० ए० एच० इस्फाहाल बंगाल प्रान्तीय मुस्लिम लीगी के सेक्रेटरी मि० अब्दुल हकीम आदि ने वायसराय को मुलाकात के समय दंगे में मुसलमानों की क्षति से अवगत किया और दंगे के कारणों पर अपना विचार भी व्यक्त कराया। उन्होंने बताया कि हिन्दुओं ने मुसलमानों पर बहुत ही घृणास्पद अत्याचार किए।

लीग ने जो हत्याकाण्ड कलकत्ते में कराया उसकी छाया भारतवर्ष के अनेक नगरों पर पड़ी

आसनसोल (रानी गंज)

आसनसोल से १२ मील दूर रानीगंज स्थान है वहां १६ अगस्त से २३ अगस्त तक घमासान दंगा होता रहा। हिन्दुओं को छुरों से घायल किया गया। औरतों को घर से निकाल कर उनके साथ बलात्कार और अत्याचार किया गया। स्थिति अब तक संघर्षपूर्ण है और दुकाने बन्द हैं। कर्फ्यू आर्डर लगाया हुआ था, सशस्त्र पुलिस ने गश्त किया, शान्ति समितियां बनादी गई हैं। अब तक १०० स्त्री, पुरुष तथा बच्चों की हत्यायें हुई हैं। और २०० के लगभग घायल किये गये हैं।

स्मरण रहे कि रानीगंज में मुस्लिम लीग के सीधी कार्रवाई-दवस के अवसर पर दंगा हो गया था।

कलकत्ता

केवल अगस्त मास के मृतकों की संख्या ४०,००० थी परन्तु सितम्बर, अक्टूबर और नवम्बर तक ५०-६० प्रतिदिन मौत के घाट पहुँचाए जा रहे हैं। इस अनुमान से १०००, १५,००० व्यक्ति और भी यमपुर पहुँच चुके होंगे। न मालूम कई वर्षों से बंगाल पर शनिदेव और यमदेव की क्रूर दृष्टि क्यों है ? पहले

अन्न (चावल) न मिलने के कारण मृत्यु को प्राप्त हुए फिर यह साम्प्रदायिक झगड़े ने बंगाल की कमर तोड़ दी । यदि बंगाल-की इसी प्रकार दशा रही तो बंगाल जनहीन वर्ती हो जायगा। जो पहले राजधानी के नाम से पुकारा जाता था । कौन कहता है कि कलकत्ता की दशा सुधर रही है ? ईश्वर ही इसका सहा-यक है ।

भवानीपुर (कलकत्ता)

भवानीपुर गांव में १६ अगस्त 'सीधी कार्रवाई दिवस' के अवसर पर आशुतोष रोड़ पर लीगियोंने अपना जलूस निकाला, गुण्डों के हाथों में लाठी, छुरे और लोहे के वार (छड़ियां) थी । लीगी अपने नारों के साथ "पाकिस्तान जिन्दाबाद" करते जा रहे थे । हिन्दू लड़का जो उसी सड़क पर खड़ा था उसने "जय हिन्द" कह दिया बस लीगियों ने उस पर आक्रमण करके सदा के लिये समाप्त कर दिया । उसके साथ ५० व्यक्ति जो निर्दोष थे उनको भी मार दिया ।

देवेन्द्रघोष लेन पर आकर उस गुण्डों की भीड़ ने वह दंगा मचाया कि उसका वर्णन घृणास्पद है । हिन्दुओं ने सभ्य मुसल-मानों की सहायता की और घायल व्यक्तियों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया गया । परन्तु जो निहत्थे हिन्दू मुसलमानों की बस्तियों में रहते थे । लीगी मुसलमानों ने उनके साथ धोका किया और उन पर अत्याचार करके उनके घरों को लूटा और शेष सामान के साथ घरों में आग लगादी, जीवित व्यक्ति भी उस आग में जल गये ।

उसी रात को केतु आकोटी के लोगों ने लोगों पर दनादन बन्दूकें चलाई और अनजान व्यक्तियों को बुरी तरह घायल

कर डाला। चन्द्रनाथ चटर्जी लेन के एक मुस्लिम आई० बी० अफसर की जान बचाई। रातभर उसको सुरक्षित रखा। परन्तु मुसलमानों ने अपनी बस्ती से शायद किसी की मदद तो क्या की होगी उनको जान से मार दिया। १५० व्यक्ति जिनमें स्त्री, पुरुष, बच्चे जीवित आग में जला दिये गये। इन लोगों को जलती आग में फेंक दिया गया, एक हथियारबन्द भीड़ ने शेष जान बचाकर भागते व्यक्तियों के साथ रोमाञ्चकारी काण्ड किये।

सिरामपुर (कलकत्ता)

सिरामपुर सब डिविजनल में उन्ही दिनों से तनातनी चली आ रही है। अतः १४४ धारा द्वारा जुलूस निकालना और हथियार लेकर चलना अवैध घोषित कर दिया गया है। एक बंगाली स्त्री के सिर पर अचानक एक गुण्डे ने लकड़ी का प्रहार किया। उस स्त्री के पति से यह अत्याचार न देखा गया। उसने उसको वहां पर ही लिटा दिया बस, दंगा आरम्भ हो गया। लीगी गुण्डोंने ही श्री गणेश किया था। और उन्होंने ही मार-पीट लूट-पाट अग्निकाण्ड शुरु किया। २७ व्यक्ति मरे और १०० व्यक्ति घायल हुए। लाखों रुपये की हानि हुई। कई दुकानें जलादी गईं। कई व्यक्ति जीवित जल गये।

चीनपुर (कलकत्ता)

वकील संघ के सदस्यों, बैंक कर्मचारी संघ के मंत्री, हिन्दू महासभा के मंत्री और वस्त्र व्यापारिक संघ के मंत्री ने बंगाल के प्रधान मंत्री श्री सुहरावर्दी, श्री शरतचन्द्र बोस आदि को तार द्वारा सूचित किया कि मुसलमानों के एक नारे लगाते हुए जलूस ने कस्बे में गुण्डाशाही मचादी। दूकानों को लूट लिया। आग

लगा कर उन्हें भारी नुकसान पहुंचाया गया। ३० आदमी मार दिये गये और सैकड़ों घायल हो गये परन्तु मंत्री मण्डल ने इस पर कोई विचार नहीं किया।

ढ़ाका

१६ अगस्त से आज तक वहां १०० व्यक्ति मरे और १५० घायल हुए। जिनमें ५० व्यक्ति अत्यन्त घायल होने के कारण अस्पतालों में जाकर मर गये, शिक्षा संस्थायें बन्द थीं। सड़कें निर्जन थीं नगर में १०-१५ दिन तक तनातनी रही। भीड़ को तित्तर बित्तर करने के लिये पुलिस बहुत ही विलम्ब से आई और फिर भी अवहेलना पूर्वक काम किया। यहां तक कि हवा में गोली चलाई और अत्याचार करते हुए गुण्डों को कुछ भी न कहा गया।

नगर में मुस्लिम लीगी नारे रातों सुनाई दिये। कम्बराजी गली में ५ आदमी छुरे से मार दिये गये। एक प्रातः काल ३ व्यक्तियों को नरिन्दा में पीटा गया। इनमें एक भूतपूर्व म्युनिस्पल कमिश्नर भी थे। ४ महिलाएं बुरी तरह घायलकी गई उनमें २ नवयुवतियों के स्तन काट लिये गये– और दो के साथ बलात्कार, व्यभिचार किया गया। एक बालिका का गला घोंट दिया गया। एक दो केस अब भी कभी २ हो जाते हैं। लीग ने अपनी सीधी कार्रवाई द्वारा बहुत कुछ उत्पात मचाया है। बहुतों को तेजाब द्वारा जलाया गया।

चान्दपुर (बंगाल)

चान्दपुर सहायता समिति के सेक्रेटरी द्वारा भेजे गये १६ अगस्त के तार से पता चला है कि चान्दपुर के समस्त सबडिवी-जन में लूट मार और हत्याकाण्ड व्यापक रूप से आरम्भ होगया

हैं। उनका कहना है कि लोगो गुन्डों की भीड़ की भीड़ चान्द-पुर शहर की ओर बढ़ रही हैं।

अब तक ६० व्यक्ति मर चुके हैं और ७० घायलों की लाशों के ढेर सड़क में पड़ें हैं और नवयुवतिथों से व्यभिचार करने के लिये गुण्डे उनको उठा कर ले गये हैं। कई नवजात शिशु खेतों में मरे हुये पाये गये हैं। उनकी सहायता के लिये अभी कोई प्रबन्ध नहीं किया गया है। उन्होंने सैनिक सहायता के लिये भी अपील की है।

कोमिल्ला

कोमिल्ला हिन्दू महासभा के सेक्रेटरी ने डिफेन्स मेम्बर सरदार बल्देवसिंह को तार दिया है कि त्रिपुरा नोआखाली की स्थिति बहुत खराब हो गई है। कोमिल्ला में साम्प्रदायिकता फैली हुई है। लोगों में तनातनी हो रही है। अब तक वहां १०० आदमी मरे हैं और ३०० घायल पड़े हैं। उनकी देख-रेख का कोई इन्त-जाम सरकार की ओर से नहीं है।

कई मरे हुए तथा जीवित नवजात शिशु जंगल में से उठा कर शैल्टर में लाये गये हैं। कई औरतें कुओं और तालाबों में से मरी हुई निकाली गई हैं। कई २ घण्टों के बाद गुण्डों का समूह २००-३०० की संख्या में आकर नगरवासियों पर आक्रमण करने के लिये आता है और मार-धाड़, लूट-पाट और आग लगा कर भाग जाता है। आक्रमणकारी सब हथियारबन्द आते हैं।

पशुओं की हत्या का भी समाचार मिला है। मुसलमान उनको रात के वक्त खोल कर ले जाते हैं।

नोआखाली और त्रिपुरा

'सीधी कार्रवाई' के दिन से आग सुलगती रही और दो-चार

हमले भी होते रहे। परन्तु स्थिति अब इतनी भयानक और खतरनाक हो गई थी कि इसका समझना आसान काम नहीं था। मुस्लिम लीगी गुण्डों ने धीरे २ अपनी टोली बनानी शुरू की और फिर उनको उत्तेजनात्मक भाषण दे दे कर लड़ने के लिए तैयार कर लिया। हर प्रकार के हथियारों से लैस करके हिन्दू जनता के विरुद्ध जिहाद बोल दिया।

स्त्रियां, पुरुष और बच्चों को निर्दयता और बेरहमी के साथ कत्ल करना शुरू कर दिया। इस प्रकार लोगों के रहने के घरों में आग लगादी—भागते हुए, जान बचाते हुए हिन्दुओं के ऊपर गर्म चाशनी और तेजाब छिड़क दिए। जिससे आश्रय रहित व्यक्ति जल-भुन कर तथा तड़प २ कर मर गये। नवजात शिशुओं को चीर चीर कर फेंक दिया। उनकी ममता से भरी माताओं को उनकी लाशें देना तो दूर की बात है उनको बच्चे देखन से भी वंचित रखा और उनके साथ बलात्कार किया।

गर्भवती स्त्रियों के पेटों में ठोकरें मार कर उनके गर्भ गिरा दिये—उनको तड़पती हुई लाशों को सड़कों, नालियों और छतों पर उठा २ कर फेंक दिया। बच्चों ने मां और माताओं ने बच्चों को खोज २ कर आंखें ठेर दीं। परन्तु कोई भी किसी को न मिल सके। दोनों ने तड़प २ कर प्राण दे दिये।

१२,००० व्यक्तियों को विधर्मी बना दिया, उनके धर्म परिवर्तन कर दिये, उनको गाय का मांस जबर्दस्ती खिलाकर उनके धर्मों को नष्ट करने की चेष्टा की गई। उनको कत्ल करने, मारने और फांसी देने की धमकी दी। बलपूर्वक कन्याओं को उठा कर घर से दूसरे गांवों में ले गये–यदि उनके घरवालों ने उनका मुकाबला करना चाहा तो उनके प्राण ले लिए।

जिन नवयुवतियों ने व्यभिचार करने से इन्कार किया तो उनके पैर बांध कर उनको नङ्गा करके वृक्षों में उलटा लटका दिया और उनकी योनियों में लकड़ी और डण्डे चढ़ा दिए गये। उन्होंने इस घृणास्पद घटनाओं से तड़पकर अपनी जानें देदीं। छुरों से स्तन काट डाले गये। सिर की चोटियों को पकड़ कर दुष्टों ने खरदरी जमीन पर से घसीट २ कर उनका अन्त कर दिया !

पुरुषों की गुदाओं में बांस की पोरियां चढ़ा दीं। सोते हुए व्यक्तियों की गर्दनें काट डालीं—रक्त की धारें बहती रहीं परन्तु पुलिस या फौज का एक सिपाही भी त्रिपुरा या नोआखाली की ओर मुंह करके न सोया। बदमाश लीगियोंने यह ऊधम मचाया कि यह हिन्दुओं को आमरण भूलने की चीज नहीं।

प्रथम तो कलकत्ते की घटना कुछ कम नहीं परन्तु नोआखाली का नादिरशाही उससे कई गुणा रहा। २०,००० व्यक्तियों की लाशों का ढेर हफ्तों चील-कव्वे और गिद्धों के लिए वर्षों का भोजन बना रहा। यह हत्याकाण्ड देखने के लिये किसी भी राष्ट्रीय लीडर को यह न सूझा कि नोआखाली या त्रिपुरा में क्या हो रहा है ? बेशर्मी से जब चारों ओर से हा ! हा !! कार की ध्वनि आई तो हवाई जहाजों में सैर देखने के लिये पहुंच गये। और बिना किसी व्यवस्था को सुधारे या प्रबन्ध किए वहां से जल-वायु बदल कर लौट आए। यह है हिन्दुओं के प्रति सरकार की सहानुभूति ! बंगाल में अकाल ने क्या छोड़ दिया था ? जो कुछ था भी वह लीग ने कसर न छोड़ी, १ लाख हिन्दुओं का रक्तपात करा दिया।

बिहार (पटना)

नोआखाली, कलकत्ता और बम्बई का हत्याकाण्ड होता देख कर बिहार लीगियों ने भी सिर ऊंचा उठाया परन्तु उनको शायद यह पता नहीं था कि बिहार में हिन्दुओं की सख्या मुसलमानों से कहीं अधिक है। लीगियों पर तो 'सीधी कार्रवाई' का रंग चढ़ा हुआ था ही उन्होंने बिहारी हिन्दुओं को छेड़ना शुरु किया। बिहारी हिन्दुओं ने ५०-६० मुसलमानों को मार-पीट दिया। बस, इस पर ही लीगी हिमायती गांधी और जवाहर चिल्ला उठे। 'मुसलमानों पर अत्याचार मत करो' वरना सरकार गोली चलाने की आज्ञा दे देगी। बिहार को नष्ट कर देगी। परन्तु इन हिमायतियों से कोई यह भी तो पूछे कि बंगाल में लाखों हिन्दू मर गये। करोड़ों रुपयों का नुकसान हो गया ! हजारों घर जल कर खाक हो गये तब आप लोगों ने उफ तक नहीं की। आज आपके हृदय में बिहारियों के प्रति एक दम इतनी सहानुभूति कहां से आगई ?

गया (पटना)

यहां २० अगस्त को साम्प्रदायिक दंगा हुआ २५ व्यक्तियों की मृत्यु का समाचार प्राप्त हुआ है। और १०० के लगभग घायल हुये हैं। दंगे के कारण ५ दिन तक दुकानें बन्द रही। २ लड़कियों को इस बुरी तरह घायल किया गया था कि वह

दृश्य जिसने भी देखा है वह मानव के प्रति मानव को पशु कहे बिना हरगिज नहीं रह सकता है। अब कांग्रेस के आदेश पर दुकाने खोल दी गईं । पुलिस गश्त करने लगी थी।

पटना

पहले भी यहां काफी दंगा हो चुका है परन्तु अब अक्टूबर में फिर दंगा हो गया, दंगे का श्रीगणेश इस प्रकार बताया जाता है कि एक गुण्डा मुसलमान एक हिन्दू की दुकान पर आकर खड़ा हो गया मुंह में पानी का कुल्ला लेकर उसके ऊपर छोड़ दिया। हिन्दू ने उसको बुरा भला कहा, इस पर मार पीट प्रारम्भ होगई। लीग के लोग लड़ने के लिए पहले ही तैयार थे। उन्होंने अपने छुरों और लाठियों से उस बनिये का काम तमाम कर दिया और मार्ग में जितने लोग मिले, उन्होंने उनको घायल किया और जान से भी मारा।

मरे हुए व्यक्तियों की संख्या अबतक कुछ१५० और घायलों की संख्या ५०-६० है।

पटना

'प्रत्यक्ष कार्य' दिवस के अवसर पर मुसलमान छात्रों ने स्कूलों और कालिजों में हड़ताल या अवकाश कराने का निश्चय किया। वे लोग लीगी झंडा लेकर बाजार में नारे लगाते हुए जलूस के रूप में प्रत्येक स्कूल और कालिज में गये। कई स्थानों में तो दंगे के भय से छुट्टी करदी गई। परन्तु कई संस्थाओं ने उन को आश्वासन दिलाया कि जब हमारे आवश्यक पीरियड समाप्त हो जायेंगे, हम तुरन्त ही अवकाश कर देंगे। इस पर वे मुस्लिम छात्र धरना देकर बैठ गए और कहने लगे कि हम तो यहां से जब जायेंगे जब आप सब को छुट्टी दे देंगे। लीगी

छात्रों ने पत्थर फेंक कर स्कूलों और कालिजों के शीशे तोड़ दिए। और बाहर खड़े हिन्दू छात्रों के साथ मारपीट आरम्भ करदी। संघर्ष बढ़ गया। १५-२० छात्र घायल हो गये। यह आग नगर में भी फैल गई। सैकड़ों की लाशें जमीन पर पड़ी दिखाई दीं। रक्तपात हुआ ।

हत्या की धमकी

'इन्डियन नेशन' पत्र के सम्पादक को एक गुमनाम पत्र मिला है। इसमें कहा गया है कि ऐंग्लो संस्कृत हाई (इंगलिश) स्कूल के हिन्दू-मुसलमान छात्रों के संघर्ष पर जैसा वक्तव्य आपने प्रकाशित किया है वैसा भविष्य में प्रकाशित न करें। अन्यथा आपके प्रेस पर आधी रात को आक्रमण करेंगे। सब कुछ लूट कर आग लगा देंगे। आपको को भी मार डालेंगे। भविष्य में आप मुस्लिम लीग, पाकिस्तान, और श्री जिन्ना के विरुद्ध कोई प्रचार न करें। मुस्लिम लीग का झंडा इस्लाम के अनुयायियों का है। कांग्रेस का झण्डा नीच हिन्दुओं का है। पत्र प्रेषक ने सम्पादक को फिर सम्बोधन करते हुए पत्र लिखा है। लीगियों को कितना बलात् साहस है। सरकार ने इस पर भी कोई एक्शन नहीं लिया।

तारापुर

'सीधी कार्यवाही' ने निर्दोषी हिन्दुओं के २३३ गांव जलाकर भस्म कर दिये और मरनेवालों की संख्या २०० से अधिक बताई जाती है। घायल लोगों की गिनती करने की आज्ञा नहीं दी गई। उनको जमीन में दबाने का प्रयत्न किया जा रहा है।

सिलहट

लूट-मार, दंगा और अग्निकाण्ड होने के कारण डिप्टी

कमिश्नर ने नगर में दफा १४४ लगादी, कारण उस दिन शिव गंज में गुण्डों के एक दल ने एक शराब की दुकान पर हमला करके दंगा मचा दिया। दंगा शान्त हो जाने पर मन्त्री मण्डलने नगर का दौरा किया। जिसमें हजारों की हानि और ३० व्यक्तियों की मृत्यु का समाचार मिला।

मुंगेर

२७ अक्टूबर को यहां सीधी कार्रवाही के सम्बन्ध से ही साम्प्रदायिक झगड़ा हो गया। जिसके फलस्वरूप नगर में २४ घंटे का कर्फ्यू लग गया। नगर के विभिन्न इलाकों में हमले होते रहे। नगर में अहतियात के तौर पर १४४ धारा भी २ मास के लिये लगा दी गई।

अब तक ३६ घायल व्यक्ति अस्पताल पहुंचाये जा चुके हैं। जिसमें से १० के मरने की पूरी आशा है। शेष, पुलिस ने गश्त जारी कर दिया है।

आसपास के गांवों में भी दंगे के कारण लोगों में मन मुटाव हो गया है–लोग भयभीत हैं। दुकानें बन्द हैं। रात को १० बजे के बाद घर से बाहर निकलना बन्द है।

आरा

'सीधी कार्रवाई' के दिन साम्प्रदायिक तनातनी के फलस्वरूप नगर में दफा १४४ लागू कर दी गई। लीगी गुण्डों ने झगड़ा करने के लिए एक गाय को मारने की अफवाह सारे नगर में फैला दी हिन्दुओं में इस बात पर जोश आगया। मुसलमानों ने दलबन्दी की और हिन्दुओं ने अपने बचाव का प्रबन्ध करना आरम्भ किया। बाजार की दुकानें धड़ाधड़ बन्द होने लगी। घर में स्त्री बच्चे डर के मारे बाहर निकलने बन्द होगये। स्थिति भयानक हो गई लीगी लोग नारे लगाते हुए

बाजारों में घूमने लगे । उस अवसर पर कांग्रेस जनों और पुलिसवालों ने मिल कर भीड़ को समझाया और मुसलमानों को भी कहा कि झगड़ा करने से आपस में हानियां होंगी इससे लाभ तो कोई होगा नहीं । फिर भी २-४ हत्याएं हुई और कई आदमी घायल हुए । फिर दूसरे दिन शान्ति होगई ।

छपरा

गत १६ अगस्त को मुस्लिम लीग की ओर से प्रत्यक्ष संघर्ष दिवस मनाया गया । श्रावणी पूर्णिमा के अवसर पर देहातों से हजारों नर नारी स्नानार्थियों की अपार भीड़ प्रतिवर्ष आती है । उसी भांति इस वर्ष भी ग्रामीण जनता आई थी । रात में महिलाओं की संख्या मन्दिरों में अधिक रहती है । इस समय देखा गया कि रात में मुसलमान गुण्डों ने साहब गंज के मन्दिरों में घुसक महिलाओं पर खुले आम आक्रमण किया, उसी प्रकार की घटना रतनपुरा मुहल्ला स्थित सांवलिया जी एवं सत्य-नारायण जी के मन्दिरों में भी हजारों बेखबर स्त्री-बच्चों पर आक्रमण किये । सैकड़ों की लाशें पड़ गयीं और घायलों की संख्या अगणित थी ।

उपस्थित भीड़ में इतनी शक्ति कहां थी जो उन हथियार-बन्द गुण्डों का विरोध करती । परन्तु कुछ महिलाओ के पति वहां आकर उनकी रक्षा के लिये अवश्य आये, परन्तु उनके वश की कोई बात नहीं थी । वे निहत्थे थे ! स्त्रियों के आभूषण छीन लिये और उनको जान से मार दिया ।

इसी प्रकार की घटना लक्ष्मी टाकीज सिनेमागृह के द्वार पर हुई । स्त्री, पुरुष, बच्चे सब चित्र देखकर घर लौट रहे थे । गुण्डों ने उनको घेर लिया और निर्दोषी और निहत्थे व्यक्तियों

को मार २ कर बिछा दिया। स्त्रियों की बेइज्जती जो की वहमुफ्त में। उनमें से बीसों नवयुबति (महिलाओं) का तो आज तक पता नहीं। पुलिस से रिपोर्ट की तो कहा गया कि कि कांग्रेस से जाकर कहो। नेहरू जी से मदद मांगो, पटेल जी बचायेंगे। शरतचन्द्र जी बोस के पास जाकर बोलो। पुलिस वाले भी मुसलमान और लीगी थे।

भागलपुर

'प्रत्यक्ष कार्य' दिवस के अवसर पर लीगियों के हृदय तो हिन्दुओं से मुटाव कर ही चुके थे। थोड़ी सी बात पर ही झगड़े की तूल बान्ध ली। एक बाबू की और एक टमटम वाले के बीच सवारी बिठाने पर ही व्यक्तिगत झगड़े ने साम्प्रदायिकता का रूप धारण कर लिया।

दंगे का आतंक नगर भर में फैल गया, लीगियों ने छुरे निकाल लिए। आक्रमण करके ८-१० व्यक्तियों के शरीर चीर डाले, बीसों को घायल कर लिया, घायलों को अस्पताल भेज दिया गया। पुलिस विलम्ब से घटना स्थल पर पहुंची स्थिति ने थोड़ा और रूप रंग दिखाया। एक सात वर्ष का बालक सड़क पर छुरों से घायल मरा पड़ा पाया गया। १४४ धारा लागू कर दी गई। गुण्डों को दबाने के लिए पुलिस चक्कर काटने लगी। नगर के सज्जनों ने स्थिति को संभाल लिया।

२ व्यक्ति रात को मार दिये गये। प्रातःकाल उनको पहिचाना गया तो पता चला कि परदेशी दिहात से आए हुए थे।

यू० पी०

इलाहाबाद

२३ अगस्त को यहां हिन्दू-मुस्लिम दंगा सीधी कार्रवाई के आधार पर हुआ, अग्निकाण्ड और लूट मार की अनेक घटनाएं हुईं। कई दिन तक कर्फ्यू आर्डर जारी रहा।

'मीरगन' में ईंट पत्थर फेंकने से शुरू हुए दंगे को रोकने के लिए हिन्दू लोग बाजारों में आए, परन्तु गुण्डों ने उनकी एक भी न सुनी—अपने जाति खून के जोश में आकर झगड़ा कई स्थानों पर करते हुए टोली की टोली अपने घरों से निकल पड़ी।

अगले सप्ताह आने वाले ईद के मौके पर नमाज पढ़ाने का प्रश्न दंगे का कारण बन गया। अभी पिछले 'प्रत्यक्ष कार्रवाई' दिवसपर मुस्लिम लीगियों ने यह ऐलान किया था कि इस बार वे ईद के दिन राष्ट्रीय मुस्लिम मौलाना मुहम्मद मियां के नमाज पढ़ाने का विरोध करेंगे। इस पर मौ० मुहम्मद मियां की ओर से कहा गया कि ईदगाह पर उनके परिवार का अधिकार है। लीगियों ने अपने मिशन को आगे रखते हुए उस दिन जामा मस्जिद में रमजान के आखिरी जुम्मे की नमाज़ हो चुकने के बाद लौटते हुए मुसलमानों के गिरोह और मुसलमानों के बीच ईंट-पत्थर फेंकने की घटनाएं होकर दंगे का रूप धारण कर लिया। जो धीरे २ शहर के विभिन्न भागों में फैल गया। लगभग

५० व्यक्तियों के साथ लूट मार की गई। खुलना टोला की एक भीड़ के एक आदमी ने जो लीगी दिखाई देता था उसने राइफल से आती हुई पुलिस के ऊपर गोली चलाई जिससे पुलिस के डिप्टी सुप्रिन्टेन्डेन्ट तथा एक मजिस्ट्रेट बाल-बाल बचे। पुलिस के गोली चलाने पर कई व्यक्ति गोली के शिकार हुए और कई घायल होगये।

नखास कोना में दो मुस्लिम लीगी व्यक्तियों ने पुलिस से बन्दूकें छीनने की कोशिश की। जिस पर पुलिस के एक और दस्ते ने आकर गोलियां चलाई—उनमें से दो व्यक्ति वहीं पर मर गये।

एक दर्जन से अधिक घरों में आग लगाई गई और कई दुकानें लूट ली गई। असोशियेटेड प्रेस ने विश्वस्त सूत्र से बताया कि वहां कि स्थिति बड़ी डावांडोल हो जाती यदि वहां के प्रबन्ध कर्ता फौज और पुलिस को वहां नियत नहीं करते और कर्फ्यू आर्डर के साथ दफा १४४ न लगाते।

लखनऊ

'सीधी कार्रवाई' के उपलक्ष में लीगी झंडा अभिवादन किया गया। मुस्लमानों ने दुकानें बन्द रखीं। विद्यार्थी पढ़ने के लिए नहीं गये। जलूस नहीं निकाला केवल गुप्त स्थानों पर भाषण किए गये। उनमें उत्तेजना होते हुए भी कोई दंगा नहीं हो सका।

कानपुर

'सीधी कार्रवाई' के दिन कानपुर के मुस्लिम गुण्डों ने भी हाथ पैर चलाने का प्रयत्न किया। वहां हिन्दू लोग दंगा नहीं करना चाहते थे। परन्तु फिर भी गुण्डों ने अपने जलसे में

उत्तेजनापूर्ण भाषण दिये और पत्थरों व ईंटोंसे आक्रमण किए। उसका परिणाम यह हुआ कि कुल १० व्यक्ति मरे और ५० के लगभग घायल हुए। नगर पिताओं ने स्थिति को शीघ्र ही सम्भाल लिया।

इटावा १ नवम्बर

नोआखली के उपद्रवों के समाचारों से सारे इटावे जिले में खिंचाव पैदा हो गया है। कंचौसी गांव में से एक आदमी के ऊपर लाठियों और छुरों से आक्रमण किया गया। उसके बचने की कम आशा है। अन्य सहायकों पर भी सांघातिक आक्रमणका समाचार मिला है। इस सम्बन्ध में गांव के बहुत आदमी गिरफ्तार कर लिये गये हैं। नगर के विभिन्न इलाकों में ईंट-पत्थर फेंकने तथा छुरों और लाठी आदि के आक्रमण के समाचार आये हैं। कई स्थानों पर लोग मर भी गये हैं और घायल भी पड़े हैं। परन्तु पत्रों को दूसरी सूचना नहीं दी जा रही है। जिला मजिस्ट्रेट ने १४४ धारा लगा कर शाम को ८ बजे से लेकर प्रातः ५ बजे तक कर्फ्यू लगाने की घोषणा कर दी है। ५० से अधिक गुण्डों को गिरफ्तार किया गया है। आग भड़कनेवाली है।

आगरा

'डायरेक्ट एक्शन डे' शहर में लीगी मुसलमानों द्वारा मनाया गया। शहर की मुस्लिम दुकानों में से आधी दुकानें खुली रहीं। जलूस में स्कूल और कालिज के मुसलमान लड़कों के साथ सभ्य मुसलमानों की संख्या कम थी। शिक्षा संस्थाओं में जाकर कुछ लीगी गुण्डों ने उत्पात मचा कर हड़ताल करानेकी कोशिश की, किन्तु उनके सब प्रयत्न असफल रहे। इक्के-दुक्कों पर मारपीट अवश्य की गई परन्तु इसने दंगे या संघर्ष का रूप नहीं लिया।

क्योंकि यहां के अधिक मुसलमान लोग से नफरत करते हैं और वे लोग सभ्य और व्यापारी हैं। जो लोग दंगई थे उनको उन्होंने कह दिया कि यदि तुम शैतानी करोगे तो तुम लोगों को पुलिस के हवाले कर दिया जायगा और कलकत्ता की सी दशा हो जायगी। ये काम नंगे और दंगेबाजों का है। पुलिस घटना स्थल पर अटल रही परन्तु उस दिन नहीं दूसरे दिन उसने अपना काम प्रारम्भ किया।

गढ़ मुक्तेश्वर में हिन्दू-मुस्लिम दंगा

६ नवम्बर १६४६ की प्रातःकाल एक हिन्दू-लड़की एक मुसलमान मनिहार के पास चूड़ियां पहिनने के लिए गई-चूड़ियां पहनाते समय उस मुस्लिम गुण्डेने उस जाट कन्याको छेड़ दिया, उस जाट कन्या ने पहले तो स्वयं ही उससे बदला लेना चाहा, परन्तु वहां और कई मुस्लिम गुण्डों ने उस लड़की को घेर लिया। जाट कन्या ने अपनी रक्षा के लिए चीख-मार की तो पास में हिन्दुओं ने यह अत्याचार देखा। इस पर अन्य लोग उसकी सहायता के लिए आये इस पर लोगों ने उस दंगे को साम्प्रदायिकता का रूप दे दिया। अन्त में इसने भयानक रूप धारण कर लिया।

गढ़ पर २०० व्यक्ति मरे और ३०० से अधिक घायल हुए। कई स्थानों पर अग्निकाण्ड भी हुआ, मरे हुए व्यक्तियों को गंगा की गोद में फेंक दिया, बच्चों को कत्ल कर दिया, स्त्रियों को भय दिखाया गया जिसके कारण स्त्रियां डर कर दूसरे स्थानों पर भाग गईं। खाने-पीने की अव्यवस्था रही।

गढ़मुक्तेश्वर से लौटने वाले यात्रियों पर ४००० मुस्लिम गुण्डों ने बुरी तरह हमले किये। १५ बैलगाड़ियों पर आक्रमण

किया गया। जिनमें १५० व्यक्ति मरे और २००-२५० व्यक्ति बुरी तरह घायल कर दिये गये! २५ बैल मारे गये और ४ बैलगाड़ियां जलादी गई।

शाहजहाँपुर

कांग्रेस की सेक्रेटरी श्रीमती मृदला साराभाई को जो मेरठ में थीं, शाहजहांपुर में झगड़ा होने की खबर मिली। उन्होंने फौरन मोटर में जाकर यात्रियों को गांव से कुछ दूर ही रोकने की चेष्टा की, किन्तु देर से पहुंचने के कारण वह उन १५ बैल-गाड़ियों को सूचना न दे सकी, जिन पर मुसलमान गांव वालों ने हमला बोल दिया।

डासने में रेल रोक कर गढ़-यात्रियों को मार डाला

रेल से उतार कर सैकड़ों औरतों को नंगा कर दिया व बच्चों को कुचल डाला, बहुत बच्चों के गले घोंट डाले। यात्रियों की लाखों रुपये की सारी सम्पत्ति लूट ली और स्टेशन तथा रेल के मुस्लिम कर्मचारियों ने इन सब नृशंस कार्यों में सक्रिय सहयोग दिया। यह रोमाञ्चकारी घटना गाज़ियाबाद से हापुड़ की ओर ६ मील पर डासना स्टेशन पर हुआ।

गाड़ी का ड्राइवर जो मुसलमान बताया जाता है वह इंजिन को ले भागा। गार्ड ने झण्डी दिखाई, सीटी बजाई परन्तु ड्राइवर ने गाड़ी न चलाकर अकेले इंजिन को निकालकर अकेली गाड़ी को स्टेशन पर छोड़ कर भाग गया। गुण्डों ने स्त्रियों को पानी में डुबो दिया बच्चों को गाड़ियों के डिब्बों से निकाल कर बाहर फेंक दिया. सौ-सवा सौ के लगभग औरतों के पेटीकोट के नाड़े काट दिए गये! औरतें गाजियाबाद तक नंगी भागकर आईं। प्रेस सम्वाददाता की रिपोर्ट है कि आतताई ४००० गुण्डे थे!

स्टेशन जला दिया गया। जंगलों को तोड़ दिया। पौएण्ट मैन को मार दिया। रेलवे क्वोर्टरों में आग लगादी गई। जो लोग ट्रेन से बचकर भागे उनको गाजियाबाद में मुस्लिम गुण्डों ने घेर लिया और वहां पर रात को शरण नहीं लेने दी गई। वहां से पिट-कुट कर जब जमना के पुल के पास पहुँचे तो पुलिस ने शहर में घुसने से रोक दिया। रातभर सर्दी में पड़े रहे प्रातः १० नवम्बर को उनको अन्दर जाने की आज्ञा दी।

मेरठ में २५ मरे १५० घायल

मेरठ में भी उसी दिन गुण्डों ने झगड़ा आरम्भ कर दिया। कांग्रेस कोस्ट मण्डप का एक भाग जला दिया। रातभर छुरेबाजी होती रही। लोगों में हलचल हो गई। समाचार दाता का कहना है कि यह दंगा बंगाल के अत्याचार की छाया है।

मेरठ में २४ घण्टे का कर्फ्यू आर्डर कर दिया गया। अब तक यहां २५ मरे १५० घायल होगये हैं। पुलिस ने स्थिति को सुधारने की चेष्टा की है।

बम्बई

कलकत्ता की स्थिति जब इतनी चिन्ताजनक हो गई कि वहां से यातायात रेलवों का आना जाना, लोगों को टिकटों की अव्यवस्था। तो उसका प्रभाव बम्बई पर भी पड़ना लाजिमी था—यूं तो 'सीधी कार्रवाही' दिवस के अवसर पर वहां भी निर्दयी गुण्डों ने मनमानी की। जलूस निकाले, झण्डों की प्रदर्शनी की—दंगाबाजी करके, लूट-मार, हत्याकाण्ड, अत्याचार और मारकाट शुरू कर दी। परन्तु आग लगाना पैट्रौल सहित कारों,

मोटरों को भस्म करना, लोगों पर तेजाब छिड़क कर उनके प्राण लेना आदि कलकत्ता के काण्ड का परिणाम है।

खुली हुई दुकानों में आग फेंक दी। बैठे हुये दुकानदारों को छुरों से घायल कर दिया। बाहर से आये हुये व्यापारियों को लाठियों और बन्दूकों से घायल कर दिया उनकी लाशें सड़कों पर पड़ी सड़ती रहीं। बम्बई सरकार ने स्थिति को सुधारने के लिये कुछ बिलम्ब से पुलिस का प्रबन्ध किया। परन्तु पूरी तरह से व्यवस्था न हो सकी। बम्बई काण्ड में ५००० से अधिक व्यक्ति मरे और १०,००० से अधिक स्त्री, पुरुष और बच्चे घायल हुये। भविष्य में उनमें से भी कई सौ मौत के घाट उतर गये। छुट पुट वारदातें रोज हो रही हैं। २६ अक्टूबर की शाम को डोंगरी इलाके में एक लारी पर तेजाब फेंका गया। जिससे ३५ आदमियों के फफोले पड़ गये, जिन में से १० मर गये और दो पुलिस के सिपाही भी थे।

बादिन (कराची)

बादिन में 'सीधी कार्रवाई' के दिन यहां हिन्दुओं को लीगी झगड़े के सामने झुकने के लिए दबाया गया और न झुकने की हालत में उन्हें धमकी दी गई। भाषणों में मुसलमानों को हिन्दु-स्त्रियों पर और दुकानों पर हमला करने के लिए कहा गया। कई स्थानों पर लूट-पाट और अग्नि काण्ड करने की सूचना भी प्राप्त हुई।

यह भी मालूम हुआ है कि जब श्री नेवन्दराम किशनदास एम० एल० ए० (सिन्ध) नवाबशाह के कलक्टर से हिन्दु-स्त्रियों के मुसलमानों द्वारा फुसलाये जाने के सम्बन्ध में मिलने के लिए गए, तो कलक्टर ने उनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया और उनके क्षेत्र की शिकायतें सुनने से भी इन्कार कर दिया।

इसके विरोध में जब श्री नेवन्दराम कमरे से उठकर जाने लगे तो कलक्टरने उन्हें चले जाने के लिए कहा। ऐसे अत्याचारों, जुल्मों, अग्निकाण्डों और लूट-पाटों की शिकायतें भी उनके कानों में खली और उन पर कोई एक्शन लेने को तैयार नहीं हुए।

इसके साथर यह भी बात ध्यान देने योग्य है कि गुलाम-हुसेन पीरजादा, अब्दुलसत्तार ओर खुरो सरदार बहादुर अब्दुल रहमान खोसो को कराची लाने के लिए जैकबाबाद गये थे जिससे सरदार खां खोसो पर जो लीग दल से अलग हो गए हैं। फिर से लीग में आने के लिए दबाव डाला जा सके। हत्याओं की संख्या २००, और घायल १५० व्यक्ति पड़े हैं, उनकी चिकित्सा का कोई प्रबन्ध नहीं किया गया। पुलिस गुण्डों को पकड़ने का प्रयत्न कर रही है।

कराची (सिंध)

कराची में आज १७ अगस्त को काम काज बन्द रहा। सरकारी छुट्टी के कारण और भी सन्नाटा था। प्रातःकाल मुसलमान विद्यार्थियों ने लीगी झण्डे सहित जलूस निकाला और बाद में उसी सम्बन्ध में सभा की। जिसमें शेख गुलाम हुसेन हिदायतुल्ला इलाही बख्स और श्री एम० एच० गजरने उत्तेजना पूर्ण भाषण दिए। मुसलमान विद्यार्थियों ने सिंध सेक्रेटरियेट और चीफ कोर्ट पर लीगी झण्डा पहरा दिया।

शेख गुलाम हुसैन हिदायतुल्ला ने अपने भाषण में कहा कि ब्रिटिश सरकार ने मुस्लिम लीग को अन्तःकालीन सरकार नहीं बनाने दी। तब कांग्रेस को अन्तःकालीन सरकार बनाने के लिए निमन्त्रित करना कहां तक उचित है?
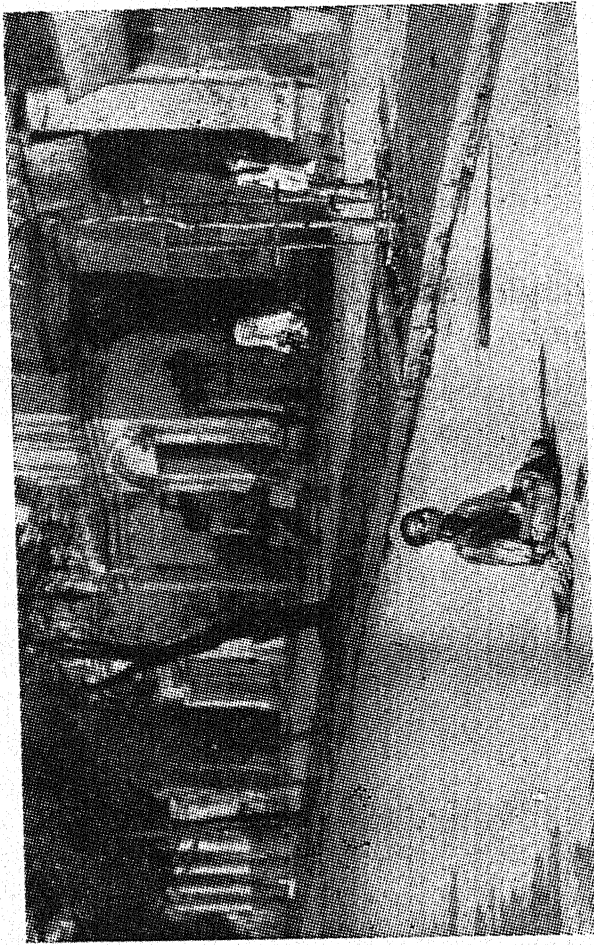
बालकों को कठोर से कठोर हृदय वाले चोर और डाकू भी छोड़ देते हैं–भेड़िये जैसे खूंख्वार जानवर भी प्रेम करते हैं पर हाय ! यह कलकत्ता की गुण्डाशाही छोटे २ अबोध बालक भी छुरे का शिकार.....................

श्री पीर इलाहीबख्श ने कहा कि बंगाल के प्रधान-मन्त्री ने घोषित किया है कि केन्द्र में कांग्रेसी अन्तःकालीन सरकार बनते ही बंगाल स्वतन्त्रता की घोषणा कर देगा। तब सिंध भी ऐसा ही करेगा।

उपद्रवियों ने अत्याचार किये और हिन्दुओं के घरों को लूटा, आग लगाई, और हत्याएँ भी की।

सिंध

'सीधी कार्रवाई' दिवस के अवसर पर सिंध में मुसलमानों-ने हिन्दुओं पर आक्रमण भी किया और उनको धन-जन की हानियां भी पहुंचाईं—यहां तक कि स्त्रियों को भी भगाने का निश्चय किया गया, परन्तु वहां की सरकार ने समाचार पत्रों को यह धमकी दी कि कोई हिन्दू-मुस्लिम दंगे सम्बन्धी सूचना पत्रों में प्रकाशित न की जाए। इसी कारण वहां से पूरे समाचार नहीं मालूम हो सके।

अहमदाबाद

'सीधी कार्रवाई' दिवस मनाया गया। वहां भाषण होते-होते जो हिन्दू लोग वक्तव्य में खड़े सुन रहे थे। उनको लोगियों ने बुरी तरह मारा और भीड़ से बाहर निकाल दिया। १५ व्यक्ति मरे और ५७ की घायल होने की सूचना मिली है।

शहर में मुसलमानों की दुकानें बन्द रहीं और मुसलमान मजदूर कारखानों में काम करने नहीं गये। स्कूल और कालिज में जाने वाले विद्यार्थियों को अन्य विद्यार्थियों ने रोका। जाने वालों में हिन्दू (लड़के, लड़कियां) विद्यार्थी भी थे। मुसलमान ड्राइवरों ने भी अपनी छुट्टी रखी—यातायात में थोड़ी बाधा पड़ी।

मद्रास

उसी 'लीगी दिवस' के अवसर पर मुसलमानों ने सिर उठाने की चेष्टा की परन्तु वहां के मन्त्री ने ऐलान निकाल दिया कि यदि दंगे सम्बन्धी कोई भी दुर्घटना यहां होगी तो उसमें लीग को दोषी समझा जायगा । और हिन्दुओं की हानि की क्षति पूर्ति मुसलमानों से की जायगी । वहां पर दंगे होने की पूरी सम्भावना थी परन्तु इस भय के कारण लीगी लोग कुछ न बोले ।

लाहौर

यहां भी अहतियात के लिये दफा १४४ लगादी गई और एक हुक्म जारी करके तलवार, छूरे, लाठी, कुल्हाड़ी, चाकू आदि लेकर चलने की मनाई करदी गई है ।

जालन्धर २७ अक्टूबर

जब से कलकत्ता में हत्याकाण्ड हुआ है बम्बई में जन-धन हानि के साथ लूट-पाट और नोआखाली में धर्म परिवर्तन का समाचार मिला है—हिन्दू और मुस्लमान दोनों के हृदय में एक दूसरे के प्रति विरोध, घृणा और खेद की भावनाएं उत्पन्न हो गई हैं । देश की अशान्त साम्प्रदायिक स्थिति को देखते हुये शहर में २ मास तक दफा १४४ लगादी गई । शान्ति स्थापित करने का प्रयत्न शहर की अमन कमेटियां कर रही हैं ।

अलवर (रियासत)

'सीधी कार्रवाई' के दिन लीगियों ने अपने घरों पर झण्डे अभिवादन किये और रातभर 'अल्लाहो अकबर' 'पाकिस्तान लेकर रहेंगे' 'मुस्लिम लीग जिन्दाबाद' 'जिन्ना जिन्दाबाद' के

नारे लगाते रहे। शहर में चिन्ताजनक स्थिति की सम्भावना हो गई। हिन्दुओं ने अपने मुहल्लों पर पहरे देने का प्रबन्ध कर लिया—अमन कमेटी की मीटिंग में हिन्दू-मुस्लिम दोनों शामिल हुए। रियासती पुलिस तैनात कर दी गई। कोई वारदात न हो सकी। वहां के हिन्दुओं ने कलकत्ता के हत्याकाण्ड पर प्रस्ताव पास किये, शोक प्रकट किया। हड़ताल भी की।

बीकानेर (रियासत)

'प्रत्यक्ष कार्य दिवस' पर लीगियों ने हुल्लड़ बाजी मचानी चाहीं परन्तु राजा ने पूरा प्रबन्ध किया हुआ था कोई दंगा न हो सका।

लन्दन

लंदन में भी १६ अगस्त को 'सीधी कार्रवाई' दिवस मनाया गया। वहां पर मुस्लिम लीगियों ने एक जलूस निकाला। जिसमें डाइनिंग स्ट्रीट (लंदन) में "संयुक्त भारत मुर्दाबाद" और मंत्री मिशन मुर्दाबाद" के नारे लगाये गये। इस प्रदर्शन में केवल ५० व्यक्ति शामिल थे। सबके हाथों में काले झण्डे तथा लीगी सांकेतिक झण्डे थे।

दिल्ली

'सीधी कार्रवाई' दिवस के अवसर पर चांदनी चौक, हौज काजी, दरियागंज, नई सड़क, सदरबाजार आदि बाजारों में लीगी झण्डे लगाए गये और झंडों की प्रदर्शनी लीग के हैड आफिस पर की गई। साम्प्रदायिकता की अग्नि मुस्लिम लीग की ओर से वहां नई सरकार स्थापना दिवस के अवसर पर काली झण्डियां लीगियों ने प्रत्येक बाजार और घर में लगाईं। और शाम को जलसा किया गया। उस उत्तेजना और कलकत्ता की आगने उनके हृदय में शौला उत्पन्न कर दिया। नगर की स्थिति चिन्ताजनक हो चली। स्थान२ पर लीगियों की टोलियां घूमने लगीं। उसी रात को गुण्डों के समूह ने गांधी गली पर आक्रमण करने का विचार किया। परन्तु लोग हमले की सूचना पाकर सावधान हो गये! वहां से हट कर आक्रमण कारी फतेहपुरी से होते हुए कूचा घासीराम, कूचा ब्रजनाथ, कटड़ा नील की ओर झुके परन्तु सांड को मारने का बहाना लेकर वहां से भी टल गये।

उसी रात को सदर बाजार, हिन्दूराव का बाड़ा क्लोथ मिल की ओर छुटपुट हमले किये गये। २-४ व्यक्ति मरे या घायल हुये, पहाड़गंज में भी अचेतन व्यक्तियों को सताया गया, किसी एक को चोट आई। एक पगली जिसको मार दिया गया मोडल बस्ती की ओर भी लीगियों का जोर बढ़गया। परन्तु सरकार की ओर से १४४ धारा लगादी गई थी और स्थान २ पर पुलिस का पहरा लगा दिया गया था। रातको ९॥ बजे से प्रातः ५ बजे तक कर्फ्यू आर्डर भी जारी कर दिया था।

फिर भी करोल बाग की ओर छुटपुट हमले जारी रहे। उसी रात को एक अवर्णनीय घटना हुई। भाई को भाई ने मार डाला तिब्बीकालिज के प्रोफेसर जो कांग्रेसी मुसलमान हैं उनका

नवयुवक पुत्र (खादी के वस्त्र पहने हुये था) कालिज से जा रहा था, उसको लीगी गुण्डों ने घेर लिया और उसको लाठियों से पीटना शुरू किया और जब वह अशक्त होकर गिर गया, तो उसको छुरों से मारने लगे उस होनहार युवक ने उन लोगों से कहा कि मैं मुसलमान हूँ और तुम लोग भी मुसलमान दिखाई देते हो मुझको क्यों मारते हो ? परन्तु उस समय वह टोली अपना कार्य करने के जोश में थी उसको जान से मार दिया। उनको आ० हि० फौज का बदला लेना था या कांग्रेस की नई सरकार बन्ने से लीगियों के मन में क्षोभ होगा इसी कारण भारत में ऐसी घटना का श्री गणेश किया गया।

इसी प्रकार क्लोथ मिल के पास से जो रास्ता किशनगंज से होता हुआ रेलवे क्लीयरिंग अकाउंटस आफिस को जाता है वहां कई लाशें पड़ी मिलती थीं, बिचारे बाबूओं को कत्ल किया गया। एक क्षत्री अकाउंटेंट जिसकी आयु २५ वर्ष के लगभग थी, उसका विवाह हुये छः मास ही व्यतीत हुए थे कि गुण्डों ने उसका भी अन्त कर दिया।

सब्जी मण्डी में भी कई वारदातें हुईं और उनके पीछे की ओर सरायरुहल्ला और काले पहाड़ के इलाके में भी कई घायल व्यक्तियों की सूचना मिली।

नरेला दिल्ली

सीधी कार्यवाई के दिन कादीपुर पंजाब रोड, फतेहपुर, दरियापुर, बरवाल आदि मुसलमान गांवों ने नरेले पर आक्रमण करने का इरादा किया। परन्तु इनके अतिरिक्त हिन्दू पड़ौसी गांवों ने उन्हें बीच में ही रोकने का निश्चय किया और उनको जाने के लिए कहा कि पहले हम लोगों से निपट लो फिर आगे जाने का साहस करना, दंगा होते होते रुका। परन्तु फिर भी लीगी एलान ने उनके दिलों में बुरे भावों का उत्पादन तो किया ही

भगाई स्त्री पकड़ी गई

नोआखाली के गुंडों की करतूत

मिर्जापुर का समाचार है कि बम्बई मेल से एक मारवाड़ी स्त्री को कुछ बंगाली मुसलमान नोआखाली से ले जा रहे थे। उसी गाड़ी के एक हिन्दू यात्री ने मिर्जापुर स्टेशन पर यह बात लोगों को बताई। जनता ने रेलवे अधिकारियों की सहायता से इन लोगों को स्टेशन पर उतारा। तुरन्त ही सुपरिंटेण्डेण्ट पुलिस तथा जिला मजिस्ट्रेट को सूचना दी गई और उन्होंने घटना स्थल पर पहुँच कर इन व्यक्तियों को गिरफ्तार किया। इन लोंगो के पास जेवरों का एक बक्स भी मिला है। यह स्त्री बुर्के में लेजाई जा रही थी। उसे स्थानीय अनाथालय में भेज दिया गया।

नोआखाली के शरणार्थियों की करुण कहानी

मारगेरिटा ३० अक्तूबर। यहां नोआखाली से करीब ५०० शरणार्थी आये हैं। अपनी आप-बीती के सम्बन्ध में उन्होंने जो कहानियां सुनाई हैं वे लोमहर्षक हैं।

एक वृद्ध व्यक्ति ने कहा कि उसकी पत्नी तथा बच्चों को इस्लाम ग्रहण करने के लिये विवश किया गया। लेकिन वह खुद गुण्डों के चंगुल से बचकर सिलहट पहुंच गया। उसके घर को लूट कर गुण्डों ने उसमें आग लगा दी। वृद्ध ने कहाः—"चौमुहानी से लुमडिंग तक मैं अपने परिवार के दस सदस्यों को शरणार्थी-शिविरों में खोज रहा हूँ। लेकिन मेरा परिश्रम अभी तक सफल नहीं हुआ। सिलहट पहुंचने पर मैंने अपनी पत्नी को एक सन्देश भेजा कि उसे फिर हिन्दू धर्म में दीक्षित कर लिया

जायगा लेकिन मुझे आशा नहीं कि वह मेरे पास पहुंच सकेगी।

शरणार्थियों में कितनी ही गर्भवती स्त्रियां तथा जच्चायें थीं। एक स्त्री के गाड़ी के उसी डिब्बे में बच्चा पैदा हुआ जिसमें हृदय की गति बन्द होने से एक वृद्ध की मृत्यु हुई थी। वह बुड्ढा चांदपुर से आ रहा था।

शरणार्थियों ने पीड़ित-सहायता समिति ने कार्यकर्ताओं की बहुत प्रशंसा की है।

नोआखाली तथा टिपरा जिले में गुण्डागिरी का नंगा नाच

१६०० वर्गमील में मार-धाड़ व लूट-खसोट का बाजार गर्म

कलकत्ता, २२ अक्टूबर। कल सवेरे एक प्रेस-कान्फ्रेंस में, सहायता तथा पुनः संस्थापन कमिश्नर सर वाल्टर गवर्नर ने नोआखाली तथा टिपरा जिले के उपद्रवों के सम्बन्ध में बताया कि इन जिलों से लगभग ५००० शरणार्थी गत ४ या ५ दिन में कलकत्ता आ चुके हैं! इनके अलावा लगभग २०,००० शरणार्थी चांदपुर, रामगंज तथा अन्य क्षेत्रों के सरकारी केन्द्रों पर पड़े हुए हैं।

सर वाल्टर ने फिर बताया कि उस समय सहायता तथा पुनः संस्थापन डायरेक्टर, सहायक सरकारी अस्पतालों के डिप्टी-सर्जन जनरल तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य-डायरेक्टर सभी नोआखाली तथा टिपरा जिले के क्षेत्रों में गये हुए हैं! सहायता कार्य भी भलीभांति व्यवस्थित कर दिया गया है। लगभग १२०० शरणार्थी प्रतिदिन कलकत्ता आ रहे हैं। रेलों तथा स्टीमरों द्वारा चावल भेजा जा रहा है। एक स्पेशल स्टीमर

कम से कम १००० टन खाद्य लेकर चटगांव जा रहा है। यह अन्न नोआखाली तथा टिपरा जिले के क्षेत्रों में बांट दिया जायगा।

बंगाल प्रेस-सलाहकार समिति के अनुसार नोआखाली के १४ थानों में से ७ थानों के तथा टिपरा जिले के ४ थानों के हल्कों पर उपद्रवों का प्रभाव पड़ा है।

१६४१ की जन-गणना के आंकड़ों के अनुसार नोआखाली के उपद्रव-ग्रस्त क्षेत्रों की आबादी लगभग १४ लाख है। जिनमें हिन्दुओं की संख्या १८.५ प्रतिशत तथा मुस्लिमों की संख्या ८१.५ प्रतिशत है, नोआखाली जिले की आबादी २२ लाख से कुछ ऊपर है जिनमें मुस्लिमों की जन-संख्या ८१.४ प्रतिशत है।

टिपरा जिले के उपद्रव-ग्रस्त क्षेत्रों की जन-संख्या ८ लाख है जिनमें ८३.७ प्रतिशत मुस्लिम तथा १६.३ प्रतिशत हिन्दू हैं!

बंगाल के कांग्रेसी नेता श्री सतीशचन्द्र दास गुप्त नोआखाली के उपद्रवग्रस्त क्षेत्रों में शांति तथा निर्भीकता मिशन लेकर जाने वाले हैं।

नोआखाली का दंगा

लीग ने पत्र प्रचारित किया

कुमारी म्यूरियल लिस्टर की धारणा

कलकत्ता ८ नवम्बर। लन्दन में गांधी जी का सत्कार करने वाली कुमारी म्यूरियल लिस्टर द्वारा नोआखाली से दंगे के कारण के सम्बन्ध में लिखा गया है कि उक्त क्षेत्र में यह अफवाह फैला दी गई थी कि संसार का अन्त निकट है और केवल मुसलमान को ही बचाया जा सकता है। हत्या करने वालों या धर्म परिवर्तन करने वालों के लिये बहिश्त में जगह सुरक्षित रहेगी।

इसके समान ही आश्चर्य जनक एक पत्र है, जो मुस्लिम लीग के हस्ताक्षर से प्रचारित किया गया है। जो कुछ हुआ है, वह निश्चित रूप से इसमें निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार हुआ है। जिससे कि बहुत से आदमी इसको जाली पत्र न समझ कर लीग द्वारा प्रचारित अधिकृत पत्र समझते हैं। कुछ व्यक्तियों को इसमें सेना से अलग किये गये सैनिकों का हाथ दिखाई देता है, बिना प्रयत्न के लूट का माल हाथ आ जाने पर अच्छे आदमियों का मन भी लालच में पड़ जाता है। कुछ व्यक्तियों का कहना कि केवल मार्शल्ला से ही स्थिति सुधर सकती है, परन्तु आपस में विश्वास उत्पन होने तक ऐसा होना सम्भव नहीं है। इससे पूर्व आपने एक परिवार के लूटे जाने का वर्णन किया है, जिस के पास चार बन्दूकें भी थी। सैनिक सहायता के हट जाते ही इस परिवार को लूट लिया गया।

बंगाल की अपहृत लड़कियों पर संकट

गुण्डों द्वारा माता पिताओं को मारने की धमकी

कुमारी मूरियल लिस्टर का वक्तव्यः है

कलकत्ता ८ नवम्बर। कुमारी म्यूरियल लीस्टर जिनके पास लन्दन में महात्मा गांधी ठहरे थे, अपने हाल के नोआखाली दौरे की रिपोर्ट के दौरान में कहती हैं कि सहायता सम्बन्धी कार्य करने वालों को एक सब से बड़ी अड़चन का सामना करना पड़ता है, वह यह है कि जिन लड़कियों को वधुओं के रूप में अनेक माता पिताओं से छीन लिया गया है उनका उद्धार करना बड़ा कठिन है, क्योंकि उन्हें डरा दिया गया है कि यदि उन्होंने अफसरों से यह नहीं कहा कि उन्हें अपना नया घर ही पसन्द है तो उनके पिता के परिवार के सारे कुटुम्बियों को मार दिया जायगा।

कुमारी म्यूरियल लिस्टर आगे कहती है। "इस उपद्रव के वास्तविक कारणों के सम्बन्ध में स्थानीय मत भिन्न-भिन्न हैं। पर इतना निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि यह अग्निकाण्ड और हिंसा व्यापार गांव वालों ने अकस्मात् ही नहीं कर दिया। बंगाल में चाहे जितने गुण्डे रहते हों, यह निश्चित है कि वे स्वयं यह उपद्रव करने में असमर्थ है। घरों के ऊपर पेट्रोल छिड़का गया और उनमें आग लगाई गई। इस राशन की हुई चीज को किसने सप्लाई किया और गांवों में स्टिरप पम्प कौन ले गया? हथियार किसने दिये?"

कुमारी लिस्टर आगे कहती है "कुछ लोग, जिन में वे लोग भी हैं जिन्हें इस उपद्रव के कारण बड़ी क्षति पहुँची है, कहते

हैं कि हमें एक ही स्थान पर एक दूसरे के साथ रहना है। हमें पुराना सम्बन्ध जल्दी स्थापित करना चाहिये।"

"परन्तु जब तक मनुष्य मनुष्य में पारस्परिक विश्वास उत्पन्न नहीं होगा पारस्परिक सहयोग की पुनःस्थापना सम्भव नहीं है। लोगों की न्याय में जो आस्था थी उसे गहरा धक्का लगा है। नैतिक विधान की रक्षा होनी ही चाहिये। गुण्डों की धारणा है कि वे बंगाल के इस सुन्दर अंचल के वास्तविक शासक हैं। जिन लोगों ने विनाश और अत्याचार और ज्यादती के इन काण्डों को चुपचाप देखा है उन्हें मानों दण्ड का कोई भय ही नहीं है, वे बिल्कुल निःशंक से दिखाई देते हैं।"

नोआखाली में अभी तक गुंडा राज्य

अपहरण की हुई स्त्रियों की रक्षा करना अत्यंत कठिन

दौरे के बाद कुमारी लिस्टरका वक्तव्य

कलकत्ता ८ नवम्बर। महात्मा गांधी का लन्दन में आतिथ्य करने वाली कुमारी मुरियल लिस्टरने नोआखाली जिले का दौरा करने के बाद दी गयी रिपोर्ट में कहा है कि जबर्दस्ती ब्याही गयी स्त्रियों को बचाने के लिये ही कार्यकर्ता और अधिकारी गण जाते हैं उनको बड़ी कठिनाई पड़ती। हैं उन नव विवाहित महिलाओं को चेतावनी दे दी गयी है कि अगर तुम अधिकारियों से यह नहीं कहोगी कि हम पुराने घरों के स्थान पर नये घरों को चाहती हैं तो तुम्हारे तमाम घर वालों को मार डाला जायगा।

इस भयंकर दुर्घटना के अनेक कारण दिये जाते हैं। यदि कोई बात जो निश्चित रूप से कही जाती है तो वह यही है कि

लूट मार और अग्निकाण्ड अनायास नहीं हो उठा। बंगाल में चाहे कितने ही गुण्डे रहते हों, परन्तु वे स्वयं इस प्रकार के आन्दोलन की व्यवस्था कर नहीं सकते। घरों को पेट्रोल छिड़क कर जलाया गया है। इस राशन की वस्तु को उन्हें किसने दिया ? इस देहाती क्षेत्र में किसने लाकर उन्हें तेल छिड़कने के पम्प तथा हथियार दिये ?

कुमारी लिस्टर का कहना है कि और का तो क्या कष्ट पाने वाले का भी कहना है कि हमें उसी भूमि पर एक दूसरे के पास रहना है। जहां तक शीघ्र संभव हो हमारे आपसी सम्बन्ध ठीक हो जाय तो अच्छा है लेकिन सहयोग का पुनःस्थापित होना तब तक असम्भव जान पड़ता है जब तक मनुष्यों के बीच में विश्वास की भावना स्थापित न हो। मानव की न्याय भावना को महान धक्का पहुँचा है। नैतिक नियम की रक्षा करनी चाहिये। गुण्डे यह समझते हैं कि मानों इस सुन्दर भाग के वे ही शासक हैं। जिन लोगों ने नाश, अत्याचार और मार में भाग लिया उनको सज़ा पाने की तनिक भी आशंका नहीं।

कलकत्ता के लोगों से ६ दिन तक कारो-बार बन्द रखने की अपील

(श्री शरत चन्द्र बोस)

कलकत्ता, ३१ अक्तूबर। आज शाम को श्री शरतचन्द्र बोस की अध्यक्षता में कलकत्ता के कुछ प्रमुख नागरिकों की एक सभा हुई, जिसमें यह सिफारिश की गई कि यदि बंगाल सरकार ने कलकत्ता की स्थिति को सुधारने का कोई उपाय न किया तो

४ नवम्बर से १३ नवम्बर तक यातायात, व्यापार, कारोबार व कारखाने आदि बन्द रखे जायं।

इस सम्बन्ध में प्रकाशित एक वक्तव्य में श्री शरतचन्द्र बोस ने बताया है कि नागरिकों की सभा में निम्न निश्चय किए गएः—

(१) बंगाल सरकार कलकत्ता, नोआखाली, चांदपुर, सब डिवीजन तथा बंगाल के अन्य भागों में शांति व व्यवस्था कायम रखने में एक दम असफल हुई है। उसने कुछ लोगों के साथ पक्षपात किया है।

(२) बंगाल सरकार कानून का पालन करने वाले नागरिकों की रक्षा का प्रबन्ध करने में एकदम असफल रही है। इधर उसने लोगों को अंधाधुंध गिरफ्तार करना शुरू कर दिया है। और लायसेंस होते हुए भी हथियार छीनने शुरू कर दिए हैं। और तलाशियां लेने लग गई हैं। इस तरह कानून का पालन करनेवालों को सरकार पर कोई विश्वास नहीं रहा। (३) कलकत्ता, नोआखाली व चांदपुर सब डिवीजन में होने वाली घटनाओं से गाल बंसरकार की अयोग्यता व पक्षपात का सबूत मिल जाता है। (४) जकरिया स्ट्रीट, चित्तरंजन एवन्यू भवानीदत्त लेन, नौ बाजार किदरपुर, आदि कलकत्ता के क्षेत्रों में अंधाधुंध गिरफ्तारियां तलाशियां व हथियार छीनने की जो घटनाएं हो रही हैं,। (५) सरकार अपने न्याय व व्यवस्था स्थापित करने के काम में एकदम असफल साबित हुई है। (६) १६ अगस्त से जो हालत शुरू हुई है, उससे समूचा व्यापार व कारोबार ठप हो चुका है। (७) कानून का पालन करनेवाली जनता की जान व जायदाद की रक्षा के लिये तथा फिर से शांति

स्थापित करने के लिये हमारी यह राय है कि ४ नवम्बर से १३ नवम्बर तक कलकत्ता में सब तरह के कारोबार व कारखाने बन्द रखे जांय। कुछ अपवाद भी रहेंगे।

युवक सँगठित हों

श्री शरतचन्द्र बोस ने कल अपने एक वक्तव्य में बंगाल तथा भारत के युवकों से प्रत्येक गांव तथा शहर में अपने संगठन कायम करने की अपील की ताकि समय पड़ने पर वे गुंडागर्दी का मुकाबला कर सकें।

शरतबाबू ने फिर बताया कि अन्तःकालीन सरकार से मेरे इस्तीफा देने के बाद समाचार पत्रों में इस आशय की खबरें देखने में आ रहीं हैं कि मैं केन्द्रीय असेम्बली के चुनाव के लिए फिर खड़ा होने वाला हूँ या मैं विदेशों में भारतीय राजनीतिक मिशन पर (अर्थात् राजदूत बनाकर) भेजा जा रहा हूँ। जहां तक अन्तिम बात का सम्बन्ध है, मैं उसका एकदम प्रतिवाद करता हूँ, पहली समस्या के बारे में मैं गंभी-रतापूर्वक विचार कर रहा हूँ और अभी मैं इस निर्णय पर पहुंचा हूँ कि बंगाल की वर्तमान गंभीर स्थिति को देखते हुए मुझे केन्द्रीय असेम्बली में फिर जाकर समय न बिताना चाहिए। मेरे सामने इस समय यही काम है कि बंगाल को अराजकता के मुंह से किस प्रकार निकाला जाय।

मजिस्ट्रेट व फौज की अकर्मण्यता

अ० भा० हिन्दू महासभा के जनरल सेक्रेटरी आशुतोष-लहरी ने कोमिल्ला से २० अक्तूबर को एक तार द्वारा बताया है कि चांदपुर सब-डिवीजन के पाइकपाड़ा, कराइतली, अयासी गांवों पर गत शनिवार को गुण्डों की भीड़ ने हमला किया।

इस भीड़ ने इन गांवों पर तीन ओर से हमला किया। एक शरणार्थी के अनुसार पाइकपाड़ा से ६ मील दूर फरीदगंज पर फौजी पल्टन तैनात थी, फिर भी उसने हुक्म न मिलने के कारण इन लोगों को लूट-मारी से बचाने का प्रयत्न न किया। जिला मजिस्ट्रेट के पास इन गांवों की ओर से प्रतिनिधियों ने जाकर तत्काल सहायता की प्रार्थना की, किन्तु उन्होंने टस से मस न की। अन्त में कहीं ५ बजे शाम को पुलिस सुपरिन्टेन्डेट २५ आदमियों को लेकर रवाना हुए।

मुस्लिम लीग व बंगाल सरकार—रा० कृपलानी

लीग के प्रचार के कारण मुसलमानों के हिन्दुओं पर सामूहिक आक्रमण

नरमेध, अपहरण व धर्म परिवर्तन के तांडव पर प्रकाश

फौजों की संरक्षकता में गांव फिर से बसाने पर जोर

नई दिल्ली, २६ अक्तूबर। कांग्रेस के नव निर्वाचित अध्यक्ष आचार्य कृपलानी ने आज एक पत्र-प्रतिनिधि सम्मेलन में पूर्वी बंगाल की अपनी यात्रा पर विस्तृत प्रकाश डाला। बंगाल सरकार तथा मुस्लिम लीग ने नरमेध, लूटमार, अपहरण तथा धर्म परिवर्तन के लोमहर्षक कांडों की भयंकरता को कम दर्शाने तथा अराजकता पर लीपापोती करने के लिए जो वक्तव्य दिए हैं उनका मुंहतोड़ उत्तर देते हुए, आचार्य कृपलानी ने सप्रमाण यह सिद्ध किया है कि हिन्दुओं पर आम मुस्लिम जनता ने आक्रमण किया और हिन्दुओ के विरुद्ध लीग घृणा का जो प्रचार कर रही थी, उसके परिणाम स्वरूप यह सामूहिक जिहाद बोला गया।

आपने कहा: "इन लोमहर्षक घटनाओं की भयंकरता को कम दिखाने का लीगी नेताओं ने जो यत्न किया है वह बुरा है। मेरी राय में इससे मुसलमानों का अहित होगा। लीगी नेताओं के इस कार्य से यह भावना बढ़ेगी कि वे लोग हिंसा का समर्थन करने का इशारा कर रहे हैं। बंगाल सरकार को भी क्षति का परिमाण कम दर्शाने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए। यदि हत्या, लूट, अग्निकाण्ड, धर्म-परिवर्तन, अपहरण तथा बलात् विवाह के आँकड़े अतिरंजित है तो सरकार का कर्त्तव्य है कि यह अपने आंकड़ों को पेश करे। अफवाहों तथा अनुमानों का खण्डन तथ्यों से होना चाहिए।"

बाहरी गुण्डों की बात

यह कहा जाता है कि बंगाल प्रान्त के बाहर से आकर गुण्डों ने सारा दंगा किया। लेकिन बंगाल प्रान्तीय सरकार स्वयं स्वीकार करती है कि पूर्वी बंगाल का प्रदेश आने-जाने के लिए बहुत कष्ट-साध्य है और १५ दिन बाद भी उच्च अफसर वहां न जा सके। तब बाहर के ये गुंडे वहां कैसे पहुंच गए? क्या गुण्डों के पास सरकार से भी ज्यादा साधन थे? बाहर के गुण्डे दैनिक जीवन की सामग्री—अन्न, वस्त्र आदि नहीं लूटते। वे अपने साथ पशुओं को भी नहीं हांक ले जाते। इसके अतिरिक्त बाहरी गुण्डे बलात् धर्म-परिवर्तन तथा विवाहों में दिलचस्पी नहीं लेते। धर्म-परिवर्तन कराने के लिये वे अपने साथ पीर तथा मौलवी नहीं ले जाते। मुसलमानों को संगठित करने में बाहर के कुछ व्यक्तियों का हाथ रहा हो लेकिन मुसलमानों के साथ स्थानीय नेता थे। इस बात के मेरे पास प्रमाण भी मौजूद हैं। लीगी अब तक हिंसा व घृणा का जो प्रचार करते

आई है उसने भी मुसलमानों को हिन्दुओं के विरुद्ध आम जिहाद बोलने के लिए तैयार किया। यदि वैद्य को ठीक दवा देनी है तो उसे पहले रोग का निदान करना चाहिए।

पूर्व-आयोजित कार्यक्रम

लेफ्टनेन्ट जनरल बूचर के वक्तव्य का उल्लेख करते हुए आचार्य कृपलानी ने "बूचर का बयान समाचार पत्रों में प्रकाशित होने के पूर्व उन्होंने पहिली संध्या को मुझसे कहा था कि उपद्रव गुण्डों ने किये और उनका कार्यक्रम पूर्व-निर्धारित था।" गुण्डे किसी एक विशेष जाति के नहीं होते। कलकत्ता तथा बम्बई जैसे बड़े शहरों में जहां कि साम्प्रदायिक तनातनी है, हिन्दू तथा मुसलमान दोनों जातियों के गुण्डे बेजा लाभ उठाते हैं। लेकिन इस क्षेत्र में तो केवल मुसलमान गुण्डों की उपस्थिति जान पड़ती है। इसके अतिरिक्त गुण्डे प्रायः धर्मान्ध नहीं होते। बलात् धर्म-परिवर्तन तथा बलात् विवाहों की अपेक्षा वे नकदी तथा जेवर में दिलचस्पी रखते हैं। यह कल्पना करना बिलकुल बेहूदा है कि गांवों में हजारों गुण्डे हैं क्योंकि यह स्वीकार किया जाता है कि झुंडों के रूप में गांवों पर हमला किया गया।

एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है कि जनरल बूचर की यह पक्की राय है कि मुसलमानों ने हिन्दुओं के विरुद्ध सामूहिक जिहाद नही बोला है। इस मान्यता का जनरल बूचर ने एकमात्र कारण यह बताया है कि बड़े शहरों में इस प्रकार की दुर्घटनाएं नहीं हुई। लेकिन वे यह भूल जाते हैं कि बड़े शहरों में हिन्दुओं तथा मुसलमानों की जनसंख्या में अधिक अन्तर नहीं। इसके अतिरिक्त वहां हिन्दू अधिक संगठित तथा साधन-सम्पन्न होते हैं। कलकत्ता की घटनाओं से साबित होगया कि दोनों जातियां तबाही मचा सकती हैं।

लेकिन जब मैं आम विद्रोह की बात कहता हूँ तो इसका यह अर्थ नहीं कि प्रत्येक मुसलमान ने उसमें भाग लिया। भले ही बड़े शहरों में सामूहिक रूप से मुसलमानों ने हिन्दुओं पर धावा नहीं किया किन्तु नोआखाली तथा दूसरे स्थानों में उन्होंने किया। सामूहिक रूप से धर्म-परिवर्तन तथा बलात् विवाह तब तक नहीं हो सकते जब तक कि जाति का सक्रिय या कम से कम निष्क्रिय समर्थन प्राप्त न हो। जनरल बूचर की बात को मानने के लिए मैं इसलिए भी तैयार नहीं हूँ क्योंकि वे पीड़ित क्षेत्रों के भीतरी भागों में नहीं गये। मुझे आशा है कि जब वे अन्दर जाकर अपनी आंखों से सब बातों को देखेंगे तो अपनी राय बदल लेंगे।

मृत्यु-संख्या

मृत्यु-संख्या के बारे में प्रश्न किये जाने पर आचार्य कृपलानी ने कहा, इस सम्बन्ध में तरह-तरह के अनुमान हैं। एक ही स्थान में जूनियर अधिकारी ने मुझे बताया कि १०० मारे गये, लेकिन उच्च अधिकारी ने ५०० संख्या बताई। इसी तरह मुस्लिम लीग ने मृत व्यक्तियों की संख्या १०० और ऊंचे अधिकारी ने ५०० बताई। लेकिन कोई लीगी नेता २६ अक्तूबर तक पीड़ित-क्षेत्र को देखने नहीं गया।

प्रत्येक हिन्दू मुसलमान बनाया गया

मैं दो इलाकों में गया और मैंने देखा कि वहां प्रत्येक हिन्दू मुसलमान बनाया गया है क्योंकि नहीं तो वहां वे लोग हिन्दुओं के रूप में नहीं रह सकते थे। लेकिन वे लोग अपने को मुसलमान नहीं मानते। निर्धन वर्ग के लोगों का कहना है कि वे भ्रष्ट

होगये हैं। वास्तव में वे अपनी सम्पत्ति के लिए नहीं बल्कि अपने मत-परिवर्तन के लिए रो रहे हैं। मैंने तथा मेरे साथियों ने उन्हें बहुत समझाया लेकिन इससे उन्हें धैर्य न बंधा।

पीड़ित क्षेत्रों में फौज रखी जाय

पीड़ितों की सहायता का उल्लेख करते हुए आचार्य कृपलानी ने कहा कि तात्कालिक आवश्यकता इस बात की है कि आश्रय-हीनों को फिर उनके गांवों में पहुंचाया जाय और यह तभी हो सकता है जबकि गांवों में सुरक्षा हो, वहां उनके रहने के लिए घर, खाने के लिए अन्न और पहनने के लिए कपड़े हो। इन लोगों को फौजी संरक्षता की जरूरत है क्योंकि उनका गैर फौजी शासकों तथा पुलिस पर कोई विश्वास नहीं। अतएव कम से कम तीन महीनों तक पीड़ित क्षेत्रों में फौज तैनात की जाय।

३०० लोगों के नाम ज्ञात हैं जिन्होंने उपद्रवों में व्यक्तिगत रूप से भाग लिया। उनको जल्दी गिरफ्तार किया जाना चाहिए तथा उनके विरुद्ध तुरन्त कार्रवाई होनी चाहिए। तभी जनता में विश्वास उत्पन्न हो सकता है।

दुर्भाग्य से फौज सीविल अधिकारियों के नियंत्रण में कार्य करती है जिसके कारण वह गिरफ्तारियां न कर सकी। इसका उदाहरण एक भूतपूर्व एम० एल० ए० है जो कि इस जिहाद का संचालन करता रहा किन्तु २४ अक्तूबर की सुबह तक वह गिर-फ्तार न किया गया। गिरफ्तारी के २४ घण्टे बाद ही उसके घर की तलाशी ली गई।

अपहृत लड़कियां

अपहृत लड़कियों को खोज कर उनकी रक्षा करने का कार्य काफी कठिन है। इस सम्बन्ध, में आचार्य कृपलानी ने एक

लड़की की घटना सुनाई जो कि जबर्दस्ती एक जमींदार के लड़के के साथ ब्याही गई थी। सूचना मिलने पर श्रीमती सुचेता कृपलानी ने एक अंग्रेज जिला मजिस्ट्रेट को कहा। उसने स्वयं जांच की। पहले पूछने पर लड़की ने कहा "मैंने स्वेच्छा से शादी की है।" लेकिन जब अलग ले जाकर आचार्य कृपलानी के दल के एक बंगाली सज्जन श्री सेन ने उससे कहा कि जिला मजिस्ट्रेट अंग्रेज है और उसकी तथा उसके पिता व चाचा की, जिनका धर्म-परिवर्तन किया गया था, सुरक्षा पर कोई आंच न आयगी तो उसने कहा कि उसकी शादी जबरन की गई है। इस पर उस लड़की को आचार्य कृपलानी के यहां लाया गया और उसकी रक्षा के लिए चार कांस्टेबल नियुक्त किये गये। लड़की का तथाकथित पति गिरफ्तार किया गया।

नोआखाली और त्रिपुरा के उपद्रव

पाकिस्तान समर्थकों के काले कारनामे

हिन्दुओं पर हुये अत्याचारों की रोमाँचकारी कहानी

—आचार्य कृपलानी

आचार्य कृपलानी ने कहा है कि हिन्दुओं से जबर्दस्ती लीग के लिए चन्दा वसूल किया गया उनके घरों को लूटा गया, आग लगाई गई, जबर्दस्ती इस्लाम कबूल करवाया गया और मुकाबला करने वालों को मार डाला गया। कहा गया है कि यह सब कलकत्ता के दंगों में मारे गए मुसलमानों का बदला है। आचार्य कृपलानी ने औरतों के मजहब बदलवाने, उनके साथ जबर्दस्ती शादी करने आदि की घटनाओं का भी जिक्र किया है।

कांग्रेस के अध्यक्ष आचार्य कृपलानी ने आज एक प्रेस कान्फ्रेंस में बताया कि चांदपुर और नोआखाली के भीतरी हिस्सों का दौरा करने के बाद मैं नीचे लिखे नतीजों पर पहुंचा हूँ, जो किसी भी निष्पक्ष न्यायालय के सामने स्थानीय गवाही के जरिये सिद्ध किये जा सकते हैं, बशर्ते की गवाहों को सुरक्षितता का आश्वासन दे दिया जाय।

(१) नोआखाली और त्रिपुरा जिले के हिन्दुओं पर आक्रमण की पहले से व्यवस्था और तैयारी की गई थी। इस आक्रमण की यदि मुस्लिम लीग ने प्रत्यक्ष योजना न की तो कम से कम वह जान बूझ कर अवश्य किया गया। वह लीग के प्रचार का प्रत्यक्ष नतीजा था। स्थानीय प्रमाणों से साबित होता है कि गांवों के प्रमुख लीगी नेताओं का उसमें काफी हाथ था।

(२) आने वाली घटनाओं की अधिकारियों को चेतावनी मिल चुकी थी। सम्बन्धित इलाको के प्रमुख हिन्दुओं ने पहले जबानी और बाद में लिखित चेतावनियां दीं।

(३) कुछ मुस्लिम कर्मचारियों के आक्रमण की तैयारियों की ओर आंखें मूंदी हुई रक्खीं। मुसलमानों में आम खयाल था कि यदि हिन्दुओं के खिलाफ कुछ किया गया तो सरकार कोई कार्रवाई नहीं करेगी।

(४) ढंग यह अपनाया गया कि मुसलमान सैकड़ों की और कुछ स्थानों में हजारों की संख्या में इकट्ठे होते और हिन्दू गांवों में या मिली जुली आबादी के गांवों में हिन्दू घरों पर जा धमकते। इस भीड़ के अपने नेता होते थे। ये पहले मुस्लिम लीग के दंगों के पीड़ितों के लिए चन्दा मांगते। यह जबर्दस्ती के चन्दे काफ़ी भारी होते और उनकी तादाद कभी १०,०००

रु० या इससे भी अधिक पहुंच जाती। चन्दा वसूल कर लेने के बाद भी हिन्दू सुरक्षित न थे। वही या एक और भीड़ बाद में घटनास्थल पर पहुंचती और हिन्दू मकानों को लूट लेती। लूटे हुए घर ज्यादातर जला दिए जाते। सिर्फ नकद, जेवर और अन्य कीमती चीजों को ही नहीं लूटा जाता, बल्कि गृहस्थी के काम की हर चीज जैसे अनाज, बर्तन कपड़े वगैरा भी लूटे गये। कई जगह लुटेरे मवेशियों को खुद हकाल ले गये। कभी कभी घर को लूटने के पहले घर वालों को इस्लाम कबूल करने के लिए कहा जाता। किन्तु धर्म बदलने पर भी लूट और आग से बचने की गारण्टी न थी।

(५) हमलावर मुस्लिम भीड़ के नारे मुस्लिम लीग के नारे थे, जैसे "लीग जिन्दाबाद" "पाकिस्तान जिन्दाबाद" "लड़ के लेंगे पाकिस्तान" "मार के लेंगे पाकिस्तान"।

हिन्दुओं को यह भी कहा गया कि हत्या, लूट और अग्निकाण्ड जो हो रहा है, वह कलकत्ता के दंगों में मारे गये मुसलमानों का बदला है। जिन्होंने मुकाबला किया, वे सब कत्ल कर दिये गये। लोगों को गोली से भी मारा गया, क्योंकि दंगइयों के पास बन्दूकें भी थीं। ये बन्दूकें या तो मुस्लिम जमींदारों की थीं या हिन्दुओं से चुराई या छीनी गई थीं।

कभी तो लोग उस समय भी मार डाले गये, जब कि उन्होंने कोई मुकाबला नहीं किया था।

थोड़े से वक्त में मारे गये लोगों की तादाद मालूम करना सम्भव न था। मेरा खयाल है कि सरकार ने इन आंकड़ों का पता नहीं लगाया है। एक अधिकारी ने मुझे निश्चित रूप से कहा कि सिर्फ १०० आदमी मारे गये हैं। एक अन्य बड़े अफ-

सर ने कहा कि मारे गये लोगों की संख्या ५०० के आस-पास है।

दुतिया परगना के एक इलाके में मेरी जांच से पता चला कि कम से कम ३०० मारे गये। जो बयान मुझे दिए गये हैं, उनमें अधिकतर उनके नाम दिये गये हैं। मुझे ऐसी घटनाओं के बयान मिले हैं, जिनमें एक परिवार के १० से लगाकर २० तक आदमी मारे गये। कुछ परिवारों के सब पुरुष मार डाले गये।

(६) लूट, अग्निदाह, हत्या और धर्म-परिवर्तन आदि कार्यों में हिस्सा लेने वाले पड़ौस के मुस्लिम गांवों के रहने वाले हैं। मिली-जुली आबादी के मुसलमानों ने भी इनमें हिस्सा लिया। अत्याचार पीड़ित उनमें से बहुतों को पहचान सकते हैं। उन्होंने नामों की लम्बी सूची दी है। बाहर के तो यदि हुए तो भी बहुत थोड़े लोग थे।

(७) लूट, अग्निकाण्ड और हत्या के बाद भी हिन्दू उस वक्त तक सुरक्षित न थे, जब तक कि वे इस्लाम कबूल नहीं कर लेते। हिन्दुओं को अपनी रक्षा करने के लिए एक साथ इस्लाम स्वीकार करना पड़ा। धर्म-परिवर्तन की निशानी के तौर पर उन्हें सफेद टोपियां दी गईं जो बस्ती के मुसलमान पहनते हैं। अक्सर यह टोपियां नई थीं और उन पर पाकिस्तान का नक्शा था और यह शब्द लिखे थे, 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' और 'लड़ के लेंगे पाकिस्तान'

हिन्दुओं को जुम्मा की नमाज में शामिल किया गया और उनसे कलमा और नमाज पढ़ाये गये। औरतों का भी धर्म-परिवर्तन किया गया, उनकी चूड़ियां तोड़ दी गईं और उनकी माथे की सिन्दूर मिटा दी गई। धर्म परिवर्तन की निशानी के

तौर पर उन्हें पीर द्वारा पवित्र किये हुए कपड़े को छूने के लिए कहा गया। उन्हें कलमा भी पढ़ना पड़ा।

हिन्दू मकानों में देवताओं की मूर्तियां नष्ट कर दी गई और उपद्रवग्रस्त इलाकों के सब हिन्दू मन्दिर लूट लिए गये।

(८) जबर्दस्ती शादियां करवाने की घटनायें भी हुई हैं। इस समय ऐसी शादियों की संख्या मालूम कर सकना असम्भव है। श्रीमती कृपलानी की विस्तृत रिपोर्ट के आधार पर नोआ-खाली के एक यूरोपियन मजिस्ट्रेट ने एक लड़की को बचाकर निकाला।

औरतों के भगाये जाने की घटनाएं भी हुई हैं, किन्तु मैं थोड़े से समय में उनकी निश्चित संख्या न मालूम कर सका।

(९) मैं बलात्कार की घटनाओं की जांच नहीं कर सका, जिसके कारण स्पष्ट हैं। किन्तु औरतों ने श्रीमती कृपलानी से बुरे बर्ताव की शिकायत की। उनके सुहाग की निशानी चूड़ियां तोड़ डाली गई और सिन्दूर की बिन्दियां मिटा दी गई। एक जगह आततायियों ने औरतों को जमीन पर गिरा दिया और अपने पावों की एडियों से सिन्दूर की बिन्दियों को मिटाया।

(१०) इन इलाकों में हिन्दू, चाहे उन्होंने धर्म परिवर्तन किया है अथवा नहीं, निरन्तर खतरे में रह रहे हैं।

(११) उपद्रवग्रस्त गांवों के रास्तों पर गश्ती दस्ते कड़ा पहरा देते हैं। कुछ उदाहरणों में नये धर्म-परिवर्तन किये लोगों को गांव से बाहर जाने और लौटने के आज्ञापत्र भी दिए गए हैं। मैंने ये आज्ञापत्र देखे हैं।

(१२) उपद्रवों के समय जो उपद्रवग्रस्त इलाकों से बाहर थे, अपने गांवों को नहीं जा पाये हैं। इसलिए उन्हें उन गांवों के अपने रिश्तेदारों की कोई खबर नहीं है।

(१३) बहुत से परिवारों के मर्द, औरत और बच्चे गायब हैं। उनको खोजने के कोई साधन नहीं हैं। देहाती डाकखाने बन्द पड़े हैं। लोग चिट्ठियां भेज या प्राप्त नहीं कर सकते। उन्हें पोस्टकार्ड लिफाफे नहीं मिलते।

(१४) दंगों में पुलिस ने कुछ नहीं किया। अब वह गश्त लगा रही है। पुलिस के आदमियों का कहना है कि उन्हें इस बात की हिमायत थी कि आत्म-रक्षा के अवसर के अलावा गोली न चलायें। उनको आत्म-रक्षा का सवाल कभी पैदा ही नहीं हुआ, क्योंकि उन्होंने दंगा करने वालों के काम में हस्तक्षेप ही नहीं किया।

मैं कह सकता हूँ कि २० तारीख तक अग्निकाण्ड होते रहे। मैंने चांदपुर और नोआखाली इलाकों में हवाई जहाज से १६ और २० ता० को मकानों को जलते देखा। इन अग्निकाण्डों को चीफ मिनिस्टर ने भी २० तारीख को देखा जो चटगांव से हमारे साथ वायुयान में उड़े थे। जिन इलाकों में मैं गया वे बर्बाद किये जा चुके थे और मैंने सिर्फ जले हुए घरों और निस्सहाय हिन्दू देहातियों को देखा। सब कुछ नष्ट हो जाने के कारण उनको न आश्रय है न अन्न और न कपड़ा।

मैंने खुद अधिकारियों से सुना कि नोआखाली इलाके में २५ अक्तूबर तक सिर्फ ५० गिरफ्तारियां की गई हैं।

अभी भी बहुत सी ऐसी हिन्दू बस्तियां हैं जिन पर मुसलमानों का पहरा है। ये लोग वहां से बाहर आने के लिये पुलिस या फौज की मदद चाहते हैं।

क्या उपद्रवग्रस्त इलाकों में पुलिस और फौज की तादाद काफी हैं। इस प्रश्न के उत्तर में आचार्य कृपलानी ने कहा कि वह काफ प्रतीत नहीं होती।

लोगों के सामने तात्कालिक काम यह है कि जो हिन्दू गांवों से आना चाहते हैं उन्हें बाहर लाया जाय या फौज फौरन ऐसी कार्रवाई करे जिससे यह भरोसा हो सके कि शोचनीय घटनाओं की पुनरावृत्ति न होगी।

आचार्य कृपलानी जी ने एक और प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा कि पूर्वी बंगाल की घटनाओं के पीछे आर्थिक कारण न थे। एक भी धनिक मुसलमान का घर नहीं लूटा गया। मुझे तो यह सब शुद्ध साम्प्रदायिक और यकतर्फा प्रतीत होता।

नोआखाली और त्रिपुरा के शरणार्थियों की संख्या ४०-५० हजार के बीच है। उनकी हालत दयनीय है। अन्न कपड़े और दवा का अभाव है। कुछ जगह दस्तों की शिकायत पैदा हो गई है और हैजा फैलने का भी खतरा है।

नोआखाली की करुण कहानी

राष्ट्रपति कृपलानी के साथ किये गये दौरे के संस्मरण

(श्री पुरुषोत्तमदास टंडन)

कलकत्ते के हत्याकाण्ड के बाद अभी लोगों के आंसू सूखे नहीं थे कि अभागे बंगाल को नोआखाली के नरमेध ने आक्रांत कर दिया। नोआखाली और उसके आसपास के स्थानों में जो कुछ हुआ है उसकी तुलना हीनतम नाजियों की क्रूरताओं के साथ ही हो सकती है। मुझमें न तो इतनी योग्यता है और न शक्ति कि मैं ठीक शब्दों में उस बर्बरता का वर्णन कर सकूं। जिसका प्रदर्शन हत्यारों के झुण्डों ने नोआखाली और कहां-२ किया है। फिर भी चूंकि मैं उन लोगों से मिला हूँ, जिन्होंने गरीबों के घरों की जलती हुई लपटों को देखा है, इसलिए एक कोशिश करूंगा कि पूर्व बंगाल की घटनाओं का उल्लेख करूं।

राष्ट्रपति के साथ

जहां गुण्डों के गिरोहों ने लोगों की जान और माल की होली जलाई है, उन स्थानों का पर्यावलोकन करते समय मुझको राष्ट्रपति आचार्य कृपलानी, श्रीमती सुचेता कृपलानी और श्रीयुत शरत बोस के साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त था। जब हम हवाई जहाज से कलकत्ता पहुंचे तो नर-नारियों का समुदाय कुसुम मालाएँ लेकर राष्ट्रपति का स्वागत करने के लिए एकत्रित था। पर इस स्वागत की पृष्ठभूमि में करुणा के आंसू थे। लोग जानते थे कि वे राष्ट्रपति का स्वागत उस समय कर रहे हैं जब वह बंग देश के रोमांचकारी उत्पीड़न का अवलोकन करने के लिए आए हुये हैं।

ज्योंही राष्ट्रपति कृपालनी शरत बाबू के घर पहुंचे। उनको लोगों ने घेर लिया और भयावह कथानकों को सुनाने का तांता लग गया। राष्ट्रपति ने सब धैर्य के साथ सुना और कहा: "प्रिय भाइयो, मैं यहां आया ही इसलिए हूँ कि सब बातें सुनूं और स्वयं वास्तविकता का निरीक्षण करूं। आप विश्वास न खोइये और इस समय यथाशक्ति लोगों की मदद कीजिये।"

बंगाल नेताओं को पुकार रहा है

जब हम दमदम के हवाई अड्डे से गये तो हमारी मोटरकार में बंगाल की महिला एम० एल० ए० श्रीमती वीणादास भी थीं. जिन्होंने कई वर्ष हुए गवर्नर पर गोली चलाई थी और जो हाल ही में जेल से छूटी थीं। बातचीत के बीच उन्होंने कहा, "बंगाल समय पर आने के लिये राष्ट्रपति का कृतज्ञ है। नेताओं को चाहिये कि वे बंगाल आयें और हमको यह महसूस न होने दें कि हम इस प्रांत में बिना मां-बाप के बच्चे हैं। बंगाल अपने नेताओं को पुकार रहा है।"

कलकत्ते पर मृत्यु की छाया

जब हम कलकत्ता शहर पहुंचे तो हमने उसे सूना-सा पाया घातक चोटों के घाव अभी वहां मौजूद हैं। जब तक कि आवश्यकता से लाचार न हों, लोग अपने घरों से बाहर नहीं निकलते। जब वे सड़कों पर चलते हैं तो ऐसा भान होता है कि मृत्यु कहीं निकट पार्श्व में ही है। कलकत्ता की घटनाओं ने हजारों लोगों की जान तो ली ही, पर इससे भी अधिक उसका हानिकारक परिणाम यह हुआ कि मानव की आत्मा घायल हो गई। कलकत्ते के लोग जीवित हैं पर उन्हें हमेशा मौत का डर लगा रहता है। वे स्वतन्त्रता से सांस नहीं ले पाते। उनका अमन का भाव बिल्कुल खो गया है। मौत उनको हमेशा अपनी याद दिलाती रहती है।

गवर्नर से मिलने में अड़चनें

अक्तूबर १६ को हम हवाई जहाज के अड्डे पर गये और गवर्नर से मिलने के लिये फेनी जाना चाहा, पर हमसे कहा गया कि फेनी में हवाई जहाज के उतरने के स्थल पर पानी भरा हुआ है और कोई वहां उतर नहीं सकता। हमने इसपर भी अपनी किस्मत आजमानी चाही पर हमारे ऐसा करने पर करीब करीब पाबन्दी जैसी लगादी गई। अतः हमको कोमिल्ला जाना पड़ा।

हम जब अपने दौरे पर जाने लगे तो खतरा और इसी तरह की कई बातें हमारे कानों में डाली गईं और घुमा फिराकर ऐसी कोशिश की गई कि राष्ट्रपति अपना इरादा उन स्थानों में जाने का छोड़ दें जहां गड़बड़ हो रही थी। पर इन सबका कुछ असर न हुआ।

आग-धुंआं और निराशा

अपने हवाई जहाज से हमने देखा कि लाल लाल लपटें आसमान को उड़ रही हैं. मकान भस्म हो रहे हैं और लोग इधर-उधर भाग रहे हैं। हमको बड़ा खेद हुआ और हमने चाहा कि वहा उतरा जाय जहां गांव धुएं से घिरा हुआ था पर यान संचालक ने कहा कि ऐसा करना असम्भव है।

शाम को हम कोमिल्ला पहुंचे। कई लोगों ने हमको घेर लिया और पूछा कि कांग्रेस उनके लिए क्या करने जा रही है? वेदना, असहायता और निराशा की उन मूर्तियों ने चाहा कि उनको किसी तरह का आश्वासन दिया जाय कि उनका कुछ न बिगाड़ा जायेगा। एक व्यक्ति बोला, "हममें से कोई यह नहीं जानता कि कल सुबह सो कर कौन जीवित उठेगा; क्या आप हमको नहीं बचा सकते?"

पेड़ पर चढ़ा और गिर पड़ा

हम शरणार्थियों के कैम्पों में गये। करीब तीन हजार नर-नारी और बच्चे वहां मौजूद थे। कई लोगों से हमने लोम-हर्षक वारदातें सुनी। मुझसे कहा गया कि नोआखाली में एक आदमी अपनी जान बचाने के लिए पेड़ पर चढ़ गया और जब तक उसमें शक्ति रही भुखा, प्यासा लटका रहा। आखिर वह थक कर गिर पड़ा। करीब करीब वह बेहोश होकर पड़ा हुआ था। कि उसको गिरते हुए देखकर कुछ हत्यारे वहां पहुंचे ताकि उसको जीवन बचाने के अपराध की सजा दे सकें। उनके हथियारों ने उस व्यक्ति के टुकड़े टुकड़े कर दिये और इस प्रकार बेहोश होने के कारण वह उस पीड़ा से बच गया जो उसे होश में आने पर उठानी पड़ती।

गर्भवती शोक से मर गई

दूसरी घटना एक गर्भवती स्त्री के बारे में सुनी। उसके बड़े लड़के को बदमाशों ने काट कर टुकड़े टुकड़े कर दिया था और वह उसकी एक बांह हाथ में लेकर भाग रही थी। कुछ कदम जाने पर अपने मरे हुए लड़के की बांह को अपने हाथ में देख कर उसको ऐसा धक्का लगा कि जमीन गिर पड़ी और मर गई।

भागे हुए लोगों के बीच में

राष्ट्रपति कृपलानी, उनकी पत्नी और श्रीयुत शरत बोस भागे हुए लोगों के पास गये। इन त्रस्त लोगों के लिए सुचेता देवी एक दयामयी बहन के समान थीं, बंगाल की कन्या होने के कारण उनकी वेदना को समझ सकती थीं और उनको उन्हीं की भाषा में सान्त्वना देती थीं। इस महान परीक्षा के समय लोगों को उन्होंने धैर्य और विश्वास न खोने की राय दी।

अत्याचार की पराकाष्ठा

सैकड़ों मनुष्य जंगल में भाग गये थे। एक भागे हुए व्यक्ति ने बताया कि अजीब-अजीब तरह के हथियार लोगों को मारने के लिए काम में लाये गये। उसने कहा, "अधिकारियों को वक्त पर मदद के लिए कहा गया था पर वे आये ही नहीं। हम लोग रक्षा के लिए चिल्लाते थे। पर पुलिस की जगह पर लुटेरों के झुंड आये जिन्होंने आदमियों का संहार किया, बहिनों के साथ भाइयों के सामने बलात्कार किया, माताओं के साथ लड़कों के सामने उनको नंगा किया और एक दूसरे के मुंह में पेशाब करने के लिए बाध्य किया। उनको जमीन पर चित करके लिटा दिया जाता था और उनको हलाल किया जाता। फिर हाथों को

खून में रंग कर नारियों के मुंह पर पोता जाता था और उसके बाद उनके साथ फिर बलात्कार किया जाता था।"

हत्याकाण्ड योजनानुसार

इस हत्याकाण्ड में एक योजना थी। लीग के नाम पर हजारों आदमिमों की सभा होती थी। भाषणों में अत्याचार की योजना वर्णन की जाती थी और सभा विसर्जन होने पर लोग भेड़ियों की तरह जाकर चारों ओर टूट पड़ते थे। एक भूतपूर्व एम० एल० ए० गुलाम बाबर निरन्तर लोगों में उत्तेजना फैलाता रहा। अफसरों ने जान-बूझ कर भी उसको मुद्दत तक नहीं पकड़ा।

गवर्नर चैन से बैठा रहा

पर इतना सब होने पर भी गवर्नर दार्जिलिंग में चैन से बैठा रहा। उसको अपनी आवाज सुनाने के लिए हमें उसकी बड़ी तलाश करनी पड़ी। अफसर लोग हमको ठीक नहीं बताते थे कि गवर्नर से कहां मुलाकात होगी। आखिर २० तारीख हम उससे चटगांव में मिल पाये। हमारी हर बात पर वह "ठीक है।" कहता था और उसका उत्तर था "सब ठीक हो जायेगा।" उसने और सुहरावर्दी ने परिस्थिति पर काबू पाने के लिए तो कुछ न किया। हां, जो कुछ ज्यादतियां हुईं उनको छोटा दिखलाने की कोशिश अवश्य की।

सुहरावर्दी हार पहनते रहे

सुहरावर्दी एक पत्थर दिल आदमी है। उसने मुझसे कहा कि केवल सौ आदमी मारे गये। उस समय "आनन्द बाजार पत्रिका" के सम्पादक श्री भट्टाचार्य ने उससे कहा, "क्या आप जानते हैं कि आप किस बारे में बोल रहे हैं?" सुहरावर्दी ने

उत्तर दिया "मेरे मित्र! तुम हर बात को बढ़ा कर कहते हो। मैं तुमसे एकान्त में बात करूंगा।

सम्पादक जी ने फौरन जवाब दिया "हजरत मुझसे न चलो। मैं आपको खूब पहचानता हूँ।

सुहरावर्दी से कहा गया कि गुण्डों को पकड़ कर फिर जमानत पर छोड़ दिया गया है। वह बोला, "मुझे अफसाने मत सुनाओ, यह नामुमकिन है।" हमने उससे कहा कि हमें चकमा देने की कोशिश मत कोजिए और इस बात के लिए ललकारा कि वह उसी वक्त कोमिल्ला के मजिस्ट्रेट को फोन करके पूछे कि हम झूठ बोल रहे हैं या सच। "ठीक है, ठीक है, मैं इस मामले में जांच करूंगा" कह कर बंगाल का प्रधान मन्त्री अपने गले का गजरा हिलाने लगे। जिसे चटगांव में गवर्नर की बीबी के नाम पर स्थापित अस्पताल में पहनाया गया था। उनको अस्पताल में माला पहिनने और इसी तरह की दूसरी खुराफातों के लिए वक्त था पर नोआखाली को फौजी मदद पहुंचाने की फुरसत न थी।

हिन्दुओं को मुसलमान बनाया गया

नोआखाली में हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के बाद टोपी पहिनाई जाती थी, जिनमें पाकिस्तान और लीग का झण्डा होता था, मैंने वह टोपी कोमिल्ला में देखी थी। सुहरावर्दी को मैंने यह किस्सा सुनाया तो बोला, "अरे यह भी कोई बात है! कहीं टोपी पहनने से किसी का धर्म बदलता है।" मैंने कहा:— "पर इससे लोगों की मंशा का पता लगता है, आप समझना नहीं चाहते कि इसकी जड़ में क्या है।" पर उस पर इसका कोई असर न हुआ।

प्रधान मन्त्री की बहानेबाजी

सुहरावर्दी हर वारदात के नये माने निकाल लेता था। सैकड़ों मकान तोड़ दिए गए तो वह बोला, "यह हिन्दुओं की करतूत है जो घर छोड़ने के पहले अपने माल को छिपा कर बचाने के लिए खुद ही अपने मकान तोड़ गए।

मुझे एक मजिस्ट्रेट मिला जो बहुत घबराया था। कि उसकी जान खतरे में है और उसने बताया कि उसकी अपनी रक्षा करने लायक तक पुलिस की संख्या नहीं है और बाकी पुलिस या फौजी मदद सरकार मांगने पर भी नहीं भेजती।

जब हम चटगांव से वापिस आये तो सुहरावर्दी हमारे हवाई जहाज में था। रामगंज, फरीदपुर, चांदपुर आदि जगहों में हमने मकान जलते हुए देखे और सुहरावर्दी का ध्यान आकर्षित किया। वह बोला, "हां कुछ मकान जल रहे हैं पर वहां आदमी नहीं हैं।" अगर आदमी थे भी तो दीखते कैसे ?

राष्ट्रपति का नारा "बढ़े चलो"

शाम को हम कलकत्ता वापस आये। दूसरे ही दिन आचार्य कृपलानी और उनकी पत्नी ने फिर उड़ कर अन्दर के हल्कों में जाने की ठानी। मुझे आश्चर्य है कि इस दुबले-पतले व्यक्ति के अन्दर कितनी स्फूर्ति भरी हुई है। चार दिन के लगातार उड़ने से हम थके हुए थे पर उनका नारा था 'बढ़े चलो।'

उस यात्रा में सुचेता देवी ने उनकी बहुत मदद की। जब हवाई जहाज २१ अक्तूबर कलकत्ता पहुंचा तो मुझे बताया गया कि आगाही के खिलाफ कृपलानी जी चांदपुर आदि स्थानों के लिये गये हैं।

बंगाल बड़े खतरे में है

बंगाल इस समय एक दुर्दशा से गुजर रहा है पर मुझे

अन्देशा है कि सामने एक भयंकर खतरा है जो बंगाल को खून का समुद्र बना दे।

वहां के नौजवानों को नोआखाली के हत्याकाण्ड से बड़ा भारी धक्का पहुंचा है। सैकड़ों युवक इस समय नोआखाली जाने की इजाजत चाहते हैं ताकि हत्यारों के सामने उदाहरण पेश करें। कांग्रेस उनको शान्ति और अहिंसा के महान अस्त्रों से रोके हुए हैं। पर मैंने उनके चेहरों पर भयंकर अशान्ति और चिन्ता के चिन्ह देखे हैं। वे राष्ट्रपति के पास सलाह मांगने आये और अपने दबे हुए हृदय के उद्गारों को उनके सामने उभाड़ा। राष्ट्रपति ने उनको धीरज रखने और शान्त रहने की राय दी। पर मुझे अन्देशा है कि उनके धैर्य पर बड़ा भारी बोझ पड़ रहा है और वह खात्मे के करीब पहुंच गया है। उनकी असहायता उनको बेचैन कर रही है और वे दुःखी हैं। अगर उनको और भड़काया जायेगा तो वे शायद अहिंसा और शान्ति का पाठ भूल जांय और उन कसाइयों पर भयंकर धावा बोल दें जिन्होंने वन्देमातरम् के देश को बूचड़खाना बना दिया है। यह खतरे का झण्डा है, यह दीवार पर भयंकर लेख है, यह बड़ी आगाही। हर तबके के नेता इस आगाही को सुनें और दीवाल की लिखावट पढ़ें। अगर वे यह चाहते हैं कि बंगाल रक्त का समुद्र न बने, हर एक को चाहिए कि बंगाल को बचाने के लिए जी तोड़ कोशिश करे। बंगाल बड़े खतरे में है।

बेगमगंज क्षेत्रमें नृशंस हत्याएं लूट व अग्निकाण्ड

(स्वामी त्र्यम्बकानन्द)

कलकत्ता, २१ अक्तूबर। १० अक्तूबर को बेगमगंज में जो नृशंस हत्याएं, लूटमार तथा अग्निकाण्ड हुए उनके बारे में

भारत सेवाश्रम संघ के स्वामी त्र्यम्बकानन्द ने आंखों देखा वर्णन किया है।

स्वामीजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि १० अक्तूबर को बेगमगँज के एक भूतपूर्व एम० एल० ए० ने स्थानीय बाजार में एक सभा बुलाई। रामगंज थाना के इंचार्ज भी वहां मौजूद थे। एम० एल० ए० ने सभा में उपस्थित १५००० व्यक्तियों को दूसरी जाति (हिन्दुओं) के विरुद्ध उभाड़ा। सभा समाप्त होते ही भीड़ ने बाजार को लूटना प्रारम्भ कर दिया और वह दूकानों में आग लगाने लगी। कुछ ही देर में सारा बाजार राख हो गया और उसके बाद गुण्डे कई दलों में विभक्त हो गये।

गुण्डों का एक दल स्थानीय जमींदार सुरेन्द्रकुमार बोस के यहां गया। उनके घर में आग लगादी सुरेन्द्र बाबू, उनकी परिवार के सदस्यों तथा उनके कर्मचारियों की नृशंस हत्या की गई तथा उनकी लाशों को आग में झोंक दिया गया। जमींदार के यहां करीब ४०० व्यक्ति जिनमें कई स्त्रियां तथा बच्चे भी थे, शरण लेने आये थे। उनको भी गुण्डों ने मौत के घाट उतार दिया और आसपास के कई अन्य गांवों को जला डाला।

कत्लेआम तथा लूट

गुण्डों का एक और गिरोह एक पड़ौसी गांव को चला और उसने वहां बाजार को लूटा तथा आग लगाई। अपने इस विनाश कार्य के साथ उसने कितने ही ग्रामीणों को मौत के घाट उतारा। इनमें बहुत सी स्त्रियां तथा बच्चे थे। ग्रामीणों के घरों तथा उनकी सम्पत्ति को नष्ट किया गया। कुछ जगहों में गुण्डों ने धर्म परिवर्तन, अपहरण तथा जबर्दस्ती दूसरों से विवाह कराने के बाद ही जान बख्शी।

रायसाहब राजेन्द्रलाल राय की हत्या

स्वामीजी ने आगे चलकर बताया कि गुण्डों का तीसरा दल नोआखाली जिला वकील संघ के अध्यक्ष रायसाहब राजेन्द्रलाल राय के घर की ओर दौड़ा। यहां स्थानीय जनता ने गुण्डों का प्रतिरोध किया और वे रास्ते में निरपराध व्यक्तियों के घरों को लूटते व आग लगाते हुए लौट गये। इस बीच रायसाहब ने एक सन्देश वाहक के मार्फत बेगमगंज थाना को मदद देने की प्रार्थना की।

लेकिन दूसरे दिन करीब आठ बजे सुबह गुण्डों ने रायसाहब के घर पर चारों ओर से हमला बोल दिया। इस समय मैं भी घर पर था। यद्यपि हम लोग असहाय थे किन्तु हमने गुण्डों के तीन आक्रमण विफल कर दिये। लेकिन चौथी बार गुण्डे सफल हो गये। क्योंकि एम० एल० ए० तथा उसके साथियों के पास बन्दूकें थीं। उत्तेजित भीड़ ने घर में घुसकर रायसाहब तथा उनके परिवार के लोगों को मार डाला।

आधी रात में नदी पार की

मैं किसी तरह भाग निकला था ताकि कुछ आदमियों को लेकर गुण्डों का मुकाबला करूं। लेकिन मैंने देखा कि घर जलकर खाक हो गया है। मैंने फिर वहां से चलकर आधी रात के बाद नदी पार की। तब जोरों से वर्षा हो रही थी। उत्तेजित गुण्डे मेरा पीछा कर रहे थे। लेकिन मैं धान के खेतों तथा जंगलों से होता हुआ अगले दिन गन्तव्य स्थान पर पहुँच गया। रामगंज थाना के आफिसर इंचार्ज को मैंने सारी घटना सुनाई और पीड़ित क्षेत्र में जनता की रक्षा के लिये वहां जाने

को कहा। रामगंज से मैं पुलिस की संरक्षता में नोआखाली पहुँचा और मैंने पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट को सब बातें सुनाईं।

त्रिपुरा रियासत के सूचना विभाग के अफसर तार द्वारा सूचित करते हैं कि त्रिपुरा रियासत की राजधानी अगरतला में छः हजार से अधिक शरणार्थी हैं तथा केलोनिया और सोनेमुरी में शरणार्थियों की संख्या काफी है। उन्होंने अपने एक १६ अक्तूबर के सन्देश-पत्र में बताया कि अखौरा स्टेशन से बहुत अधिक संख्या में शरणार्थी आ रहे हैं, जिनमें स्त्रियां तथा बच्चों की संख्या अधिक है। इनकी दशा दयनीय है, जिनके तन पर न ठीक तरह से कपड़े हैं तथा न उन्हें भोजन ही मिलता है। त्रिपुरा सरकार सहायता कार्य के लिए भरसक कार्रवाई कर रही है। प्रधान मन्त्री ने एक स्थानीय सहायता, समिति इस कार्य के लिए आयोजित की है, इस समिति ने तीन सहायता केन्द्र स्थापित किए हैं। अभी और केन्द्र की आवश्यकता है।

शरणार्थियों पर बीती कथा बड़ी दुःख भरी है। इनमें से बहुत से लोग बुखार, पेचिस, इत्यादि रोगों से पीड़ित हैं। रोग फैलने की आशा है। यद्यपि त्रिपुरा सरकार ने चावलों को कन्ट्रोल भाव पर देने की व्यवस्था की है, पर फिर भी आवश्यक सामग्रियों का मूल्य बढ़ गया है। सहायता समिति ने जनता से सहायता देने की अपील की है।

नोआखाली जिले से शरणार्थियों का प्रथम जत्था तिनसुकिया में कल आया। रेलवे ने उन्हें विशेष डिब्बे में भेजने की व्यवस्था की। एक शरणार्थी ने बताया कि उनकी संख्या ७०० थी जिनमें स्त्रियां और बच्चे भी शामिल हैं। सहायता कार्य-कर्ताओं ने ३०० शरणार्थियों के लिए गंगासागर स्टेशन

पर ठहरने की व्यवस्था की। कोमिल्ला, आखोरा तथा अगरतला के सहायता शिविरों में कोई स्थान नहीं था। लगभग १०० शरणार्थी गोहाटी भेजे गये, तथा कुछ शरणार्थियों को लमाडिंग और तिनसुकिया के स्टेशनों के बीच ठहराया गया।

डिबरूगढ़ का समाचार है कि वहां के मारवाड़ियों ने शरणार्थियों की सहायता के लिये व्यवस्था करना, तथा सेना द्वारा रिक्त किये गये मकानों में उन्हें ठहराने की व्यवस्था करने की इच्छा प्रकट की।

'हिन्दुस्तान नेशनल गार्ड'

हिन्दुओं की रक्षा के लिए नवयुवक संगठनः डा० मुखर्जी की अपील

अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के अध्यक्ष डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने आज यह घोषित किया कि "इस प्रांत में हिन्दुओं के अस्तित्व को ही खतरा उत्पन हो गया है अतएव ऐसे दुसंगठित तथा अनुशासनपूर्ण युवकों के दल की आवश्यकता है जो निर्भयता से अपने अधिकारों तथा हितों की रक्षा कर सके और साथ ही स्त्रियों की इज्जत बचा सकें। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए 'हिन्दुस्तान नैशनल गार्ड' (हिन्दुस्तान राष्ट्रीय संरक्षक) दल नामक संस्था की स्थापना के लिये कदम उठाया जा रहा है।"

डा० मुखर्जी ने आगे चल कर कहा "मैं सब जातियों तथा वर्गों के हिन्दुओं से अपील करता हूँ कि वे इस संगठन में शरीक हो और इस महासंकट की घड़ी में संयुक्त होकर खड़े रहें। यद्यपि हमारा कर्त्तव्य निर्भयता से अपने अधिकारों तथा अखंड भारत की पूर्ण स्वतंत्रता के लिए लड़ना होगा किन्तु हम जनता के विभिन्न वर्गों में शांति तथा सद्भावना कायम रखने

के लिए पूरी कोशिश करेंगे। सीधे कलकत्ता से यह संगठन अपना कार्य प्रारम्भ करेगा। किन्तु मुझे आशा है कि इस संगठन का विस्तार बंगाल के प्रत्येक शहर तथा गांव में हो जायगा। वास्तव में यह संगठन भारत के दूसरे भागों में भी फैल सकता है।

हिन्दू गुलाम नहीं रह सकते

"इस बड़े प्रांत में रहने वाले तीन करोड़ हिन्दू दासता के जीवन को वरण नही करेंगे। वे अपने को नेश्त-नाबूद नहीं होने देंगे। चाहे भविष्य कितना ही अंधकार पूर्ण क्यों न दिखाई दे, हम अपनी इस जन्मभूमि में जीवित रहेंगे। आज सम्पूर्ण हिन्दुओं के संगठन की अविलम्ब आवश्यकता है।

बंगाल में साम्प्रदायिक समाचारों पर पाबंदी

प्रेस परामर्शदायी समिति को दी गई सुविधा भी वापस लेली गई

कलकत्ता, ३१ अक्तूबर। करीब एक मास पूर्व बंगाल सरकार ने बंगाल में साम्प्रदायिक दंगों सम्बन्धी समाचारों पर कतिपय प्रतिबन्ध लगाये थे और इस सम्बन्ध में प्रेस परामर्शदात्री समिति को यह छूट दी थी कि वह साम्प्रदायिक दंगों की खबरों को समाचार पत्रों को प्रकाशनार्थ दे सकती है। लेकिन आज की तारीख के कलकत्ता गजट के असाधारण अंक में एक नया हुक्म प्रकाशित हुआ है जिसके अनुसार २६ सितम्बर १६४६ को प्रेस परामर्शदात्री समिति को दी गई स्वतंत्रता वापस ले ली गई है।

इस सम्बन्ध में बंगाल प्रान्तीय सरकार ने कहा है कि नोआखाली तथा त्रिपुरा में हाल में जो दंगे हुए हैं उनके बारे में प्रेस-परामर्शदात्री समिति ने समाचार पत्रों को अतिरंजित तथा गलत विवरण दिये हैं तथा इस प्रकार के वक्तव्य प्रकाशनार्थ

स्वीकृत किये हैं जिनसे भय तथा आतंक फैलता है और एक जाति के लोगों की भावना दूसरी जाति के लोगों के विरुद्ध उभड़ती है।

बंगाल सरकार के हुक्म के अनुसार वक्तव्य, विज्ञापन, समाचार, सम्पादकीय टिप्पणी, चित्र, कार्टून आदि के रूप में भारत के किसी स्थान के साम्प्रदायिक दंगे का विवरण बंगाल में इस तरह प्रकाशित नहीं हो सकता कि जिससे यह बोध हो कि किस खास स्थान में झगड़ा हुआ था, किसी जाति या अमुक व्यक्ति पर कैसे हमला हुआ, वह घायल हुआ या मरा। इस प्रकार की घटनाओं के बारे में कोई खरीते बंगाल में न प्रकाशित किये जा सकेंगे, न छापे जा सकेंगे और न वितरित किये जा सकेंगे।

इसके अतिरिक्त समाचार पत्रों का ध्यान बंगाल स्पेशल पावर्स आर्डिनेन्स (१९४६ के आर्डिनेन्स नं० ६) की ओर भी आकर्षित किया गया है। इसमें कहा गया है कि जनता में किसी तरह भय या आतंक न फैल जाय। इस सम्बन्ध में आपत्तिजनक विवरण के प्रकाशन पर ५ वर्ष की कैद तथा जुर्माने की सजा हो सकती है।

गांधीजी अनशन करके हिन्दुओं की सबसे बड़ी अपसेवा करेंगे

डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी

कलकत्ता, ६ नवम्बर। अखिल-भारतीय हिन्दू महासभा के अध्यक्ष डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने एक वक्तव्य में कहा है—

मेरा विश्वास है कि मैं बंगाल के अधिकांश हिन्दुओं का मत व्यक्त करता हूँ, जब कि मैं यह कहता हूँ कि यदि गांधी

जी ने अपने प्रस्तावित आमरण अनशन का विचार न त्यागा, तो वे स्थिति को न केवल और भी विषम बनाने में सहायक होंगे, इस संकटकाल में हिन्दुओं की सबसे बड़ी सम्भावित अप-सेवा भी कर डालेंगे।

वह बंगाल में हमारी मदद के लिये आये थे। उन्हें स्थिति को और विषम बनाने का हक नहीं है। पिछले तीन महीनों में बंगाल के हिन्दुओं को जो बे मिसाल मुसीबतें उठानी पड़ी हैं, उनके जान-माल का जो भारी नुकसान हुआ है और उनकी जो बेइज्जती की गई है, वह सब एक राजनीतिक पार्टी की आक्रमणात्मक विचार धारा के कारण हुआ, जिसका स्वयं प्रान्तीय सरकार भी बेशर्मी से समर्थन करती रही है। ये वे हैं और अकेले वही हैं जिन पर साम्प्रदायिकता के उस भयानक कांड की मुख्य जिम्मेवारी होनी चाहिये, जो आज हिन्दुस्तान के अन्य हिस्सों में हो रहे हैं। जहां कहीं किसी निर्दोष व्यक्ति की जान जाये, उस पर खेद प्रकट किया जाना चाहिये, पर यह आश्चर्य की बात है कि नोआखाली में अल्पसंख्यकों पर किये गये दुःखद और भयानक दमन व अत्याचार का हिन्दु-स्तान के सभी हिस्सों में बहुत से स्त्री-पुरुषों द्वारा समर्थन किया जा रहा है। यह प्रश्न केवल बंगाल प्रान्त का ही नहीं है, बल्कि हिन्दुस्तान भर के हिन्दुओं को इस पर ध्यानपूर्वक विचार करना चाहिये। सबसे बड़ी आश्चर्य की बात अन्तःकालीन सरकार की अकर्मण्यता रही है। वस्तुतः यदि अन्तः कालीन सरकार के सदस्यों ने, जिनमें से कुछ अब खुले तौर पर बिहार में आकाश से बम-वर्षा की धमकियां दे रहे हैं, अपनी इन धमकियों और कार्रवाइयों का उपयोग गत अगस्त और अक्टू-बर में बंगाल में किया होता, तो हिन्दुस्तान में हुई अमानवीय

घटनाओं को रोकने में बहुत कुछ सफल हो जाते। मैं तो कहूँगा कि गांधीजी का अनशन इस समय का बेकार हथियार है और यह स्थिति को विषमतर ही बनाने में मददगार होगा।

बिहार सरकार को प्रान्त की स्थिति सुधारने के लिये पर्याप्त समर्थ होना चाहिये। तथापि, बिहार श्री जिन्ना और उनके साथियों की आंखें खोल देगा। कल ही, केन्द्रीय सरकार में उनके एक नामजद व्यक्ति ने हिन्दुस्तान के ३० करोड़ हिन्दुओं को यह सलाह दी थी कि वे इस्लाम ग्रहण करलें और इस प्रकार साम्प्रदायिक समस्या को तुरन्त हल होने दें। उन्हें यह अनुभव कर लेना चाहिये कि उनकी यह चालें अब नहीं चल सकेंगी और उनकी किसी एक क्षेत्र में की गई भ्रष्ट कार्रवाहियां एक दूसरे क्षेत्र में भयानक प्रतिक्रिया उत्पन्न कर सकती हैं। बंगाल में उन्होंने अब तक जो पागलपन किया और खतरनाक खेल खेला, वह बिहार में भयानक प्रतिक्रिया उत्पन्न कर चुकी है। यदि उन्होंने शीघ्र ही अपनी गलतियों को अनुभव नहीं किया, तो वे स्वयं अपने लक्ष्य का नुकसान कर बैठेंगे। जब वे इस बात को अनुभव कर लेंगे तो वे हिन्दुस्तान में ब्रिटिश साम्राज्य-वाद के अन्तिम अवशेषों से अपने को मुक्त कर लेंगे और दो बड़ी जातियों में शीघ्र ही अच्छे सम्बन्ध कायम करने में मदद-गार होंगे और देश के प्रत्येक हिस्से में शान्ति व व्यवस्था कायम कर सकेंगे।

हिन्दू आत्मरक्षा के लिए संगठित हों

(महामना मालवीय जी)

बनारस १ नवम्बर। मैं महसूस करता हूं कि मानवीयता खतरे में हैं। हिन्दू संस्कृति तथा धर्म को खतरा है। अब समय है जब कि हिन्दुओं को एक होकर आत्म-रक्षा का और अपने आपको प्रकट करने का प्रबन्ध करना होगा। कई वर्षो तक हिन्दुओं ने हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए काम किया। आज भी वे सहयोग करने को तथा सहिष्णुता दिखाने को तैयार हैं, मगर खेद है कि उनकी सहिष्णुता को अधिकांश मुसलमान कमजोरी समझते हैं और सहयोग के बदले सहयोग नहीं करते।" ये हैं वे शब्द जो देश में होने वाले दंगों के बारे में वक्तव्य प्रकाशित करते हुए महामना मालवीयजी ने कहे हैं।

मैं असहिष्णुता की भावना से प्रेरित होकर नहीं, अपितु काफी सोचने के बाद यह वक्तव्य प्रकाशित कर रहा हूँ। मैं यह महसूस करता हूँ कि यदि हिन्दुओं ने अपने आपको प्रकट किया तो हिन्दू मुस्लिम समस्या सदैव संकटपूर्ण बनी रहेगी।

हिन्दू नेताओं का फ़र्ज

"हिन्दू नेताओं का अपनी मातृभूमि तथा अपने धर्म, अपनी संस्कृति और अपने हिन्दू भाइयों के प्रकि भी फर्ज है। हिन्दू अपना संगठन करें, मिलकर काम करें, और ऐसे निस्वार्थ व देशभक्त कार्यकर्त्ता तैयार करें जिनका सेवा ही परम धर्म हो।

मुस्लिम नेताओं के भाषण

मुस्लिम नेताओं के जोशीले भाषणों, अज्ञात मुस्लिम संस्थाओं की ओर से निकाले पर्चो मुस्लिमलीग के राजनैतिक रुख, कलकत्ता के कत्ले आम, पूर्वी बंगाल की दुर्घटनाओं और देशव्यापी दंगों की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुये मैं देश के हिन्दुओं से अपील करूंगा कि इनसे एक हिन्दू का खून खौल उठना चाहिए और उसे अपनी जाति की रक्षा के लिये कुछ न कुछ करने का निश्चय कर लेना चाहिये।

नाजायज फायदा

"कई वर्षों से एक हिन्दू धर्मवादी होने की अपेक्षा राष्ट्रवादी ज्यादा हो रहा है। वह सत्य व अहिंसा का पालन कर रहा है। उसमें योद्धा वृत्ति नहीं रही। उसे झगड़ों और एक राष्ट्र के व्यक्तियों की आपसी लड़ाई से घृणा है। किन्तु मुसलमानों ने इससे नाजायज फायदा उठाया है। उनकी मांगें बढ़ चुकी हैं।

बहुसंख्यकों के हितों का खून

"पिछले कई वर्षों से हिन्दुओं का बहुत नुकसान हो रहा है। राष्ट्रीय संस्था कांग्रेस व साम्प्रदायिक संस्था मुस्लिम लीग को एक समान समझा जा रहा है। इस तरह एक बहु संख्यक जाति के अधिकारों का खून किया जा रहा है।

"हिन्दुओं का राजनैतिक हित कांग्रेस के हाथों में सुरक्षित है। लेकिन धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक मामलों में किसी हिन्दू संस्था को ही काम करना चाहिये। हिन्दुओं का मुसलमान हो जाना एकदम रुक जाना चाहिये, जो मुसलमान शुद्ध होना चाहें उन्हें हिन्दू धर्म में ले लिया जाय। हिन्दुओं को निर्भय हो कर फौजी शिक्षा लेनी चाहिये। आत्मरक्षा के लिए स्वयं सेवक दल संगठित करने चाहिये। आत्मरक्षा ही हिन्दुओं का मूलमंत्र होना चाहिये। जो लोग हिन्दुओं को शांति से नहीं रहने देना चाहते उनके साथ सहिष्णुता का व्यवहार नहीं किया जा सकता किसी भी दाम पर शांति स्थापित करने से हिन्दू-मुस्लिम समस्या हल न होगी।

अपने वक्तव्य के अन्त में मालवीय जी कहते हैं—"मैं अपने हिन्दू भाइयों से यह नहीं कहता कि जहां मुसलमान कमजोर हों अथवा अल्पमत में हों, वहां उन पर हमला कर दिया जाय। मैं तो उनसे यह कहता हूं कि जहां वे कमजोर हैं वहां वे अपने को ताकतवर बनाएँ और जहां वे अल्पमत में हों वहां वे अपनी रक्षा का पूरा प्रबन्ध करें।"

———